किलोल

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 07, जुलाई 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

माँ 8

मामा 9

गिनती 10

पंचतंत्र की कथाएँ- जैसे को तैसा 11

स्वर गीत 14

बेटी बन कर आयी हूँ 16

बाघ 18

माता-पिता की सेवा 20

पुनः फैला दो धरा पर हरियाली 21

बढ़ती जनसंख्या पर रोक 23

बाल पहेली 25

ख़ुश रहने का बहाना 26

बरसात 27

बारहखड़ी 28

जब बादर छाथे जी 30

कम मात्रा वाले वाक्य 31

गोल गप्पा 33

गिनती 35

मोबाइल 37

जामुन 39

माँ बाप को भूलना नहीं 41

बस्ते का बोझ 43

पानी बिन करलई 45

अगड़म-बगड़म चित्र बनाते 47

चंदा मामा 49

राखी 51
अमर शहीद पण्डित राजनारायण मिश्र 53
चलो पेड़ लगाते हैं 55
आम का आचार 57
चलो घूमने जाएँ 58
कुहू जब रात में जागी 59
जमीं तलाशना सीख 61
कर्म 63
माँ के आँचल में बसे सभी सुखो का सार 65
Rhymes 67
कोयल गीत सुनाती 68
स्वरगीत 70
छाता 73
यमराज घलो रोवत हे 74
पर्यावरण 76
पौधे का जीवन 78
मुझको भी दाना डालो 80
आमाराइट गीत 82
चल अकेला चल 84
विनती 85
किलोल 86
जीवन कौशल 88
मुझे जी लेने दो 90
विनती 92
ग़ज़ल 94
हमारे पौराणिक पात्र- आयुर्विज्ञानी वाग्भट्ट 95
कैसा दिन देख रहे 97

खेल डायरी 98
नदियाँ 100
टार्च बाबू 102
जिराफ 104
जल 106
चलो घूमने जाएँ 107
नाम है मेरा 108
डॉक्टर 110
बरखा आई 112
फ्रिज का पानी 113
अधूरी कहानी पूरी करो 114
बूढ़े बाबा की बाँसुरी 114
सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी 115
सीमा यादव पूरी की गई कहानी 116
युगांतर यादव,कक्षा पाँचवीं, सरस्वती शिशु मंदिर सेतगंगा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी 117
लोकेश्वरी कश्यप द्वारा पूरी की गई कहानी 118
संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 119
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी 120
मंजू साहू द्वारा पूरी की गई कहानी 121
शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी 122
अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 123
बबलू की उलझन 123
अच्छी संगत और अच्छी शिक्षा 125
बेटियाँ 127
जब देना हो दान 129
हमर जिला अट्ठाईस 131

रानी तितली 133
बरसात 135
तितली अब आज़ाद हुई 136
मास्क के रंग 137
वन है तो जल है, जल है तो जीवन 139
ज्ञान की पाती- विश्व इमोजी दिवस 141
एकता का बल 143
हरियागे धरती के अचरा 144
लालच के फल बुरा होथें 146
बूँदें यहाँ- वहाँ थीं बिखरी, किया इकट्ठा ले उलटी छतरी 147
चश्मा 148
नटखट नन्ही 149
मिटकू 151
मामा शहर घुमाएँगे 153
प्रेमचंद की वापसी 155
मौसम कुछ उदास है 159
काम बनाम आराम 161
बरसो रे बदरा 163
मुट्ठी में जीवन 165
दर्पण 169
गोबर की उपयोगिता 170
संभल कर चलना 171
जनसेवा को आतुर 173
मैं भी कर सकती हूँ 175
हमारे प्रेरणास्रोत- वीर अब्दुल हमीद 177
सड़क 180

कोरोना....181
जकल....182
साइकिल....184
सूरज भैया....186
सपने अपने अपने....188
साइकिल....190
पिल्ला पाला....191
समय बडा बलवान....193
वन में लॉकडाउन....195
पापा प्यारे....197
पहेलियाँ....199
विजयी....200
पार्क....201
फौजी....202
लुका-छिपी....204
मेल का खेल....206
सफलता की कहानी- प्रशिक्षक बनने की मेरी यात्रा....207
मदद....209
चित्र देख कर कहानी लिखो....211
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी....212
एक छोटी सी लड़की....212
प्रीतम कुमार साहू द्वारा भेजी गई कहानी....213
वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी....214
यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी....215
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र....216
भाखा जनऊला(छत्तीसगढ़ी वर्गपहेली)....217

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ.एम सुधीश, डॉ.सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ.शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, सालूजा ग्राफिक्स

प्यारे बच्चो एवं शिक्षक साथियो,

हमारी शिक्षा को राह दिखाने एवं आगे बढ़ाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो गयी है. क्या आपको मालूम है कि इस नीति में हम सबके समक्ष सबसे पहला लक्ष्य कौन सा है? इस नीति में हम सबको सन 2025 तक पढ़ना और बेसिक गणित करना आ जाना चाहिए. इन दोनों का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है.

सही वक्त में बेसिक चीजें यदि हम नहीं सीख सके तो आगे पूरे जीवन में सीखने में समस्या बनी रहती है. बेसिक पठन और गणित किसी इमारत की नींव के ही समान है. यदि नींव ही कमजोर हो तो क्या कोई इमारत ठीक से खडी रह सकती है? पुस्तकें पढ़ना दिमाग का भोजन है. जिस प्रकार हर उम्र में हमें भोजन करना बहुत आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार बचपन में ही हमें पढ़ना आ जाना चाहिए.

मुझे न केवल पूरी उम्मीद बल्कि पूरा विश्वास भी है कि किलोल के अंक आपको एवं बच्चों में पढने के कौशल एवं रुचि विकसित करने में अवश्य मददगार साबित होंगे. सभी से अनुरोध है कि अपने स्कूलों में इस बाल पत्रिका का सब्सक्रिप्शन अवश्य लें एवं इसमें अपना आलेख भी भेजें.

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17 बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित. संपादक डॉ. आलोक शुक्ला.

माँ

रचनाकार- सविता भूदीप, आठवीं, स्वामी विवेकानंद शास.उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल जगदलपुर

ओ मेरी प्यारी माँ,
ओ मेरी प्यारी माँ,

हर पल साथ रहती है मेरी माँ.
दुनिया में सबसे प्यारी है माँ.
सुख दुःख में साथ देती है माँ.
ममता का सागर होती है माँ.

भगवान का दूसरा रूप है माँ.
आदर सम्मान हमें सिखाती माँ.
अच्छी-अच्छी बात हमें बताती माँ.
प्यार सदा लुटाती है माँ.

मुसीबतें पास हमारे आती हैं,
चुटकी में माँ हल कर जाती है.
ओ मेरी प्यारी माँ,
ओ मेरी प्यारी माँ.

मामा

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

मामा आए मामा आए.
मामा क्या क्या लाए.
मामा लाए बाजा.
माया छाया आजा.
बाजा बाजे ढम ढम.
मामा नाचे धम धम.
चाचा गाए गाना.
हम सब खाए खाना.
है मामा को घर जाना.
अब मामी को भी लाना.
खेल खेल में बीता दिन.
सूना सूना घर, मामा के बिन.

गिनती

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

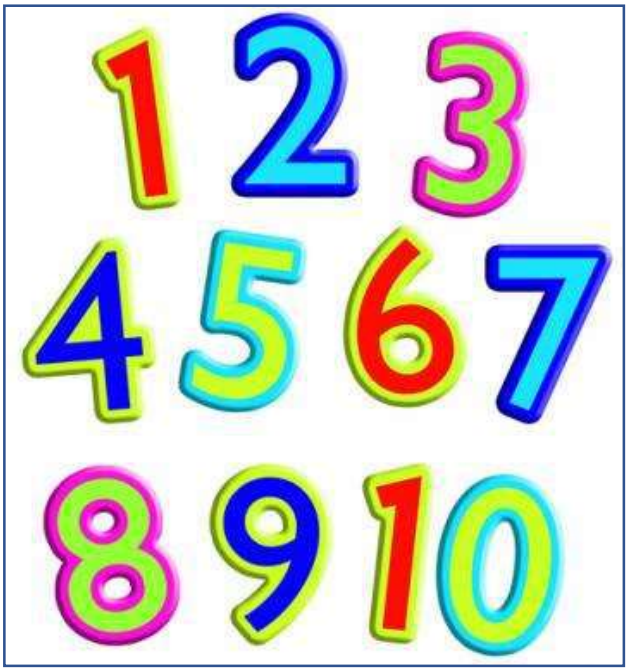

एक चिड़िया आती है, चींव चींव गीत सुनाती है.

दो दिल्ली की बिल्ली हैं, दोनों जाती दिल्ली हैं..

तीन चूहे राजा हैं, रोज बजाते बाजा हैं.
चार कोयल आती हैं, मीठी गीत सुनाती हैं..

पाँच बन्दर बड़े शैतान, मारे थप्पड़ खींचे कान.
छः तितली की छटा निराली, उड़ती है वह डाली डाली..

सात शेर जब मारे दहाड़, काँपे जंगल हिले पहाड़.
आठ हाथी जंगल से आये, गन्ने पत्ती खूब चबाये..

नौ मयूर जब नाच दिखाये, सब बच्चे तब ताली बजाये.
दस तोता जब मुँह को खोले, भारत माता की जय जय बोले..

पंचतंत्र की कथाएँ- जैसे को तैसा

तुलां लोहसहस्त्रस्य यत्र खादन्ति मूषिका:.
राजंस्तत्र हरेच्छ्येनो बालकं नात्र संशयः॥

अर्थात्

जहाँ मन-भर लोहे की तराजू को चूहे खा जाएँ वहाँ चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है.

एक स्थान पर जीर्णधन नामक एक लड़का रहता था. धन अर्जित करने की इच्छा से उसने परदेश जाने का विचार किया. उसके पास कोई विशेष सम्पत्ति तो थी नहीं, केवल एक मन-भर लोहे की तराजू थी. उसे एक महाजन के पास धरोहर रख कर वह विदेश चला गया. विदेश से वापस आने के बाद जीर्णधन ने महाजन से अपनी धरोहर तराजू वापस माँगी. महाजन ने कह दिया- लोहे की वह तराजू तो चूहों ने खा ली.

जीर्णधन समझ गया कि महाजन उसे तराजू वापस देना नहीं चाहता किन्तु अब उसके पास तराजू वापस पाने का कोई उपाय नहीं था.

कुछ देर सोचकर जीर्णधन ने महाजन से कहा- चिन्ता की कोई बात नहीं. तराजू चूहों ने खा ली तो चूहों का दोष है, आपका नहीं. आप उसकी चिन्ता मत करो.

कुछ दिनों बाद जीर्णधन उस महाजन के घर गया और कहा- मित्र ! मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ आप अपने पुत्र धनदेव को भी मेरे साथ भेज दीजिए, वह भी स्नान कर आएगा, उसका मन भी बहल जाएगा.

महाजन जीर्णधन की सज्जनता से बहुत प्रभावित हुआ था, इसलिए उसने अपने पुत्र को उसके साथ स्नान के लिए भेज दिया.

जीर्णधन ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में बन्द कर दिया. गुफा के द्वार पर बड़ी सी शिला रख दी, जिससे वह निकलकर भाग न पाए. फिर वह महाजन के घर आया तो महाजन ने पूछा- मेरा पुत्र भी तो तुम्हारे साथ स्नान के लिए नदी पर गया था, वह कहाँ है?

जीर्णधन ने कहा उसे तो चील उठाकर ले गई, यही बताने मैं आपके पास आया हूँ.

महाजन ने नाराज होकर कहा कि यह कैसे हो सकता है? कभी चील भी इतने बड़े बच्चे को उठा कर ले जा सकती है?

जीर्णधन बोला भले आदमी! यदि चील बच्चे को उठाकर नहीं ले जा सकती, तो चूहे भी मन भर भारी तराजू को नहीं खा सकते. आपको अपना पुत्र चाहिए तो मेरी तराजू वापस दे दो.

इसी तरह विवाद करते हुए दोनों राजमहल में पहुँचे. वहाँ न्यायाधिकारी के सामने महाजन ने अपनी दुःख कथा सुनाते हुए कहा कि इस लड़के ने मेरे पुत्र का अपहरण कर लिया है.

न्यायाधिकारी ने जीर्णधन से कहा- इस महाजन का पुत्र इसे दे दो.

जीर्णधन बोला-महाराज ! महाजन के पुत्र को तो चील उठा ले गई है. मैं उसे कैसे वापस दे सकता हूँ.

न्यायाधिकारी कहने लगा क्या कहते हो? कहीं चील भी बच्चे को उठा ले जा सकती है?

जीर्णधन- प्रभु! यदि मन भर भारी लोहे की तराजू को चूहे खा सकते हैं, तो चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है.

न्यायाधिकारी यह सुनकर चौंक गया.

उसके पूछने पर जीर्णधन ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया.

अब न्यायाधिकारी ने महाजन से कहा कि तुम्हें अपना पुत्र वापस चाहिए तो इस लड़के की तराजू लौटा दो.

महाजन को भी अपनी गलती समझ में आ गई थी. उसने जीर्णधन को उसकी मन-भर लोहे की तराजू लौटा दी और जीर्णधन ने भी महाजन को उसका पुत्र वापस दे दिया.

स्वर गीत

रचनाकार- श्वेता पुष्पेंद्र तिवारी

अ से अनार आ से आम
अपना तो है पढ़ना काम

इ से इमली ई से ईख
मैडम देती अच्छी सीख

उ से उल्लू ऊ से उन
नानी मेरा स्वेटर बुन

ऋ से ऋषि होते हैं संत
वन में बैठ करते तप

ए से एडी ऐ से ऐनक
बच्चों से है घर की रौनक

ओ से ओखली औ से औरत
मां है मेरी ममता की मूरत

अं से अंगूर , अ : से खाली
सभी बजाय मिलकर ताली

बेटी बन कर आयी हूँ

रचनाकार- साक्षी पत्रवाणी, ग्यारहवी, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, पंधी, बिलासपुर

बेटी बनकर आयी हूँ,
मां-बाप के जीवन में.
बसेरा होगा मेरा कल,
और किसी के आंगन में..

क्यों यह रीत,
लोगों ने बनायी होगी.
कहते हैं आज नहीं तो कल,
तू परायी होगी..

दे कर जन्म जिसने,
पाल-पोसकर बड़ा किया.
और वक्त आया तो,
उन्हीं हाथों ने विदा किया..

टूट के बिखर जाती है,
हमारी जिंदगी वहीं.
उस नये बंधन में फिर,
प्यार मिले जरूरी तो नहीं..

क्यों ये रिश्ता हमारा,
अजीब होता है?
क्या बस यही,
हम बेटियों का नसीब होता है?

बाघ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

जंगल का राजा है बाघ,
सबसे अलग है उसकी धाक.
दुश्मन से वह लोहा लेता,
कभी नहीं है जाता भाग.

बैठ दुबक के लगाता घात,
सदा शिकार को देता मात.
भूख लगी तो सब को खाता,
नहीं देखता जात और पात.

बाघ से हर कोई है डरता,
हरदम वह शिकार करता.
पंजे में जो उसके आता,
जिंदा वह बच के नहीं जाता.

चुस्त-दुरुस्त उसका है तन,
जंगल में करता विचरण.
लोगों से वह दूर ही रहता,
घर है उसका सुंदरवन.

साहस का परिचय कराता,
आलस कभी न वह करता
झुंड से अलग पहचान बनाता,
राष्ट्रीय पशु वह कहलाता.

माता-पिता की सेवा

रचनाकार- चंदन वर्मा

एक गाँव मे एक गरीब किसान रहता था. मोहन और सोहन उसके दो पुत्र थे. दोनों को पिता ने खूब पढ़ाया लिखाया. मोहन आगे की पढ़ाई के लिए विदेश चला गया और फिर नौकरी करते-करते वहीं शादी कर के बस गया. सोहन अपने पिता के साथ ही गाँव मे रहकर खेती किसानी करता था. बुढ़ापे में उसके पिताजी बीमार पड़ गए.

इस दुःख की घड़ी में मोहन को पिताजी ने वापस गाँव बुलाया. लेकिन छुट्टी न मिल पाने के कारण मोहन नही आ पाया. पहले घर के लिए मोहन पैसे भेजता था. लेकिन शादी के बाद उसने पैसे भेजना भी बंद कर दिया. अपने जीवन के अंतिम समय में पिताजी ने सोहन को अपने पास बुला कर कहा,कि देखो बेटा जब माँ बाप अपने बच्चों को पढ़ा लिखा कर खुद के पैरों पर खड़ा कर देते हैं तो उन बच्चों का भी कर्त्तव्य ब है कि बुढ़ापे में अपने माँ-बाप की सेवा करे. हर माता-पिता की अपने बच्चों से यही आशा रहती है. लेकिन आजकल बच्चे नौकरी और अपने परिवार में इतने लीन हो जाते हैं कि जन्म देने वाले माता-पिता को ही भूल जाते हैं. कोई कितना भी पैसा कमा ले लेकिन जिसे अपने माता-पिता के प्रति कोई प्रेम नही है तो उसके कमाए पैसे का भी कोई महत्व नही हैं. यह बात कहते हुए पिता सोहन के सामने रो पड़े.

पुनः फैला दो धरा पर हरियाली

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

त्रिविध बयार बहा करती थी,
घर-घर बसता था आनंद.
जब देने से सुख मिलता था,
सबको मिलता था परमानंद.

देने की शिक्षा पायी जिनसे,
आज उन्हें ही भुला दिया.
अपने ही हाथों से हमने,
अपनी जड़ को जला दिया.

धरती के आभूषण को,
कभी नहीं सम्मान दिया.
जिनसे जीवन चलता था,
उनका ही अपमान किया.

सिलेंडरों में बंद हवा की,
छीना-झपटी कर रहे.
श्वांस- श्वांस दुश्वार हुई,
हर पल तिल- तिल मर रहे.

वृक्ष अगर न काटे होते,
दो ही सही लगाए होते.
आज न बेबस जीवन होता,
अश्रु आँख से गिरे न होते.

नहीं हुई है देर अभी भी
सम्भलो अब तो करो सुधार.
हरी-भरी धरा को कर दो,
बच्चों का सजा दो उपहार.

बढ़ती जनसंख्या पर रोक

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

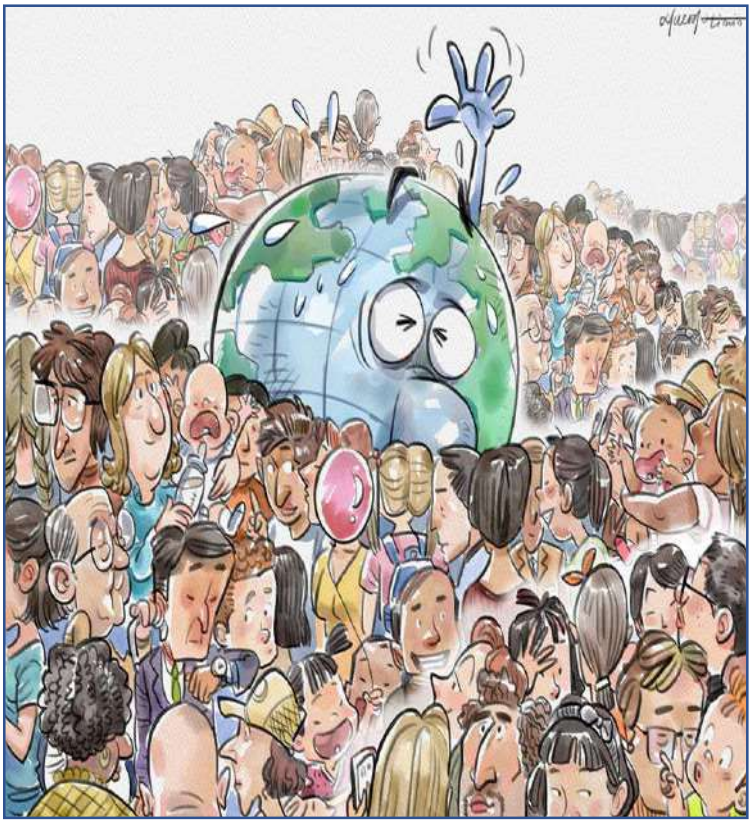

जनसंख्या में देश हमारा,
विश्व में अव्वल होगा.
हम दो हमारे दो से,
इस समस्या का हल होगा.

बेटा-बेटी दोनों समान,
शिक्षा का है सबको अधिकार.
हर परिवार का हो एक ही नारा,
हम दो हमारे दो.

बेटे की चाहत में,
अपने परिवार को ना बढ़ने दो.
शिक्षा,और संस्कार के लिए,
बच्चों को खूब पढ़ने दो.

भुखमरी बेरोजगारी से,
लोगों की जान बचाएँगे.
छोटा परिवार के नारे को,
सच कर हम दिखाएँगे.

छोटा सा परिवार हमारा,
खुशियों का आधार है.
मिल-जुल कर हम सब रहते हैं,
यही हमारा प्यार है.

शिक्षा-दिशा देकर बच्चों को,
काबिल हम बनाएँगे.
जनसंख्या पर रोक लगाकर,
शिक्षा की अलख जगाएँगे.

बेटा-बेटी दोनों अच्छे,
उसमें ना तुम भेद करो.
जिस थाली में खाते हो,
उसमें ना तुम छेद करो.

बाल पहेली

रचनाकार- डॉ. कैलाश गुप्ता

धातु से मैं बनने वाला,
हर घर का मैं हूँ रखवाला.
लगा देखकर अतिथि जाते,
चोर नहीं घर में घुस पाते.

भिन्न-भिन्न है रूप हमारे,
दाम सुरक्षित रखें तुम्हारे.
जब भी कभी घूमने जाओ,
दर-दर पर दो चार लगाओ.

पूरा परिचय मिला आपको,
अब झटपट से नाम बताओ..

खुश रहने का बहाना

रचनाकार- सोमेश देवांगन

हम गरीब हैं साहब, मगर खुश रहना जानते हैं.
चप्पल से सेल्फी ले, हम अभावों को भुलाते हैं.

हर शौक़ तो गरीबी के तले, रोज कुचल जाता है.
हर पल खुश रहने का, मज़ा अलग ही आता है.

सब रंगों की रौनक यूं ही, चेहरों पर खिल जाती है.
मिल जाये जो कांच का टुकड़ा, हीरा उसे बताती है.

अभावों के भाव को छोड़कर, हम हँसते-मुस्काते हैं.
खुश रहने के लिए हम, अपने गमों को छिपाते हैं.

खुश रहना है जीवन में तो, भूल जाओ बीता कल.
गम है तो क्या हुआ, आने वाला है खुशियों का पल.

लाख समस्या हो जीवन में, हरदम मुस्काना चाहिए.
जिंदगी बहुत कीमती है, पल-पल को जीना चाहिये.

बरसात

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

रंग लुटाती मस्ती छलकाती, आई है बरसात.
काले बादल लेकर आया, ख़ुशियों की बारात.

सोंधी महक मिट्टी की, मिल गई हवा के संग.
झूम उठे तृण-तृण भी, जीवन में छाया नवरंग.

कोयल गायी गीत मनोहर, लगा थिरकने मोर.
चहक रहे थे विहग दल, मचाया पवन ने शोर.

स्नेह-सुधा से महके उपवन, भीगा मन का कोना.
मुदित हुआ नवांकुर, बारिश का रूप सलोना.

कल-कल गाती नदियाँ, झरझर झरते हैं झरने.
बच्चों की टोली निकली, लगी नाव अब चलने.

मेघ देते हैं जीवन हमको, प्रकृति की ये सौगात.
रंग लुटाती मस्ती छलकाती, आई है बरसात.

बारहखड़ी

रचनाकार- क्षिप्रा अग्रवाल

अ से अनार, आ से आम,

अपना तो है पढ़ना काम .

इ से इमली, ई से ईख,

मुन्ने राजा कुछ तो सीख ..

उ से उल्लू, ऊ से ऊन,

सर्दी आ गई स्वेटर बुन .

ऋ से ऋषि ॠ से ॠषि,

बड़े होकर करो कृषि ..

ए से एड़ी, ऐ से ऐनक,

देश के बनो सच्चे सेवक .

ओ से ओखली,औ से औरत

मां में, है भगवान की मूरत ..

अं से अंगूर,अः से अ हा,

तुम पढ़ो जोर से पहाड़ा .

जब बादर छाथे जी

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

आसमान मा जब-जब बादर छाथे जी
मोर नाचथे, मेंचका ह नरियाथे जी.

सुरुर - सुरुर चलथे पुरवाही उत्ती ले
रुख-राई मन मुड़ी गजब डोलाथे जी.

हरियर हो जाथे भुँइया के कोरा हर
चिरई-चिरगुन सुग्घर गीत सुनाथे जी.

मगन हो के बाबू मन खेलथे खुड़ुवा
नोनी मन ला फुगड़ी गजब सुहाथे जी.

झिमिर-झिमिर जब पानी परथे भुँइया मा
तब किसान मन हँसते अउ मुसकाथे जी.

कम मात्रा वाले वाक्य

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

जय घर पर रह.

बाहर मत जा.

कमल इधर आ.

गपशप मत कर.

अजय अब उठ.

कलश चल जल भर.

आशा मटर ला.

आहना आम ला.

गगन फल खा.

रजत ठहर.

साफ कपड़ा पहन.

रमन गरम गरम खाना खा.

शरद सामान इधर उधर मत कर.

झटपट काम कर.

जगत लड़ मत.

रतन बरगद पर मत चढ़.

उतर, पास आ.

दशरथ अदरक ला.

ऋषभ काढ़ा बना.

मलय शहद ला.

अब खटपट मत कर.

गोल गप्पा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

गोल गप्पा गोल गप्पा मेरा गोल गप्पा,
चुरमुरा बना है मेरा गोल गप्पा.
भर कर मटर चटपटा पानी,
सबको खिलाता हूं गोल गप्पा.

देख कर इसको सबका,
मन ललचाए गोल गप्पा.
बहुत चाव से खाते सब,
मुहं का स्वाद बढ़ाए गोल गप्पा.

हर बाजार हर शहर में,
खूब बिकता है गोल गप्पा.
ठेला वाल रोज ले कर,
बेचने आता है गोल गप्पा.

दस में चार बीस में आठ,
मिल जाता है गोल गप्पा.
कोई कहता पानी पूड़ी
कोई कहता गुपचुप और बतासा.

हर शादी हर पार्टी में खूब
शान बढाता गोल गप्पा.

गिनती

रचनाकार- वंदिता शर्मा

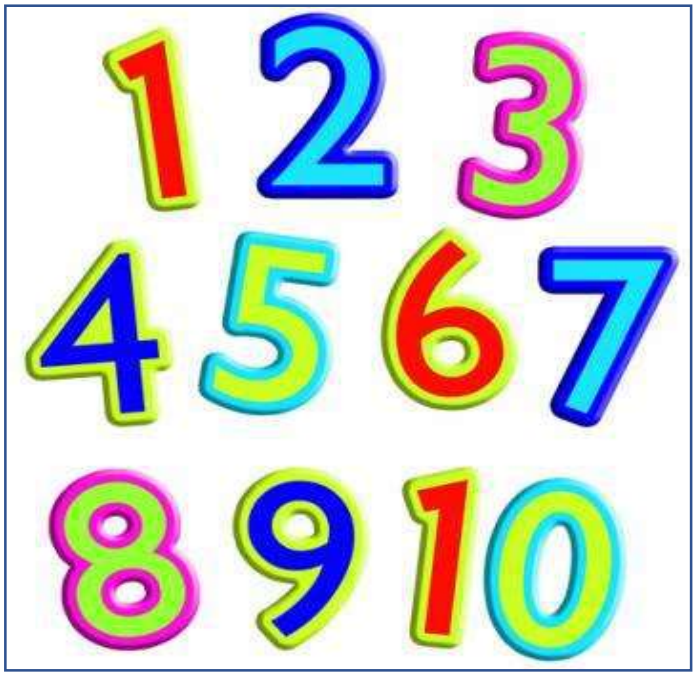

बोलों बच्चों एक
हम सब मिलकर खाएंगे केक
केक

बोलों बच्चों दो
ज्यादा हो गया रहने दो ,रहने दो
अब ना खाओ केक केक

बोलों बच्चों तीन तीन
मिल कर लकड़ी बीन, लकड़ी बीन

बोलो बच्चों चार,बच्चों चार
हम खाते हैं आचार , खाते हैं आचार

बोलों बच्चों पांच, पांच
सब गोले में नाच, गोले में नाच

बोलो बच्चों छह छह
भारत माता की जय जय

बोलों बच्चों सात सात
आओ पढ़े पाठ पाठ

बोलों बच्चों आठ आठ
पढ़ने में है ठाठ ठाठ

बोलो बच्चों नौ नौ
पेपर का बनाओ नाव नाव

बोलों बच्चों दस दस
गिनती हो गई पूरी बस

मोबाइल

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

बबलू बचपन से ही अपने माता-पिता से दूर नाना-नानी के साथ अपने ननिहाल में रहता था. बबलू एक गुणवान लड़का था. रात को जल्दी सोता और सुबह जल्दी उठता, पढ़ाई में अव्वल था. I.A.S ऑफिसर बनने का उसका सपना था. दिन रात पढ़ाई में लगा रहता. नाना-नानी बहुत लाड़ प्यार से उसे रखते थे.

27अगस्त को बबलू का जन्मदिन आया. बबलू ने अपने दोस्तों के साथ जन्मदिन की खुशियाँ मनाईं.नाना-नानी ने बबलू को एक सुंदर तोहफा दिया. तोहफा पाकर बबलू बहुत खुश हुआ. क्योंकि तोहफे में उसे मोबाइल मिला था.

अब बबलू अपने दोस्तों से मोबाइल पर घंटों तक बात करता, गेम खेलता लगभग हर समय बबलू मोबाइल में ही लगा रहता. बबलू के लिए मोबाइल ही उसकी दुनिया हो गई. रात में देर से सोना सुबह देर से उठना,घर के कामों मे हाथ ना बँटाना. उसकी दिनचर्या पूरी तरह बदल गई थी. धीरे-धीरे बबलू पढ़ाई से दूर होने लगा.

नाना-नानी, बबलू के बदलते व्यवहार को देखकर चिंतित होने लगे. पढ़ाई के बारे में बात करने पर बबलू अब गुस्सा हो जाता और उलटा जवाब भी देने लगा. यहाँ तक कि परीक्षा के एक दिन पहले की रात भी बबलू पढ़ाई करना छोड़कर मोबाइल में ही लगा रहा और देर से सोया. सुबह जब उसकी आँखें खुलीं तो सुबह के दस बज चूके थे जबकि परीक्षा का समय सुबह आठ बजे से था. बबलू अब परीक्षा से वंचित हो गया था, उसे बहुत निराशा हुई. माँ-बाप और दोस्त मेरे बारे में क्या सोचेंगे यह सब बातें सोचकर बबलू रोने लगा. दिन भर गुमसुम रहा और रात को खाना खाए बिना ही सो गया. सुबह जब बहुत समय तक दरवाजा नहीं खुला तब नाना जी बबलू को उठाने आये तभी पंखे में लटकते हुए बबलू की लाश देख नाना जी चीख उठे.

जामुन

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

राह किनारे खड़ा है मुन्ना,
जामुन लेकर हाथ में,
आस लगाकर देख रहा,
कोई आएगा अब लेने.

खरी कमाई करता हूँ,
नहीं किसी से मैं डरता हूँ.
मेहनत का फल मीठा होता,
सबको ये बतलाता हूँ.

लाज नहीं मुझको है आती,
करता अपना काम हूँ.
छोटा-बड़ा नहीं होता,
काम तो बस काम है.
क्या कहता है कोई मुझे,

इसकी तनिक परवाह नहीं
अपने धुन में बस रहता हूँ,
मन की बातें सुनता हूँ.

चोरी नहीं करता कभी,
विश्वास बनाए रखता हूँ.
घर का मान बढ़ाता हूँ,
राजा मुन्ना कहलाता हूँ.

दिल में सबके बसता हूँ,
सबके आँखों का तारा हूँ.
अपने सत कर्मों से ही,
सबका प्यार मैं पाता हूँ.

माँ बाप को भूलना नहीं

रचनाकार- दीपेन्द्र पत्रवाणी, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, पंधी, बिलासपुर

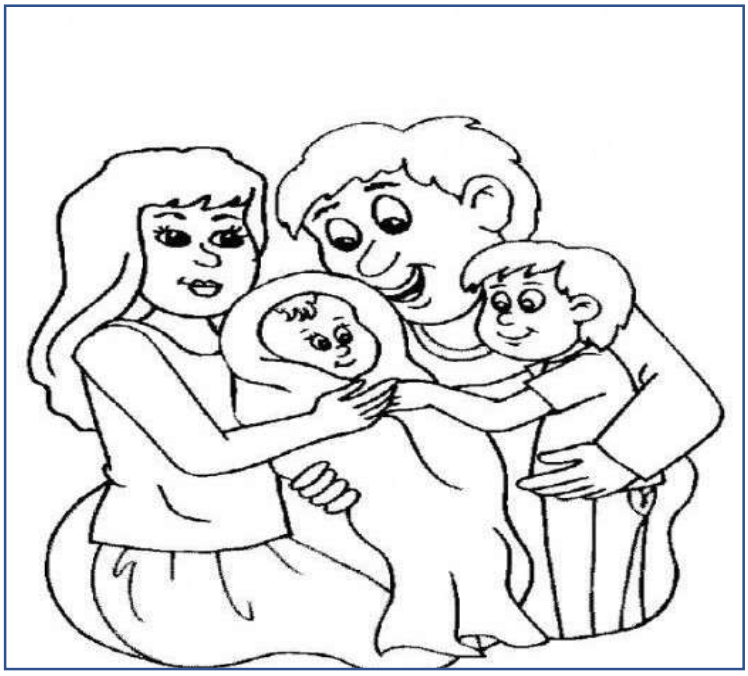

भूलो तुम सभी को मगर,
मां-बाप को भूलना नहीं.
हम पर उपकार अनेक हैं उनके,
इस बात को भूलना नहीं.

पत्थर पूजे कई,
तुम्हारे जन्म की खातिर जिनने.
तुम पत्थर बन,
उनका दिल कुचलना नहीं.

सुख का निवाला दे,
जिसने तुमको बड़ा किया.
अमृत पिलाया जिनने तुम्हें,
जहर उनके लिए उगलना नहीं.

लाखों कमाए हो तुमने पर,
मां-बाप से ज्यादा नहीं.
सेवा बिना सब राख है,
मद में कभी भुलाना नहीं.

संतान बन सेवा चाहो,
संतान बन सेवा करो.
जैसी करनी वैसी भरनी,
न्याय यह भूलना नहीं.

सोकर स्वयं गीली जगह,
सुलाया तुम्हें सूखी जगह.
मां की स्नेहिल आँखों को,
भुलाकर कभी भिगोना नहीं.

धन तो बहुत मिलेगा पर,
मां-बाप इस जीवन में ही पाओगे.
पल-पल पावन उस चरण की चाह,
कभी भूलना नहीं.

माता का गौरव,
पृथ्वी से भारी है.
पिता का गौरव,
आकाश से भी ऊंचा है.

बस्ते का बोझ

रचनाकार- राजकुमार जैन राजन

तुम्ही बताओ मुझको,
कैसे विद्यालय में मैं जाऊँ.
बोझा बस्ते का है भारी,
उठा नहीं में पाऊँ.

सब मुझसे कहते रहते हैं,
अच्छे बच्चे पढ़ते रोज.
लेकिन भइया मुझसे ज्यादा,
मेरे ये बस्ते का है बोझ.

नहीं समझता कोई आखिर,
क्यों नही मेरी मजबूरी.
रट्टू तोता बन जाने से क्या,
शिक्षा होती जाती है पूरी.

थोड़ी समझ बड़ों को दे दो,
ओ मेरे प्यारे भगवान.
बस्ता हल्का करवा दो तो,
पढ़ना हो जाये आसान.

पानी बिन करलई

रचनाकार- सोमेश देवांगन

तरिया घलो सुखागे,
सुख्हा पर गेहे नदिया.
पानी एको कनी नई हे,
खाली पड़े हे हड़िया..

पानी के भारी करलई होगे,
पियास मरत इहा मुसवा.
पानी मिल जाय थोरकन,
आस मा बइठे हवय कुसवा..

सब ला चाही इहा पानी,
पेड़ रहय चाही मनखे चिरई.
आने वाला समय मा गा,
पानी के रही भारी करलई..

पानी के नाम मा होही,
मनखे के झगरा लड़ई.
पानी बिन कुछ नई होय,
कर लव कतको तुम पढ़ई..

पानी बिन सुनना पर जाहि,
ये मोर धरती अगास.
पानी के मोल ला जान लव,
अब इहि हवय आस..

अगड़म-बगड़म चित्र बनाते

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

कुछ उजले कुछ काले बादल,
अजब- गजब मतवाले बादल.
कहाँ-कहाँ से उड़-उड़ आते,
अगड़म-बगड़म चित्र बनाते..

हिम्मत वाले सारे बादल,
जल बरसाते प्यारे बादल.
इंद्रधनुष दिखलाने वाले
खेतों में हरियाली लाते..

चित्रकार बन नभ में आते,
मनमोहक तुम चित्र बनाते.
रिमझिम सा जल बरसाकर,
पेड़ों को हरदम हर्षाते.

सूखे ताल-तलैया भरते,
प्राणी जगत को सुखी करते.
नदियों में जलभर इठलाते,
हर्षित सागर में मिल जाते..

चंदा मामा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

चंदा मामा आसमान से,
उतर कर धरती पर आए.
देख कर उनको सारे बच्चे,
मामा मामा कह कर बुलाए

बोले मामा सब बच्चों से
अपना हाल चाल बताओ.
कौन चांद पर जाएगा,
अपना अपना नाम बताओ.

बच्चे चांद पर जाने को,
हो गए झटपट तैयार.
चांदा मामा ले कर पहुंचे,
सबको चांद के पार.

चंदा मामा के साथ,
बच्चों ने रात बिताई.
बच्चों को फिर मामा ने,
चांद की खूब सैर कराई.

सुबह मेरी आंख खुली तो,
मैं बिस्तर पर अपने को पाया.
सपना देख रहा था,
मम्मी ने हमें बताया.

राखी

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

प्यार से गले लगाती है,
देखो यह राखी.
अपना प्यार लूटाती है
देखो यह राखी.

भाई बहन का प्यार,
बतलाती है राखी.
भाई की कलाई पर,
मुस्काती है राखी.

हर बहन को भाई की,
याद दिलाती है राखी.
प्यार के धागों में,
बंध जाती है राखी.

रेशम के धागों से,
बन जाती है राखी.
बाजारों में चहल पहल,
मचाती है राखी.

बहन को उपहार खूब,
दिलवाती है राखी.
भाई की उम्र खूब,
बढाती है राखी.

सारे रिश्तो में मीठास,
घोल जाती है राखी.
भाई बहन का प्यारा,
त्यौहार यह कहती राखी.

अमर शहीद पण्डित राजनारायण मिश्र

रचनाकार- अभिषेक शुक्ला 'सीतापुर'

आजादी की लड़ाई के लिये मुझे केवल दस देशभक्त चाहिये जो त्यागी हों और देश के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा दें. मुझे कई सौ आदमी नहीं चाहिये जो बड़बोले और अवसरवादी हों. अंग्रेजो के विरुद्ध इसी भावना से क्रांति का बिगुल श्री राजनारायण मिश्र जी ने फूँका.

महान क्रांतिकारी श्री राजनारायण मिश्र जी का जन्म उत्तर प्रदेश के जनपद लखीमपुर खीरी के भीषमपुर गाँव में विक्रम संवत 1976 के माघ महीने की पंचमी तिथि को हुआ था. इनके पिता पंडित बलदेव प्रसाद और माता तुलसा देवी थीं.

राजनारायण मिश्र निर्भीक, चिंतनशील और बचपन से ही क्रांतिकारियों व महापुरुषों की कहानियाँ सुनने के शौकीन थे. इनका गाँव कठिना नदी के किनारे स्थित था और यहाँ के लोगों का जीवन भी नदी के नाम जैसा कठिन था.

उन्होनें बड़े होकर जाना कि यह दयनीय स्थिति सिर्फ उनके गाँव की ही नही अपितु पूरे देश की है. जिसका प्रमुख कारण अँग्रेजी साम्राज्य है. फ़िर क्या था वह भी अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में कूद पड़े.

राजनारायण मिश्र ने खुद को चौदह नियमों व तीन प्रतिज्ञाओं से बाँध रखा था. उन्होनें चालीस साथियों के साथ मिलकर अँग्रेज़ विरोधी वानर सेना बना ली, जो सशस्त्र अभियानों को अंजाम देती थी. 1942 के आन्दोलन में इन्होनें सक्रिय भाग लिया. उन्हें बन्दूकें एकत्रित करने की जिम्मेदारी मिली. इन्होनें बन्दूकों के लिये लखीमपुर रियासत की तहसील के कोठार को कब्जे में ले लिया. बन्दूकें छीनने व रिकार्ड जलाने के ऑपरेशन में चली गोली से जिलेदार की मौत हो गयी.

ब्रिटिश शासन ने राजनारायण मिश्र को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने की घोषणा कर दी. इनके गाँव में आग लगवा दी और घर को खुदवाकर नमक छिड़कवा दिया. इनकी सारी पैतृक संपत्ति और खेत जब्त कर लिये. किन्तु ये भूमिगत होकर और वेश बदलकर देश की आजादी के लिये आन्दोलनरत रहे. पश्चिम बंगाल जाकर बम बनाना सीखा.

15 अक्टूबर 1943 को मेरठ के गाँधी आश्रम से जुड़ गये. वहाँ के प्रबंधक पर विश्वास करके अपना असली नाम और काम बता दिया. उसके विश्वासघात करने पर अंग्रेजों द्वारा इन्हे पकड़ लिया गया. इन्हे जेल मे खूब यातनायें दी गयी और अन्त में फाँसी की सजा सुना दी गयी.

राजनारायण मिश्र अपना आदर्श सरदार भगत सिंह को मानते थे. फ़ाँसी की सजा सुनकर बोले कि मेरा जीवन सफल हुआ. जानकारों का कहना है कि अगर ये अंग्रेजों से क्षमायाचना कर लेते तो इनकी फाँसी टल जाती लेकिन देश का सच्चा सपूत अंग्रेजी साम्राज्य के आगे न झुका.

जब जज ने अन्तिम इच्छा पूछी तो इन्होने कहा कि मेरी अन्तिम इच्छा यह है कि मै फाँसी का फंदा खुद पहनूँगा. 9 दिसम्बर 1944 को इन्होनें हँसते हुये फाँसी का फंदा चूम लिया.

महान क्रांतिकारी राजनारायण मिश्र ने कहा था कि हर देशवासी का कर्त्तव्य है कि वह अपनी सामर्थ्य के अनुसार देश की आज़ादी की लड़ाई में भाग ले.

चलो पेड़ लगाते हैं

रचनाकार- सुनीता साहू

चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं

सुखमय जीवन जीना चाहते हैं,
शुद्ध वायु जल पीना चाहते हैं,
वृक्षारोपण हेतु जागरूक बनाते हैं,
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं..

पर्यावरण से है जीवन हमारा,
इससे चलता संसार सारा,
दिलो में प्रकृति प्रेम जगाते हैं
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं.

देती है सांसें जीवन को,
प्राणवायु हमारे तन को,
प्रदूषण को हम भगाते हैं,
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं..

आसमान में बादल आते हैं,
स्वच्छ जल ये बरसाते हैं,
अकाल से हमको बचाते हैं,
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं..

रबर, कागज, लकड़ी देते हैं,
बदले में हमसे कुछ नहीं लेते हैं,
क्यों जंगल में आग लगाते हैं,
चलो मिलकर पेड़ लगाते हैं..

आम का आचार

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

जया बाजार गई.
बाजार से वह आम लाई.
आम को साफ की.
फिर आम को
काट कर सुखाई.
दादी मसाला बनाई.
जया आम का
चटपटा आचार बनाई.
राधा मटक मटक कर मत चल.
दीदी की मदद कर.
राम नमक ला.
रमा इधर आ, दादी को बुला.
आम का आचार खिला.

चलो घूमने जाएँ

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

पापा चलो घूमने जाएँ
चाट, पकोड़े खाकर आएँ.

मम्मी करती टोका-टोकी
उसको साथ नहीं ले जाएँ.

गए थे एक दिवस बाजार
वहाँ से लाए थे आचार.

इस बार जब हम जाएँगे
मुनिया को भी ले जाएँगे.

उसे दिलाना नए खिलौने
सुन्दर गुड़िया, मृग के छौने.

मुझको नहीं चाहिए ज्यादा
करता हूँ मैं तुमसे वादा.

बस, मुझे एक बॉल दिलाना
या अच्छी मूवी दिखलाना.

कुहू जब रात में जागी

रचनाकार- मोहम्मद अरशद ख़ान

कुहू को डर लगता है. वह छिपकली से डरती है. वह कॉकरोच से डरती है. वह झबरे बालों वाले कुत्ते से भी डरती है. रात में बाथरूम जाने के लिए उठना हो तो मम्मी को जगाए बिना नहीं जाती.

एक रात उसकी नींद अचानक खुल गई.

उस समय लाइट नहीं थी, इसलिए हर तरफ अँधेरा था. घड़ी रात के बारह बजा रही थी. गली में कुत्ते भौंक रहे थे. बाहर बिजली के खंभे पर बैठा उल्लू 'हूक-हूक' कर रहा था. हवा के झोंकों से 'साँय-साँय' हो रही थी. झींगुर एक साथ मिलकर बोल रहे थे.

कुहू का दिल तेजी से धड़कने लगा. उसने खिड़की की तरफ नज़र दौड़ाई. खिड़की के पर्दे हवा से फड़फड़ा रहे थे. उसे लगा कि खिड़की से कोई झाँक न रहा हो. डरकर उसने चादर ओढ़ ली. लेकिन जल्दी ही गर्मी से पसीना-पसीना हो गई.

तभी उसकी नज़र कमरे के दरवाज़े के पास गई. वहाँ अँधेरे में कुछ था. जैसे कोई घुटनों के बल बैठा उसे घूर रहा हो.

अब तो कुहू और भी ज्यादा डर गई.

वह न जाने क्या-क्या सोचने लगी. उसे लगा कि वह परछाईं अपना मुँह फैलाकर उसकी ओर बढ़ रही है. उसके बड़े-बड़े नुकीले दाँत जबड़े से बाहर निकल आए हैं. उसकी लपलपाती जीभ से लार टपक रही है.

कुहू ज़ोर से चीख़ने ही वाली थी कि अचानक लाइट आ गई. उसने देखा कि जिसे वह भूत समझ बैठी थी, वह तो उसका टैडी है.

कुहू अपने डर पर हँस पड़ी.

"भूत कहीं बाहर नहीं, वह तो मन में ही बैठा था.'' यह कहकर वह हँसी और करवट बदलकर फिर से सो गई.

जमीं तलाशना सीख

रचनाकार- श्रवण कुमार साहू,"प्रखर"

अपनी जमीं तलाशना सीख,
आकाश भी मिलेगा.
जरा अंधकार में चलना सीख,
प्रकाश भी मिलेगा..

दूसरों पर भरोसा ना कर,
ज़रा खुद पे करो यकीन.
तुम्हें हर मंजिल मिलेगी,
जो लगता है तुम्हें नामुमकिन.
कभी हारना भी सीख,
देखना शाबाशी भी मिलेगा..

बिना काँटों के कभी कोई,
गुलाब खिला करते नहीं.
बिना साधना के यहाँ पर,
भगवान मिला करते नहीं..

कठपुतली है तो क्या हुआ,
मुक्ताकाश भी मिलेगा..

दूसरों के पदचिन्हों पर तो,
यहाँ हर कोई चलता है.
जो भावनाओं में बहे,
उसे यहाँ हर कोई छलता है.
तू खंज़र खोजकर देख,
अपने आसपास ही मिलेगा..

कर्म

रचनाकार- सीमा यादव

अच्छे कर्म की होती है पूजा.
इसके समान नहीं कोई दूजा.

कर्मों का फल सबको भोगना पड़ता.
विधि के नियम से कोई नहीं बच पाता.

कर्म के बंधन में बंधे हुए हैं सभी.
जीवन के मर्म को भूलना नहीं कभी.

कर्म से ही सच्चाई की परख होती.
और सदा ही सत्य की जीत होती.

कर्मों का होता है पूरा हिसाब.
यही है असल जीवन की किताब.

प्रकृति कभी किसी से कोई भेद नहीं करती.
जो जैसा कर्म करता,उसको वैसा ही फल देती.

आओ मिलकर करें कुछ नेक कर्म.
तभी समझ सकेंगे जीवन का मर्म.

अच्छे कर्म की होती है पूजा.
इसके समान नहीं कोई दूजा.

माँ के आँचल में बसे सभी सुखो का सार

रचनाकार-लक्ष्मी तिवारी

माँ ममता की चांदनी,
माँ सूरज की धूप.
वक्त पड़े ज्वाला मुखी,
वक्त पड़े नल कूप..

माँ मीरा की त्याग है,
माँ बंसी की तान.
माँ बिना जीवन लगे,
जैसे रेगिस्तान..

माँ है,तो है महात्मा,
माँ है,तो हम बने आत्मा,
माँ बिना जग सूना सूना,
माँ बिना न पूर्ण परमात्मा.

शुभाशीष शुभ कामना,
ममता दया दुलार.
माँ के आँचल में बसे,
सभी सुखों का सार..

Rhymes

Poet-Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

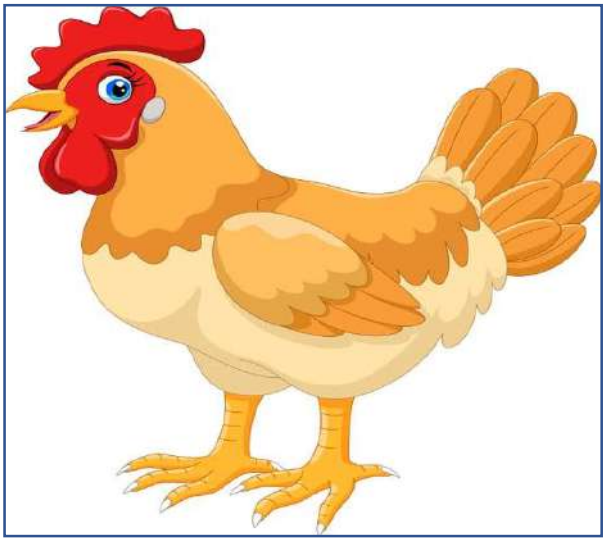

A cute hen,
sat on the mat.
She flew away,
to see the cat.

A trapped bird
makes sound.
'Help...Help...'
turns round.

To be safe,
stay at home.
Neither go to Paris
nor to Rome.

Listen! Listen!
my dear children.
Learn with all,
one by one.

Stand on the earth,
look at the sky.
Dear...! Dear...!
get ready to fly.

कोयल गीत सुनाती

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

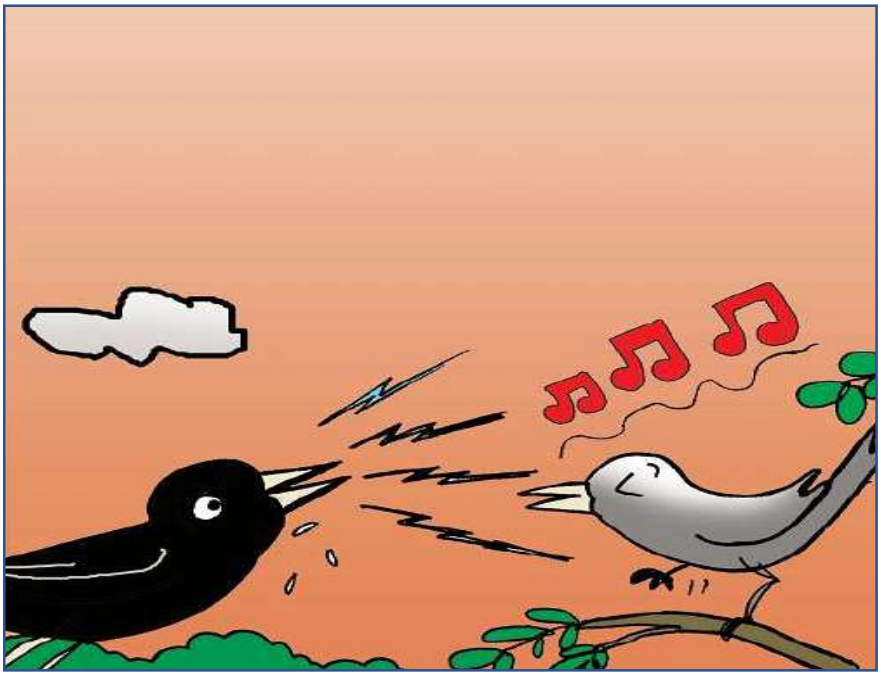

रानी मनु यश बिट्टू,
मैं तुम्हें बताऊँ साथी.
कोयल बगिया में गीत,
आखिर क्यों सुनाती.

शीतल हवा के बहने पर,
सूरज के उगने पर.
पूरब में लाली छाती,
कोयल गीत सुनाती.

आम्र शाख पर बैठकर,
पका हुआ फल खाकर.
मन ही मन मुस्काती,
कोयल गीत सुनाती.

कोयल को लगता जब,
सारा बाग उसका अब.
बड़ी शान से इठलाती,
कोयल गीत सुनाती.

स्वरगीत

रचनाकार- वंदिता शर्मा

अ

अ से अनार खट्टा मीठा
जो रोज सबेरे खाता है,
स्कूल को पढ़ने जाता है.

आ

आ से आम फलों का राजा
जो सबके मन को भाता है,

इ

इ से इमली की बनी खटाई
मुंह में सबके पानी लाई.

ई

ई से ईख

पढ़ना लिखना अच्छे से सीख

उ

उ से उल्लू

आंखे गोल

गरदन घुमाएं चारों ओर

ऊ

ऊ से ऊंट

पीठ पे ठूठ

_ऋ_

ऋ ऋषि साधु कहलाता

जंगल में वह तप को जाता.

ए

ए एडी पंजे के पीछे

चलने में है साथ निभाते

ऐ

ऐ ऐनक आंखों को भाता,

इसे लगाना सभी को आता.

ओ

ओ ओखली अंदर से खोखली

जहां काम करती है मूसली

औ

औ से औरत है घर संवारे
पढ़ लिखकर समाज सुधारे

अं

अं से अंगूर खट्टे मीठे
हम सब खाएं बैठे बैठे

अः

अ : स्वरों का अंतिम अक्षर
पुनः शुरू करो इसको पढ़कर

छाता

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

रंग बिरंगा छाता है,
बच्चों के मन भाता है.

बरखा रानी जब आती,
मस्ती में तन जाता है.

दादाजी को कुत्तों से,
छाता सदा बचाता है.

पापा जब ऑफिस जाते,
छाता संग में जाता है.

हवा में खुले जब छाता,
अंधड़ उसे उड़ाता है.

जिसके पास नहीं होता,
छाता वह भीग जाता हैं.

सर्दी गर्मी बरखा में,
छाता साथ निभाता है.

यमराज घलो रोवत हे

रचनाकार- सोमेश देवांगन

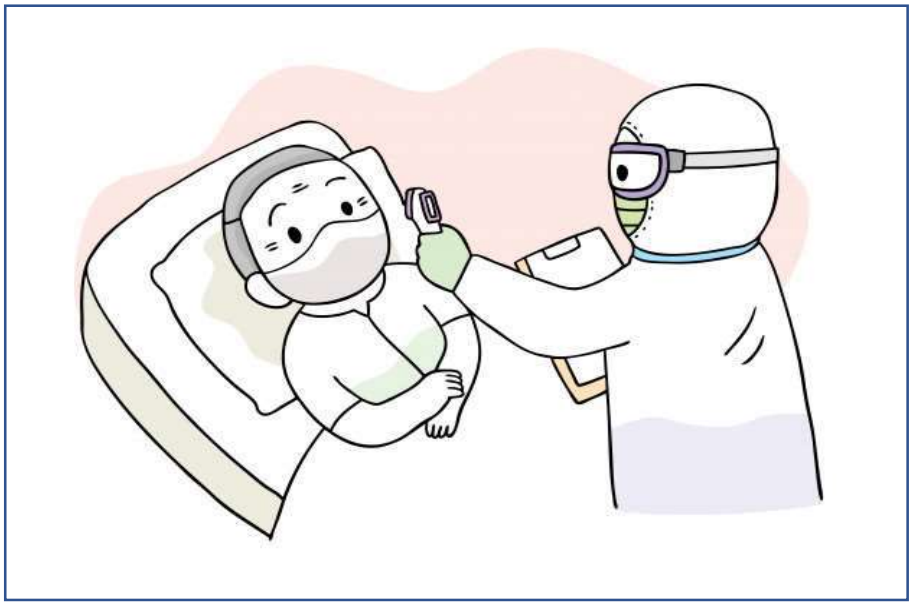

देख दुर्दशा मनखे के यमराज घलो रोवत हे
नान नान लइका मन दाई ददा ला खोवत हे
बने हँसत खेलत परिवार हा घलो उजरत हे
बन्द होंगे काम बूता मनखे भूख म तड़पत हे
देख दुर्दशा मनखे के यमराज घलो रोवत हे.....

आक्सीजन सब कइसे देबो कहिके सोचत हे
ऑक्सीजन के टँकी के रद्दा ल जोहत हे
सूजी दवाई ले बर घलो लड़ाई झगरा होवत हे
अस्पताल म जगह खाली नइ हे चिल्लावात हे
पइसा हे जेब मा ता पाछू कोती ले ओलिहावत हे
देख दुर्दशा मनखे के यमराज घलो रोवत हे.....

बीमारी ले कम मनखे डर के सेती मरत हे
बचा ले भगवान कई के हाँथ ला जोरत हे
का गलती करेव भगवान कइके रोवत हे

लापरवाही करे हे मनखे तेन हर भोगत हे
दवाई गोली कम परगे तहाँ फट ले मरत हे
देख दुर्दशा मनखे के यमराज घलो रोवत हे.....

मरे के बाद घलो लाश ला चैन नइ मिलत हे
कचरा गाड़ी, साइकिल मा भर के लेगत हे
मरघटिया में लाश जलाय बर सब अगोरत हे
लेहे देहे लाश ला कम छेना लकड़ी मा भूँजत हे
आधा जले लाश ला कुकुर कँउवा घलो खात हे
देख दुर्दशा मनखे के यमराज घलो रोवत हे

पर्यावरण

रचनाकार-प्रतिभा त्रिपाठी

वृक्ष लगाओ, पर्यावरण बचाओ
ये संदेश फैलाना हैं.
पर्यावरण को शुद्ध बना के
जीवन को स्वस्थ बनाना है

मत काटो पेड़ों को तुम,
इस पर किसी का बसेरा हैं.
इसके दम पर सांसे चलती
नित आता नया सबेरा हैं॥

नयी पीढ़ी से ये अनुरोध,
सब मिलकर वृक्ष लगाओ.
पेड़ों की रक्षा तुम करके,
पर्यावरण सुरक्षा में हाथ बढाओं॥

चारों तरफ हरियाली हों,
हर घर में खुशहाली हों.
सुन्दर सा एक दृश्य बनाऐ,
हर घर आँगन वृक्ष लगाऐ.

आओ पर्यावरण बचाने का,
मिलकर हम संकल्प उठाऐ.

पौधे का जीवन

रचनाकार-बलबीर सिंह बिष्ट

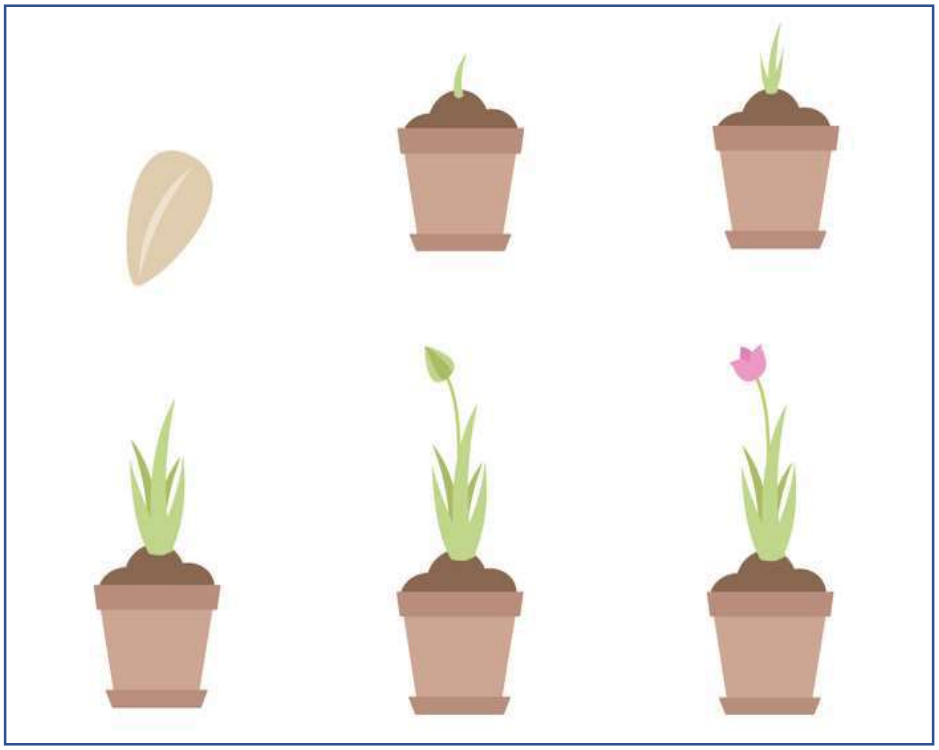

पौधे का जीवन मानव की भांति है,
समय पर इसमें परिपक्वता आती है.

जब खो देता है चमक और यौवन को,
फिर विचारता है पाकर इस जीवन को.

बीज से अवतरित होकर मिला जीवन,
हंसते खेलते बीत गया प्यारा बचपन.

बीता समय और जब यौवन ऋतु आई,
संग अपने वो जाने कितनी बहारें लाई.

फिर उस पर जब आई सुंदर कलियां,
मचल-मचल गई अनगिनत तितलियां.

अति मनमोहक इन फूलों की हंसी थी,
आकर्षक महक तब सांसों में बसी थी.

भंवरों का उन पे फिर मन गया फिसल,
उनके सफल प्रेम से फूल बन गए फल.

निज लक्ष्य के प्रति वह समान एकलव्य था,
फल को पकाना ही उसका परम कर्तव्य था.

फिर उसने अपना ना, तनिक भी ध्यान रखा,
केवल गुरु द्रोणाचार्य जी का मान रखा.

समय के काल चक्र में फंस, वह वृद्ध हो गया,
जीवन किंतु उसका, फिर भी सिद्ध हो गया.

नये फलों से जब कभी, फिर बीज निकलेंगे,
तब इस वसुंधरा पर, फिर नवजीवन खिलेंगे.

मुझको भी दाना डालो

रचनाकार-कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

नवल प्रात: की नई किरण ने,
छटा विकट फहराई.
दूर हो गया तम तुरंत ही,
नई सुबह है आई.

नन्हीं-नन्हीं चिडियाँ चहकीं,
और चहकते बच्चे.
चीं-चीं करके दाना मांगे,
सबको लगते अच्छे.

फुदक-फुदक कर प्यारी कोयल,
मीठे स्वर में गाती.
झट उठ जाओ प्यारी गुड़िया,
सही बात समझाती.

कुल्ला मंजन करके गुड़िया,
झट पट नाश्ता खा लो.
हम भी दाना मांग रहे हैं,
हमको भी तो डालो.

आमाराइट गीत

रचनाकार- श्वेता पुष्पेंद्र तिवारी

जानो सब्बो लइका सियांन
आमाराआइट के गोठ बात
महामारी कोरोना के सेति
इसकूल हमर बंद हे
पर भीतरे भीतर
पढ़ई हमर संग हे
घर बैठ के प्रायोजना ल बनाना हे
शिक्षा अधिकारी के बात ल सब्बो ल जानना हे
लइका लइका जोर के प्रायोजना ल
सीखाना हे
माता पिता पालक की सहभागिता निभाना हे
जीवन से जुड़े कक्षा के गतिविधि हे
फाईल ल बना के ग्रेड ल पाना हे
अपन इसतर ल आगू बढ़ाबो

चित्र बनाबो पेड़ पौधा लगाबो
अउ डारा पाना के करलेबो नाप
जानो सब्बो लइका सियान
आमाराइट के गोठबात
खेले के हमन नामें गिनाबो
ममा गांवों के सगा बताबो
मोटर गाड़ी के नाव ल लिखबो
किसिम किसिम के बिजहा ल जानबो
रोटी पीठा अऊ गहना ल चिनबो
अंगना परछी फइका ल नापबो
अपन बेलगहना ल आगू बढाबो
टीका लगाके कोरोना ल देना हे मात
जानो सब्बो लइका सियान
आमाराइट के गोठबात

चल अकेला चल

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

खुद पर रख भरोसा मुसाफिर,चल अकेला चल.
हौसला, हिम्मत को बना साथी,मत होना विकल.
मत डरना मुश्किलों से, अपने निश्चय पर रह अटल.
बढ़ते जाना आगे ही, ज्यों नदियाँ बहती अविरल.
व्यर्थ न जाने देना समय, अनमोल है एक-एक पल.
अभी से शुरुआत कर, तभी तो सुखमय होगा कल.
चुनौतियाँ आएंगी राह में कई, ढूँढ लेना उसका हल.
रखना सिर सदा ऊँचा, मन में रखना भाव निश्छल.

विनती

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

विनती करती मैं सदा, जोड़ूँ दोनों हाथ.
विद्या दो माँ शारदे! चरण झुकाऊँ माथ..

विनती मेरी आपसे, मुझको दो वरदान.
मैं छोटी-सी लेखिका, मिले कलम को मान..

जय माँ वीणा वादिनी! स्वप्न करो साकार.
आयी हूँ मैं द्वार पर, कर दो बेड़ा पार..

सत्य राह पर मैं चलूँ, सिर पर रखना हाथ.
भूल चूक माफी मिले, रहना मेरे साथ..

चले कलम मेरी सदा, ऐसा दो वरदान.
ज्ञान दीप जलती रहे, पूरे हो अरमान..

किलोल

रचनाकार- सुधारानी शर्मा

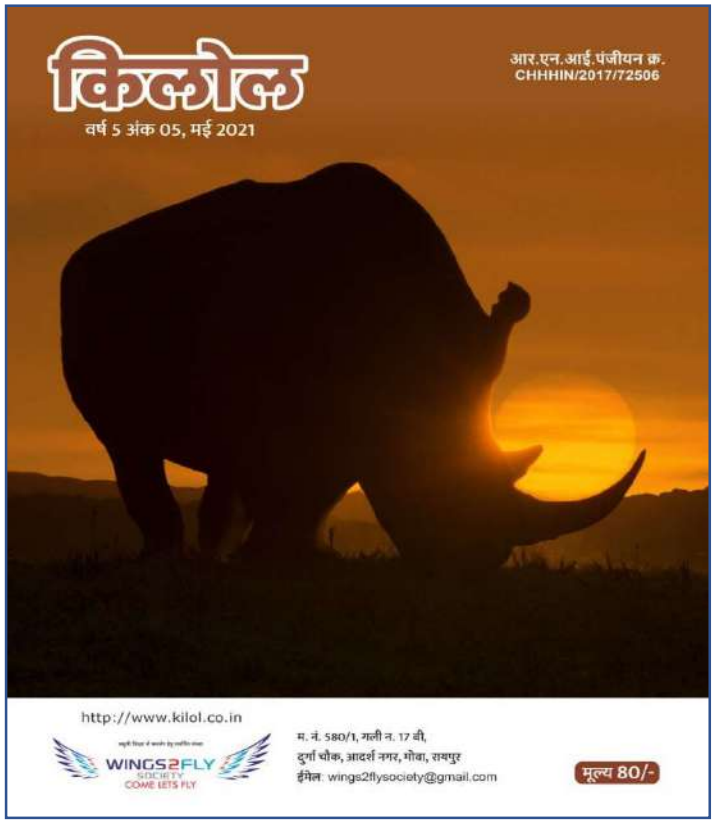

नवअंकुरों की किलकारी,
बच्चों की मोहक मुस्कान है.

बच्चे,बड़े,दादा-दादी,
ये सबकी जान है.

ज्ञान का भंडार है,ये
गुणों की अनुपम खान हैं.

जीवन के हर रंग दिखाती,
यथार्थ की पहचान है.

किलोल का कलेवर सुंदर,
संपादक मंडल भी सुजान है.

बाल पत्रिका मनभावन,
सबमें किलोल की सर्वाधिक शान है.

हर लेखक का मान बढ़ाती,
सबको देती सम्मान है.

किलोल में लेखनी देकर,
मिलता हमें,सरस्वती का वरदान है.

ज्ञान का स्रोत किलोल,
सबकी मेहनत से निरंतर गतिमान है.

जीवन कौशल

रचनाकार- ब्रीजभान टण्डन

जीवन कौशल का हर पाठ कुछ सिखाता है. मैं कौन हूँ? खुद की पहचान कराते हुये स्वयं से प्यार करना सिखाता है. अपने गुस्से पर काबू करके समस्या को समझने और सुलझाने की राह दिखाता है. दूसरों की भावनाओं को समझते हुए उनकी मनोदशा जानने के तरीके भी जीवन कौशल बताता है.

तनाव से कैसे निपटना है? उसके लिए सकारात्मक सोच का विकास भी जीवन कौशल से होता है. बाधाओं को पार करते हुए नई मंजिल पाने की राह दिखाता है.

कठिनाई और अकेलेपन में नेतृत्व करने का गुण भी सीखने मिलता है.

सबके प्रति प्रेम की भावना जागृत होती है,अपनी झिझक से बाहर आने और अपनी बात दृढ़तापुर्वक कहने की हिम्मत भी विकसित होती है.

व्यस्तता से भरे जीवन में समय प्रबंधन का महत्त्व, स्वयं के लिए प्राथमिकताएँ निर्धारित करते हुए खुद के लिए जीना भी जीवन कौशल का महत्वपूर्ण भाग है.

भविष्य में अपने लिए लक्ष्य निर्धारण करना, बालशोषण/यौनशोषण के रोकथाम के तरीके, बालविवाह के दुष्परिणाम जानने का अवसर मिलता है.

सम्प्रेषण के पाठ से ध्यान से सुनना और प्रभावशाली बोलना सीखने में मदद मिलती है.

विवेचनात्मक सोच के माध्यम से बाधाओँ को पार पाना, जेंडर सम्बन्धी जानकारी, लैंगिक भेदभाव मिटाते हुए जेंडर समानता, बाल सुरक्षा एवं बाल अधिकार की जानकारी छात्राओं को जीवन कौशल के सत्रों के माध्यम से मिलती है जो उनके व्यक्तित्व के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है.

मुझे जी लेने दो

रचनाकार- सीमा यादव

मेरे सुखों की परवाह करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

जीवन भर रोक-टोक करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

बात बात पर मेरा पीछा करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

बेकार की नसीहत,सलाह देने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मेरी सफलता की राह में बाधक बनने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मेरी कमजोरियों को प्रकट करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मेरे गमों से दुःखी होने का प्रपंच करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मुझे बेकार में, अकारण ही सहारा देने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मेरे लिए ओछी सोच रखने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

अपनी शक्ति का यूँ ही दम्भ भरने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

मेरे सुखों की परवाह करने वालों,
जरा मुझे मेरे दुःखों के साथ जी लेने दो.

विनती

रचनाकार- सीमा यादव

हे नारायण हे श्री कृष्ण हरे...
मुझमें भी वही भक्ति जगा दे...

जिस भक्ति से मीरा, शबरी, द्रौपदी अहल्या की मान बढ़ी..
जिस भक्ति से कुंती, तारा, मंदोदरी की जगत में पहचान बनी...

जिसकी भक्ति से द्रवित होके तूने नारायण रूप धरा...
भक्ति का मान बढ़ाके भक्त का रूप संवारा...

हे नारायण हे श्री कृष्ण हरे...
मुझमें भी वही भक्ति जगा दे...

सारे संसार को भक्तिमय बनाया....
पुनः सारी दुनिया में भक्ति का प्रकाश फैलाया...

मीरा सी प्रेम दीवानी बन जाऊँ...
सबरी सी ममता लाऊँ...

द्रोपदी सी सहनशीलता हो जाऊँ...
अहल्या सी धैर्य की शक्ति बन जाऊँ...

हे नारायण हे श्री कृष्ण हरे...
मुझमें भी वही भक्ति जगा दे...

भक्ति का रस पीकर सारी सृष्टि में...
भक्ति की लहर से भक्ति की खुशबू जाऊँ...

हे नारायण हे श्री कृष्ण हरे...
मुझमें भी वही भक्ति जगा दे...

सारी धरा पर भक्ति की वर्षा से...
चैतन्य जगत को सिंचित कर जाऊँ...

सुन लो भगवन, मेरी अंतस की क्रन्दन...
करती हूँ तेरे चरणों की बारम्बार वंदन...

हे नारायण हे श्री कृष्ण हरे...
मुझमें भी वही भक्ति जगा दे...

<u>गज़ल</u>

रचनाकार- अंजु दास गीतांजलि

आप मेरी सिफारिश किया कीजिए
नाम महफ़िल में मेरा लिया कीजिए.
आप चाहे तो राहों में मिलकर मुझे
ज़ख़्म जितने है दिल को दिया कीजिए.
साथ तन्हाइयाँ जो चली आपकी
छुप के ऐसे न आँसू पिया कीजिए.
हमको रुसवाइयों ने किया दर -ब -दर
चाक दामन ये मेरा सिया कीजिए.
जिससे बदनामियाँ साथ मिलकर चले
काम ऐसा न कोई किया कीजिए.

हमारे पौराणिक पात्र- आयुर्विज्ञानी वाग्भट्ट

प्राचीन आचार्यो में आचार्य आत्रेय, आचार्य सुश्रुत और आचार्य वाग्भट्ट, ये तीनो “वृद्धत्रयी” के नाम से विख्यात है. इन आचार्यों के ग्रन्थ वर्तमान में भी आयुर्वेद का अध्ययन करने वालों द्वारा विषय की पाठ्य-पुस्तक के रूप में पढे जाते हैं. आचार्य वाग्भट्ट के जन्म काल आदि के विषय में कोई विस्तृत अथवा अधिकृत विवरण प्राप्त नहीं होता. परंतु ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म, सिन्धु नदी के तटवर्ती किसी जनपद में हुआ था. उनके पिता सिंहगुप्त वैदिक ब्राह्मण थे, पर उनके अध्यापक अवलोकिता बौद्ध धर्म के अनुयायी थे इसलिए वाग्भट्ट के जीवन व कृतित्व पर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव था. वाग्भट्ट पर बौद्ध धर्म का प्रभाव इस बात से और स्पष्ट होता है कि उन्होंने 'अष्टांग हृदय संहिता' के प्रारंभ में बौद्ध प्रार्थना लिखी.

“अष्टांग हृदय” और “अष्टांग हृदय संहिता” वाग्भट्ट के दो प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ आज भी पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रयुक्त होते है. आज भी वैद्य समाज इन ग्रंथो को अपनी चिकित्सा का आधार बनाते हैं.

अष्टांग हृदय संहिता” ग्रन्थ के प्रथम भाग में वाग्भट ने प्राचीन औषधियाँ, अध्येताओं के लिए आवश्यक निर्देश, दैनिक एवं मौसम के अनुरूप स्वास्थ्य निरीक्षण, रोगों की उत्पति, विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थो के गुणदोष, विषैले खाद्य पदार्थो की पहचान और उनसे उत्पन्न रोगों का उपचार, व्यक्तिगत शुद्धता, औषधि और उनके विभाग का नाम आदि का वर्णन किया है.

ग्रन्थ के द्वितीय भाग में उन्होंने मानव शरीर की रचना, शरीर के प्रमुख अंगो का विस्तार से वर्णन, मनुष्य के स्वभाव और उसके विभिन्न रूप और उसके आचरणों की व्याख्या की है.

ग्रन्थ के तृतीय भाग में अनेक रोगों जैसे ज्वर, मिर्गी, उल्टी, श्वास और चर्म रोग आदि रोगों के कारण और उनके उपचार की व्याख्या की है.

चतुर्थ भाग में वमन और स्वच्छता

पाँचवाँ जो कि ग्रन्थ का अंतिम भाग है, में बच्चों के रोगों, पागलपन, आँख,कान, नाक और मुख के रोगों व घावों के उपचार, विभिन्न जानवरों व कीड़ों के काटने के उपचार का वर्णन किया गया है.

वाग्भट्ट ने अपने पूर्ववर्ती चिकित्सकों के विषय में भी आदरपूर्वक वर्णन किया है.

इस ग्रन्थ को आयुर्वेद का महत्वपूर्ण ग्रन्थ स्वीकार किया जाता है. चीनी यात्री इत्सिंग ने लिखा है कि उसके सौ वर्ष पूर्व एक व्यक्ति ने ऐसी संहिता बनाई जिसमें आयुर्वेद के आठों अंगों का समावेश हो गया है. 'अष्टांग हृदय' का तिब्बती भाषा में अनुवाद हुआ था. इस ग्रंथ का जर्मन भाषा में भी अनुवाद हुआ है. इससे यह सिद्ध होता है कि उस युग में भारत का आयुर्विज्ञान अत्यंत उन्नत था और वाग्भट्ट भारत के महान आयुर्विज्ञानी थे. उनके इस ज्ञान से पूरा विश्व लाभान्वित हुआ है. हमें गर्व है कि हम ऐसे भारतीयों के वंशज हैं.

कैसा दिन देख रहे

रचनाकार- सोमेश देवांगन

कैसा दिन देख, रहे हैं हम अब.
हवा पानी भी, खरीद रहें हैं सब..

करते रहते थे, बहुत मनमानी.
न मिलता, ताजा हवा न पानी..

पैसे से लेते, जीने के लिए हवा.
कहते बोतल, बन्द पानी है दवा..

किये हैं पेड़ की, जी भर कटाई.
हवा के लिए, अब हो रही लड़ाई..

जिंदगी में एक भी, पेड़ न लगाई.
बिन आक्सीजन के, जान गवाई..

अपनो को मरते, सब देख रहे हैं.
अब खून के आँसू, सब रो रहे हैं..

खेल डायरी

रचनाकार- प्रमोद नवरत्न

वह खेल सुहाना लगता है,
जब दोस्त साथ हो जाते हैं.

आलस्य सब दूर हो जाता है,
जब क्रिकेट मैच हो जाता है.

वह मैच आनंद आ जाता है,
जिस मैच में हम चल जाते हैं.

वह कैच लाजवाब होता है,
जो मुश्किल वक्त में हम लेते हैं.

वह खेल सुहाना लगता है,
जब दोस्त सब मिल जाते हैं.

उस ओवर में ताली बजती है,
जब चौका छक्का पड़ता है.

वह पल खराब-सा लगता है,
जब रनआउट हम हो जाते हैं.

वह खेल सुहाना लगता है,
जब अच्छा फिल्डिंग होता है.

वह मौसम सुहाना लगता है,
जब क्रिकेट का मैच हो जाता है.

क्या गर्मी और क्या ठंडी,
बरसात में भी हम खूब दौड़ लगाते हैं.

वह मैच रोमांचक लगता है,
जब आखरी बाल पर हम जीत जाते हैं.

नदियाँ

रचनाकार- सरिता माही

सुनो मेरे धरती के वासी,
मैं कल-कल करती नदियाँ हूँ.
तुम मुझसे मैं तुमसे जुडी,
इस मिट्टी का अंग मैं भी हूँ.

मांग रही मैं तुमसे जीवन,
जो तुमको जीवन देती हूँ.
ना सताओ मुुझको तुम,
ऐसे मुझे बहने दो.

उसी धार पर मुझे जा मिलना है,
मुझ पर थोड़ा सा उपकार कर.
पहाड़ों की चोटियों से,
मैं रास्ते खुद ही बनाती हूँ.

आकर तुम्हारे गलियों में,
मैं बांधों से बंध जाती हूँ.

कारखानों के काले रंग,
आकर मुझसे लिपट जाते हैं.
बेजुबान मासूम जानवर,
उसे पीकर मर जाते हैं.

गलतियाँ तुम करते हो,
दोष मुझ पर लगाते हो.
इस सुन्दर धरती की,
जल धारा मैं नाम हूँ.
सुनो मेरे धरती के वासी
मैं ही गंगा-यमुना चारों धाम हूँ..

टार्च बाबू

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

बरसात म ये बूता करही आघू,
एकठन लेदे मोर बर टार्च बाबू.
पानी म मोबाइल भागथे पाछू,
हमर काम आही टार्च बाबू..

पचास-पचास हाथ के दूरिहा ल,
रग-रग ले देख लेथे मोर टार्च बाबू.
बिजली कट जाथे नइ रहय घर म त,
हमर काम आथे मोर टार्च बाबू..

रातिहा निकलथे जहरीला जीव,
तेला साफ-साफ चिन्ह लेथे बाबू.
घर म ह धरे बर एकठन टार्च ला,
मोर बर तैं काबर नइ लेवस टार्च बाबू..

एके किने म पईसा लगथे थोड किन,
आऊ काम बहुत जियादा करथे बाबू.

रात-बिरात म गांव गलियन निकलथो,
धर के मैं हर टार्च बाबू
अंधियारी रातिहा कर कोनो चिंता नइ हे,
नइ डराए मोला अब नइ करे कोनो तंग..

जिराफ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

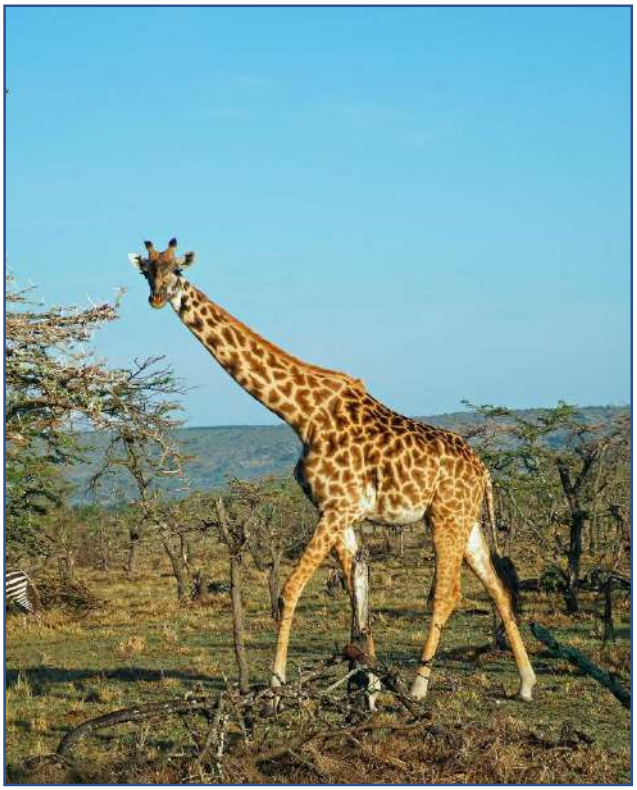

जंगल में आया एक मेहमान,
उसे देख सब हुए हैरान.
ऊँची गर्दन, लम्बी टाँगे,
देख उसे सब जानवर भागे..

नाम था उनका जी से जिराफ,
करता सब को वो है माफ.
सब लोगों का कर सम्मान.
बन गया जंगल का वो शान..

ऊँची पेड़ की डाली को खाता,
उसे देख बकरी ललचाता.
देख बकरी को करता मस्ती,
कर बैठा जिराफ है दोस्ती..

जिराफ के सर बकरी बैठता,
जंगल की वो सैर कराता.
पेड़ों की पत्ती को खाता,
उनका मन हर्षित हो जाता..

देख जिराफ-बकरी की दोस्ती,
शिकारी की पड़ी नजर.
गडढा खोदा जाल बिछाया.
फंस गए दोनों जमीं अंदर..

<u>जल</u>

रचनाकार- सविता भूदीप, आठवीं, स्वामी विवेकानंद शास.उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल जगदलपुर

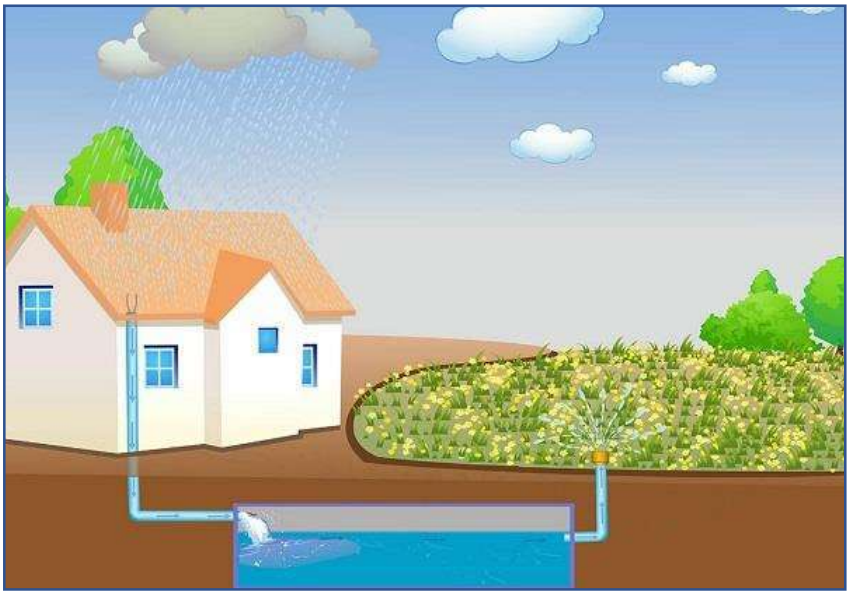

जल न रहेगा तो,
जीवन न रहेगा.
चलो हम साथी पानी बचाएंगे,
आने वाले समय ये कष्ट न पाएंगे.
पानी की एक-एक बूँद को,
समझेंगे समझायेंगे.

पानी बचाएंगे, पानी बचाएंगे,
पानी की बर्बादी,
दूसरों से ना करवाएंगे.
सबको समझायेंगे, पानी बचाएंगे..

चलो घूमने जाएँ

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

पापा चलो घूमने जाएँ
चाट, पकोड़े खाकर आएँ.

मम्मी करती टोका-टाॅकी
उसको साथ नहीं ले जाएँ.

गए थे एक दिवस बाजार
वहाँ से लाए थे आचार.

इस बार जब हम जाएँगे
मुनिया को भी ले जाएँगे.

उसे दिलाना नए खिलौने
सुन्दर गुड़िया, मृग के छौने.

मुझको नहीं चाहिए ज्यादा
करता हूँ मैं तुमसे वादा.

बस, मुझे एक बाॅल दिलाना
या अच्छी मूवी दिखलाना.

नाम है मेरा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

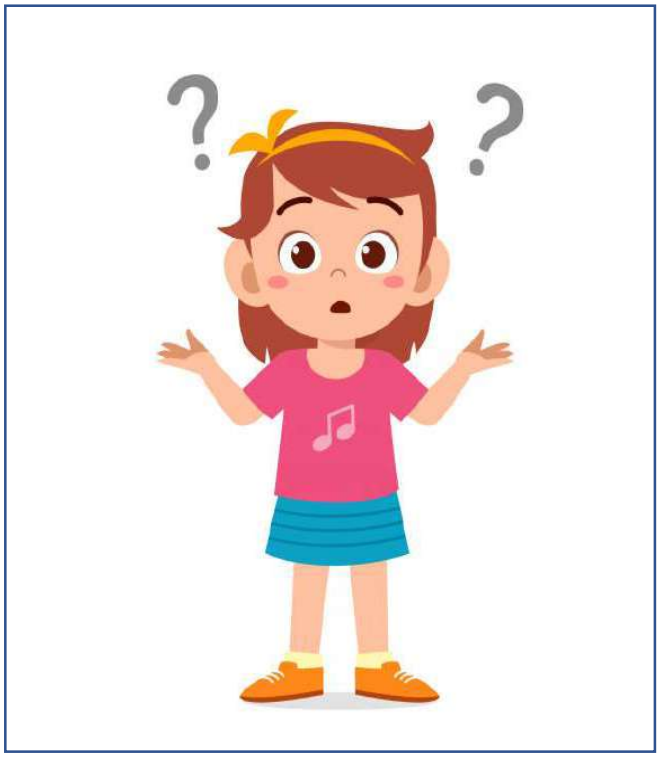

1. दिन रात मैं चलती रहती !
ना मैं थकती, ना मैं रुकती !
टीक-टीक-टीक करती रहती !
नाम है मेरा.....

2. सब के घरों में मैं रहती हूँ,!
सब कोई मुझको ही देखे !
बदले में खुद को ही देखे !
नाम है मेरा.....

3. सीधे,लम्बे,टेढ़े,मेढ़े दिखती हूँ मैं !
गाँव,गली शहरों में, रहती हूँ मैं !
कहीं कच्ची,कहीं पक्की रहती हूँ मैं !
नाम है मेरा.....

4. वन,उपवन में रहने वाली,
फूलों पर मंडराने वाली,
रंग बिरंगे पंखों वाली,
नाम है मेरा.....

5. जंगल का हूँ मैं मेहमान,
देख मुझे सब होते हैरान,
ऊँची गर्दन, लम्बी टाँगे,
नाम है मेरा.....

उत्तर:- 1. घड़ी २.दर्पण 3.सड़क 4.तितली 5. जिराफ

डॉक्टर

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

तन मन को स्वस्थ बनाता
बीमारी को दूर भगाता

धरती का है भाग्य विधाता
डॉक्टर उसका नाम कहलाता

जल्दी सोना,जल्दी जागना
स्वास्थ्य है हम सब का गहना

सुबह-शाम पैदल है चलना
डॉक्टर का सबको हैं कहना

जितना खाना उतना पचाना
हरे पत्तेदार सब्जियां खाना

धूम्रपान से दूर ही रहना
बासी भोजन कभी ना करना

फल फूल से जोड़ो नाता
जंग फूड से तोड़ो नाता

नियमित जो टहलने जाता
स्वस्थ्य निरोग तन मन पाता

-

बरखा आई

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

धरती माँ की प्यास बुझाने
सब जीवों में आस जगाने

तेज हवा का झोंका आया
संग में अपने बरखा लाया

मेंढक करता टर्र-टर्र-टर्र
पानी बरसे झर-झर-झर

बादल गरजे गड़-गड़-गड़
बिजली चमके कड़-कड़-कड़

मोर पपीहा कोयल गाए
धरती में हरियाली छाए

फ्रिज का पानी

रचनाकार-कन्हैया साहू 'अमित'

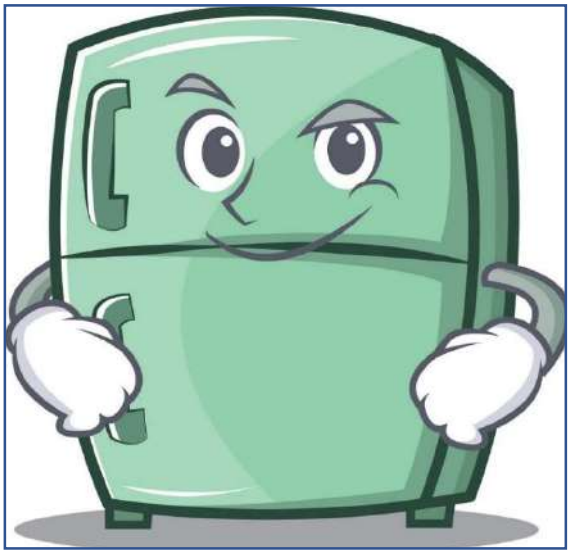

मत करना तुम यह नादानी..
कभी न फ्रिज का पीना पानी..

बार-बार अब छींक सताये.
नाक बहुत बहती ही जाये..

दुख देता है खाँसी बलगम.
फिर बुखार रहता है हरदम..

अस्पताल पड़ जाये जाना.
खूब दवाई तो फिर खाना..

इंजेक्शन दो चार लगाये.
अक्ल ठिकाने आ ही जाये..

मम्मी कहती कहना मानों.
भला-बुरा अपना पहचानों..

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

बूढ़े बाबा की बाँसुरी

गाँव के बाहर नदी किनारे कुटिया बनाकर एक बूढ़ा व्यक्ति रहा करता था. उस बूढ़े को गाँव के लोगों ने हमेशा अकेला ही देखा था.

उसके परिवार के किसी और सदस्य के विषय में कोई भी कुछ नहीं जानता था. उस बूढ़े ने कुटिया के पास फलों का एक बगीचा लगा रखा था और प्रत्येक ऋतु में लगने वाले फलों को बेचकर मिलने वाले धन से ही उसकी आजीविका चलती थी.

गाँव के लोग उसे बूढ़े बाबा के नाम से संबोधित करते थे. किसी को उसका असली नाम नहीं मालूम था.

बूढ़े बाबा का बस एक ही काम था बाँसुरी बजाते हुए अपने फलों के बगीचे की रखवाली करना. वे अपना भोजन स्वयं पकाते और भोजन के बाद अपनी बाँसुरी लेकर बगीचे में किसी भी पेड़ की छाया में बैठ जाते, और फिर बाँसुरी की स्वर लहरियाँ आसपास के वातावरण में तैरने लगतीं. नदी किनारे जानवरों को चराने के लिए लाने वाले चरवाहों के साथ साथ जानवरों को भी बूढ़े बाबा की बाँसुरी की धुन सुनने की आदत सी हो गई थी.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

सुधारानी शर्मा द्वारा पूरी की गई कहानी

बूढ़े बाबा का काम,और उनका शौक दोनों ही बहुत अच्छे थे. बाँसुरी की मीठी स्वर लहरियाँ, और मीठे फल, जो बूढ़े बाबा की आजीविका के साधन होने के साथ-साथ परिश्रम करने और आत्मनिर्भर जीवन जीने की प्रेरणा देते थे. सोने पर सुहागा था बूढ़े बाबा का अच्छा और नेक स्वभाव.

एक दिन गाँव के कुछ लोगों ने बूढ़े बाबा से निवेदन किया कि बाबा आप गाँव के बाजार आकर फल बेचा करो, आप सिर्फ बाजार में बैठ कर बाँसुरी बजाना, संगीत सुनकर ग्राहक स्वयं ही आपके पास आएँगे.

बूढ़े बाबा को भी यह सुझाव अच्छा लगा वह गाँव वालों की बात मानकर बाजार आकर फल बेचने लगे.

जब शौक और लगन साथ मिल जाते हैं तब सफलता निश्चित रूप से मिलती है हमें भी अपना हर कार्य, मन लगाकर पूरी ईमानदारी के साथ करना चाहिए जिस तरह बूढ़े बाबा ने अपने शौक और अपनी आजीविका को साथ लेकर किया

सीमा यादव पूरी की गई कहानी

एक दिन अचानक बाँसुरी बजाते हुए बूढ़े बाबा की तबीयत बिगड़ गयी और वे बेहोश होकर गिर गए.. तभी वहाँ एक लड़का आया, उसने बाबा को बेहोश देखा, तो बाबा से पूछा कि क्या हुआ बाबा? बाबा ने उसकी आवाज सुनकर धीरे से उठने की कोशिश की. बाबा ने लड़के से कहा कि कुछ पता नहीं कि क्या हुआ, मुझे अचानक चक्कर आया और मैं गिर गया. अब मैं कुछ ठीक हूँ. पर तुम यहाँ पर क्या कर रहे हो? लड़के ने कहा कि पास में ही हम लोग का खेत है, मैं वहीं जा रहा था. बाबा उस लड़के के साथ-साथ चलने लगे और बात करते हुए खेत पर पहुँच गए. वहाँ उस लड़के के माता -पिता ककड़ियाँ तोड़ रहे थे. लड़के ने उन्हें पूरी बात बताई.

लड़के की माँ ने बूढ़े बाबा को पीने का पानी दिया और उन्होंने बूढ़े बाबा को ककड़ियाँ खाने को दीं. ककड़ियाँ खाकर बाबा को बहुत अच्छा लगा.बाबा को प्यास भी लगी थी, शायद इसीलिए उनको चक्कर आ गया था अब वे पहले से बहुत बेहतर महसूस कर रहे थे. बाबा ने लड़के के माता-पिता को बहुत धन्यवाद दिया और लड़के को प्रेम से गले लगा लिया. फिर बाबा अपने फलों के बगीचे की ओर चले गए.

युगांतर यादव,कक्षा पाँचवीं, सरस्वती शिशु मंदिर सेतगंगा, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

एक दिन बूढ़े बाबा की बाँसुरी कहीं खो गयी. बाबा ने सब जगह ढूँढ़ा पर उन्हें बाँसुरी नहीं मिली. असल में बाँसुरी, एक गिलहरी ले गयी थी और पेड़ में जाकर बाँसुरी को कुतर रही थी. जब बूढ़े बाबा अपनी बाँसुरी ढूँढ़ते हुए जा रहे थे, तभी उन्हें कुछ कुतरने की आवाज सुनाई दी. बाबा ने पेड़ की ओर देखा तो गिलहरी उनकी बाँसुरी कुतर रही थी. अचानक गिलहरी के हाथ से बाँसुरी छूट कर गिर गई और बाबा ने जल्दी से अपनी बाँसुरी उठा ली. बाबा ने अपनी बाँसुरी को ठीक करवा लिया और फिर रोज की ही तरह वे फिर अपने बगीचे की रखवाली करने लगे. और बगीचे के एक पेड़ के नीचे छाया में बैठकर बाँसुरी बजाने लगे. बाँसुरी बजाने से बूढ़े बाबा को बहुत ही सुकून मिलता था, बाँसुरी उनकी बहुत अच्छी दोस्त थी.

लोकेश्वरी कश्यप द्वारा पूरी की गई कहानी

एक दिन जब चरवाहे अपने जानवरों को नदी किनारे लेकर आए तो उन्हें बूढ़े बाबा की बाँसुरी की आवाज सुनाई नहीं दी. वे चिंतित हो गए कि आखिर बात क्या है? उस दिन जानवरों और चरवाहों का मन नहीं लगा. सब बूढ़े बाबा के बारे में सोच रहे थे कि आखिर वे आज बाँसुरी क्यों नहीं बजा रहे हैं ?

शाम हुई, सब अपने-अपने घर लौट गए, पर एक बात तो थी कि किसी का भी ध्यान बाँसुरी की आवाज के बगैर काम में नहीं लगा था उस दिन.

सभी चरवाहों ने शाम को चौपाल में तय किया कि इस बारे में हमको जाकर पता करना चाहिए कि माजरा क्या है ?

लोगों ने तय किया कि वे बाबा के घर जाएंगे और देखेंगे कि क्या हुआ है? कहीं उन्हें किसी मदद की जरूरत तो नहीं है? सब ने अगले दिन सुबह वहाँ जाकर देखा कि बूढ़े बाबा बीमार थे.उनकी हालत देखकर चरवाहों ने तय किया कि वे लोग बारी-बारी से बूढ़े बाबा की देखभाल करेंगे. सब लोगों ने अपनी सहमति जताई लेकिन गिरीश ने कहा कि इस तरह बारी-बारी, यहाँ रहने की जरूरत नहीं है. मैं बाबा की पूरी जिम्मेदारी उठाने के लिए तैयार हूँ. मैं मेरी पत्नी और मेरा बच्चा हम तीन ही लोग हैं, अगर बूढ़े बाबा हमारे साथ रहे तो मेरे बच्चे को भी दादा का प्यार मिलेगा और बूढ़े बाबा को भी अच्छा लगेगा. मेरी पत्नी को भी इसमें किसी प्रकार की कोई आपत्ति नहीं है बल्कि यह उसी का सुझाव था कि बूढ़े बाबा हमारे साथ रहें या फिर हम ही बूढ़े बाबा के साथ आ कर रहें. सभी लोगों को गिरीश की बात अच्छी लगी. लेकिन गाँव वालों ने गिरीश को समझाया कि अगर बूढ़े बाबा का तुम्हारे, तुम्हारी पत्नी या तुम्हारे बच्चे के द्वारा अपमान किया गया तो यह उनके लिए ठीक नहीं होगा. गिरीश ने सब को आश्वस्त किया कि ऐसा नहीं होगा, वह सभी बूढ़े बाबा का बहुत अच्छे से ध्यान रखेंगे.

इस प्रकार बूढ़े बाबा को परिवार का साथ मिल गया और गिरीश और उसके परिवार वालों को भी बूढ़े बाबा का आशीर्वाद और साथ मिला. अब बाबा आराम से बाँसुरी बजाते और गिरीश के बच्चे को खिलाते रहते थे. सब मजे से रहने लगे.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

रोज की तरह आज भी जानवरों को चराने के लिए चरवाहा नदी के किनारे पहुँचा. लेकिन बूढ़े बाबा की बाँसुरी की धुन आज सुनाई नहीं दे रही थी. सभी जानवर रोज की तरह पेड़ के नीचे छाँव में बैठ गए.चरवाहा की भी आदत बन गई थी बाँसुरी की धुन सुनते ही सोने की. वह धुन का इंतजार करते हुए आज भी पेड़ नीचे गहरी नींद में सो गया.

इधर सभी जानवर बाँसुरी की आवाज न आने के कारण जंगल की ओर निकल गए.अचानक चरवाहा की नींद खुली,पास में कोई जानवर न पाकर वह परेशान हो गया. सभी तरफ ढूँढने के बाद भी जानवरों का पता नहीं चला. हारकर चरवाहे ने मालिक के घर पहुँच कर स्थिति की जानकारी दी. मालिक ने भी जानवरों को खोजने का हर संभव प्रयास किया लेकिन कुछ पता नहीं चला. अंत में मालिक और चरवाहा समस्या हल करने के लिए बूढ़े बाबा के पास पहुँच कर उनसे सहयोग माँगा, कि वह जंगल में जाकर बाँसुरी बजाएँ, संभवत: बाँसुरी की धुन सुनकर सभी जानवर आ जाएँ.

बूढ़े बाबा चरवाहे एवं मालिक की परेशानी को देखते हुए उनके साथ जंगल में जाकर बाँसुरी बजाने लगे. बाँसुरी की धुन सुनकर सभी जानवर बूढ़े बाबा के पास पहुँच गए. मालिक को उसके सभी जानवर मिल गये. बूढ़े बाबा को मालिक एवं चरवाहे ने धन्यवाद दिया और कहा कि अगर आपको कोई भी जरूरत हो तो हमें जरूर याद करें.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा पूरी की गई कहानी

एक दिन बूढ़े बाबा की बाँसुरी की धुन सुनाई नहीं दी, गाँव वालों और चरवाहों को आश्चर्य हुआ. उन्होंने बाबा की कुटिया में जाकर देखा कि बूढ़े बाबा ज्वर से कराह रहे थे, उनका शरीर तप रहा था, उनकी सेवा करने वाला कोई नहीं था. तब एक चरवाहे ने बगीचे से फल लाकर बूढ़े बाबा को खिलाए. फल खाकर बूढ़े बाबा को कुछ आराम महसूस हुआ और ताकत आई. पर ज्वर अभी भी था जिससे चरवाहे डॉक्टर को बुला लाए. डॉक्टर ने जाँच की और कुछ दवाइयाँ देकर बाबा को आराम करने कहा.

चरवाहों के पूछने पर बूढ़े बाबा ने बताया कि वह पास के राज्य के एक बहुत धनी आदमी का पिता है पर नदी किनारे प्रकृति की गोद में रहने की इच्छा के कारण वो यहाँ रहते हैं. यहाँ पर सुकून का जीवन मिला है इसलिए अपने घर जाना नहीं चाहते हैं.

बूढ़े बाबा फिर से स्वस्थ हो गए और आज भी नदी किनारे उनकी बाँसुरी की आवाज सुनाई देती है.

मंजू साहू द्वारा पूरी की गई कहानी

बूढ़े बाबा का बगीचा और आसपास का वातावरण आनंदमय, बाँसुरी की मधुर स्वर लहरियों से भरा रहता था. नदी किनारे किशोर वय का चरवाहा राजू, जानवरों के साथ प्रतिदिन आया करता था और बाँसुरी की धुन सुनते हुए पेड़ों की छाया में सो जाता था. उसके सभी जानवर यहाँ-वहाँ बिखर जाया करते थे. राजू को भी बाँसुरी बजाने का शौक लग गया था. एक दिन राजू बूढ़े बाबा के बगीचे में हिम्मत जुटाकर गया और बाबा के पास जाकर उनसे बाँसुरी बजाना सीखने की इच्छा व्यक्त की. बूढ़े बाबा राजू की बात सुनकर मुस्कुराने लगे और राजू को बाँसुरी बजाना सिखाने को तैयार हो गये. बूढ़े बाबा ने कहा इतने वर्षों से मेरे पास कोई बाँसुरी बजाना सीखने नहीं आया. तुम्हारी इच्छा है तो मैं तुम्हें जरूर सिखाऊँगा. तुम प्रतिदिन जानवरों के साथ आते ही हो, इसी समय मैं तुम्हें बाँसुरी बजाना सिखाया करूँगा. कल से तुम्हारा सीखना शुरू.

बूढ़े बाबा ने राजू को अपने बगीचे से ढेर सारे फल दिये. राजू ने बाबा से अगले दिन आने का वादा किया और फल लेकर अपने जानवरों के साथ अपने घर चला गया.

शालिनीपंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी

बारिश का मौसम आया.एक दिन बूढ़े बाबा अपनी दिनचर्या अनुसार बाँसुरी बजा रहे थे कि तेज बारिश शुरू हो गयी. चरवाहे अपने मवेशियों को लेकर चले गए. बारिश की वजह से कोई राहगीर भी न आया. बारिश दो दिनों तक लगातार होती रही, नदी का जलस्तर बढ़ने लगा. तब गाँव के मुखिया कुछ युवकों के साथ बूढ़े बाबा के पास आये,और उनसे बोले बाबा! इस लगातार बारिश से नदी में बाढ़ आने का खतरा है. जब तक बारिश थम नही जाती तब तक के लिए आप हमारे साथ चलकर सुरक्षित स्थान पर चलिए." बूढ़े बाबा ने मुस्कुराकर हाथ जोड़ लिए,और फिर बाँसुरी बजाने लगे. बारिश अभी भी लगातार हो रही थी. मुखिया ने बाबा से पुनः विनम्रतापूर्वक आग्रह किया पर बूढ़े बाबा ने कोई खास प्रतिक्रिया नही दी. मुखिया जी ने कहा! "देखिए बाबा आप अगर हठी है तो मैं भी हठी हूँ."

आखिर बाबा ने मुखिया की बात मान ली और उनके साथ चल पड़े. कुछ ही देर में वो गाँव में पहुँच गए. पर लगातार बारिश के कारण नदी का जलस्तर इतना बढ़ा कि जल्द ही गाँव खाली कर दूसरे सुरक्षित स्थान पर सभी को जाना पड़ा.

दो-तीन दिन बाद बारिश थमी नदी का जलस्तर नीचे हुआ. बारिश में नहाई हुई प्रकृति ने अंगड़ाई ली. सूरज मुस्कुराते हुए आसमान में चमकने लगा. सड़के धुली हुई. पेड़ पौधे छोटे बच्चे की तरहः नहाए खड़े हुए थे.

बुढ़े बाबा ने जब सब देखा तो गाँव के मुखिया जी का आभार व्यक्त किया. मुखिया जी ने भी कहा! " बाबा आपके बारे में कोई नही जानता पर हम आप को कठिनाई में अकेला नहीं छोड़ना चाहते थे. इसलिये उस दिन हठ पूर्वक आपको मैं अपने साथ ले आया. हमारे गाँव में लोगों के साथ पशु-पक्षियों को भी आपकी बाँसुरी की तान सुनने की आदत हो गयी है. बूढ़े बाबा मन ही मन बुदबुदाए "वसुधैव कुटुम्बकम"

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

बबलू की उलझन

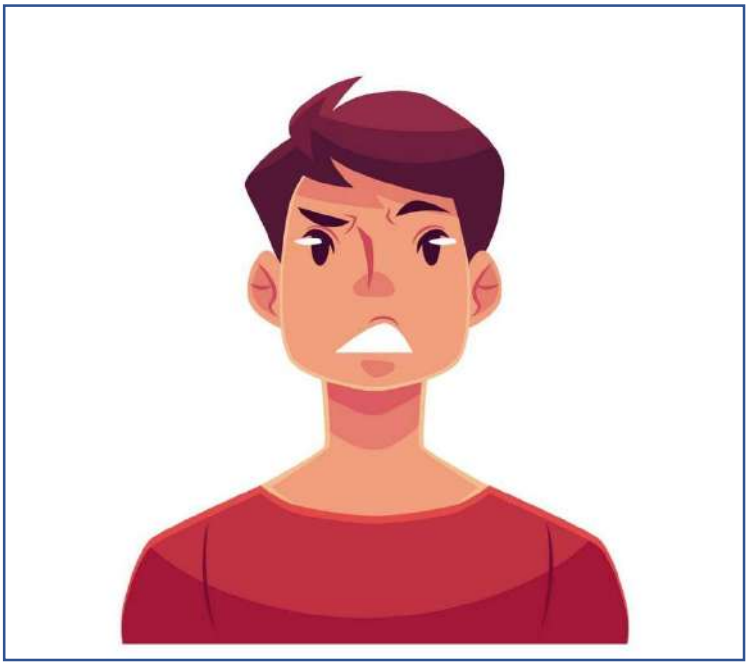

आजकल बबलू बहुत अनमना था. हमेशा गुमसुम रहता, किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता. पहले हमेशा किसी न किसी काम में लगा रहता था. कभी पढ़ाई, कभी ड्राइंग, कभी गमलों में लगे पौधों की देखभाल. पर आजकल न जाने उसे क्या हो गया था. तीन चार दिनों से उसकी दिनचर्या बदल गई थी. सुबह देर से सोकर उठना, खाने-पीने में भी कोई रुचि नहीं, न खेलकूद, न पढ़ाई, न ड्राइंग, न बागवानी. दिनभर सुस्त रहना. शुरुआत के एक दो दिनों तक मम्मी पापा ने बबलू के व्यवहार में आए इस परिवर्तन को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया, पर जब तीसरे और चौथे दिन भी बबलू की सुस्ती और अनमनापन खत्म नहीं हुआ तो उन्हें चिंता होने लगी. बबलू से पूछने पर भी कुछ खास समझ में नहीं आया कि आखिर इस उदासी का कारण क्या है.

अंततः चौथे दिन शाम को मम्मी पापा ने आपस में विचार-विमर्श किया और यह समझने की कोशिश की कि बबलू के व्यवहार में आए इस परिवर्तन का कारण क्या हो सकता है और इस स्थिति को कैसे ठीक किया जा सकता है?

देर तक आपस में विचार-विमर्श के बाद उन्हें यह तो समझ में आ गया कि कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण लंबे समय से बंद पड़े स्कूल और बाहर आना-जाना नहीं होने के कारण घर में रहते रहते बबलू ऊब गया है. पर इस स्थिति को कैसे संभाला जाए और कैसे बबलू को फिर से सक्रिय किया जाए इसका कोई निर्णय वे नहीं कर पा रहे थे.

आखिर में मम्मी ने एक उपाय सोच ही लिया. पर मम्मी- पापा दोनों ही असमंजस में थे कि इस उपाय का कोई लाभ होगा या नहीं? पर कुछ तो करना ही था, अतः उन्होंने यह तय किया कि इस उपाय को आजमा कर देख लिया जाए

इसके आगे क्या हुआ होगा? मम्मी पापा ने कौन सा उपाय किया होगा? क्या बबलू का व्यवहार पहले की तरह हो पाया? आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और हमें माह की 15 तारीख तक ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा पूरी की गई कहानियों में से चुनी गयी श्रेष्ठ कहानी किलोल के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी.

अच्छी संगत और अच्छी शिक्षा

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

आओ सुनाऊ बच्चो तुमको
दोस्ती की एक कहानी.
दो दोस्त थे एक गाँव में
एक दूध तो दूसरा पानी..

पानी सस्ता और था निर्मल
दूध महँगा और अमृत तुल्य.
पानी का कुछ कम था मोल
दूध बिकता था बहुमूल्य..

हुई दोस्ती दोनों में एक दिन,
मिल गया पानी दूध से एक दिन.
दूध ने दोस्ती का फर्ज निभाया,
संग में पानी का मोल बढ़ाया..

दोस्ती अच्छे लोगो से हो तो
कीमत बढ़जाती है,
संगत गलत लोगों से हो तो
*इज्ज़त घट जाती है..

यही सिखाती है बच्चो
कहानी दूध और पानी की.
अच्छी संगत और अच्छी शिक्षा
कीमत बढ़ाती है जिंदगानी की..

बेटियाँ

रचनाकार-टी. विजयलक्ष्मी

लहलहाती पल्लवों की,
शीतल छाँव हैं बेटियाँ.
पक्षियों के कलरव सी,
निश्छल स्वर हैं बेटियाँ.

वंशवृक्ष को विस्तार देती,
खुशनुमा कल है बेटियाँ.
शीतल, सरस कूप की,
मृदु-मृदु जल हैं बेटियाँ.

जिंदगी की खूबसूरत,
मधुर पल हैं बेटियाँ.
ईश्वर प्रदत्त अनमोल,
उपहार हैं बेटियाँ.

बेटी, बहन के रूप में,
देतीं है प्यार अपार,बेटियाँ.
पत्नी बनकर संवारती,
किसी का घर-संसार,बेटियाँ.

माँ,नानी,दादी के रूप में,
ममता का भंडार हैं,बेटियाँ.
पढ़ेंगी बेटियाँ,तभी तो,
नया भारत गढ़ेंगी बेटियाँ.

<u>जब देना हो दान</u>

रचनाकार- वंदिता शर्मा

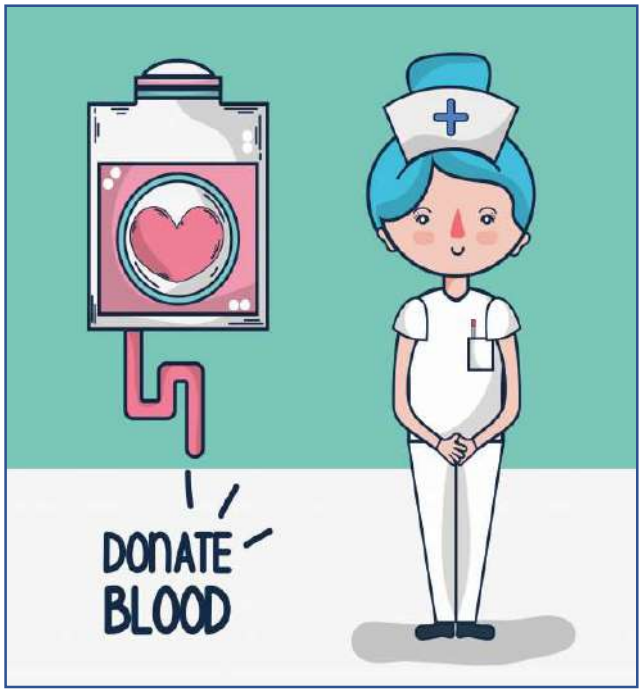

जब देना है कोई दान,
तो दे दो हर इंसान
रक्तदान महादान.

जो व्यक्ति रक्तदान करते,
हृदयरोग से कम परेशान रहते.
स्वस्थ व्यक्ति करे दान
सुखद जिंदगी का है सार
रक्तदान महादान है

हर व्यक्ति कर सकता है
चाहे महिला हो या पुरुष
सब कर दो रक्तदान
बना लो जीवन अपना खुशहाल
रक्तदान महादान.

रक्तदान करने से
मिलता है जीवनदान
वह व्यक्ति बन जाता है महान
जिसने किया है रक्तदान
मिलती है दुआयें उनको
जो देते हैं जीवनदान,
रक्तदान महादान

हमर जिला अट्ठाईस

रचनाकार-डॉ जागृति साहू

छत्तीसगढ़ के अट्ठाइस जिला
चलो देखबो माई पिला.

रइपुर में हे चम्पारण, नवा रइपुर म मंत्रालय भवन.
दुरुग म लोहा करखाना,
राजनांदगांव के बम्लेश्वरी, उड़न खटोला में जाना..

बालोद म विराजे सियादेवी माता,
कवर्धा भोरमदेव के दर्शन बर लगे रहिथे तांता..
धमतरी में लहरावत गंगरेल सागर बांध
मलजकुण्ड के झरना देखे कांकेर जान..

उदन्ती गरियाबंद के शोभा बढ़ाथे,

सरगुजा मैनपाट ह छत्तीसगढ़ के शिमला कहाथे..

सुकमा के सुघ्घर झरना संगी नाम हे दुधमा,
बिलासपुर के रतनपुर म बिराजे दाई महामाया..

अबूझमाड़ ल बुझे खातिर नारायणपुर जाना हे,
बीजापुर के राष्ट्रीय उद्यान इंद्रावती ल घुम के आना हे..

खारुन-शिवनाथ के संगम, जैसे बेमेतरा चारों धाम हे,
शंकर जी के मंदिर हावे, सोमनाथ जेकर नाव हे..

महासमुंद सिरपुर अउ खल्लारी माई के हे महानता,
चिरमिरी के कोइला ह बन गे, कोरिया के भाग्य विधाता..

कोरबा के मिनीमाता सूरजपूर के रक्सगंडा,
बलरामपुर के तातापानी डबकत रहिथे नई होवै कभू पानी ठंडा..

हरियर हरियर हावे मोर जशपुर के चाय बागान,
रायगढ़ के रामझरना मे, नहा के मिटा जाथे थकान..

जांजगीर के शबरी मंदिर रामलखन के सुरता कराथे,
गिरौदपुरी के जैतखाम ह, बलौदाबाजार के मान बढ़ाते..

कोंडागांव केशकाल घाटी, जिहां तेलिन माता विराजे हे,
मुंगेली मदकू द्वीप के छटा अब्बड़ सुघ्घर लागे हे..

दंतेश्वरी दाई के आशीष से, दंतेवाड़ा ह लहकत हे,
चित्रकोट झरना बस्तर म
पहाड़ी मैना चहकत हे..
देखव हमर छत्तीसगढ के जम्मो जिला अपन महनता ले दमकत हे..

छत्तीसगढ़ के अठ्ठाइस जिला,
चलो देखबो माई पिला.

रानी तितली

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

रंग बिरंगे पंखों वाली,
फूलों पर मंडराती हैं !
लेकर रस फूलों की वो
गीत खुशी की गाती हैं !!

नभ गगन पर उड़ती रहती,
बात फूलों से करती है !
पकड़ने को हाथ बढ़ाओ
फुर्र से वो उड़ जाती हैं !!

चुन-चुन रस फूलों का लेती,
मन है हर्षित और उमंग !
बागों की सौंदर्य बढ़ाती,
सुंदर,कोमल उसके अंग !!

सजधज कर- वो आती है,
सुंदर पंख फैलाती है !
बैठ फूलों पर रानी तितली
मंद मंद मुस्काती है !!

वन, उपवन में विचरण करती,
आखेटन से वो है डरती !
हम बच्चों की प्यारी तितली,
लगती सुंदर रानी तितली !!

बरसात

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

रिमझिम-रिमझिम करती आई
बरखा रानी साथ है आई!!

मिट्टी की सौंधी खुशबू से,
घर आँगन उपवन महकाई!!

गड़-गड़गड़-गड़ बादल गरजे,
कड-कड़,कड़-कड़ बिजली चमके !!

पानी बिन जब धरती तरसे,
घुमड़,घुमड़ तब बादल बरसे,

बूंदों की जब पड़ी फुहार,
बागों में छा गई बहार !!

मोर पपीहा कोयल गाए,
धरती में हरियाली छाए !!

भर गए सरवर,ताल तालाब,
उपवन मे खिल गए गुलाब !!

तितली अब आज़ाद हुई

रचनाकार-कुसुम अग्रवाल

कैद पड़ा था अंडे में, कैटरपिलर आज़ाद हुआ..
डाल-डाल पर घूम रहा कैटरपिलर आजाद हुआ.

कैटरपिलर था कितना भोला, खुद ने यह प्रबंध किया
क्रिसलिस रूपी जेल बनाई खुद को उसमें बंद किया.

रहा बहुत दिन बंद जेल में उसमें प्यूपा कहलाया
तोड़ जेल का दरवाजा इक दिन वह फिर बाहर आया

कैद पड़ा था क्रिसलिस में, प्यूपा अब आजाद हुआ
तितली बनकर उड़ चला, प्यूपा अब आजाद हुआ

आजादी है सबको प्यारी कहती है तितली प्यारी
आजादी है सबसे न्यारी कहती है तितली प्यारी.

हमें छोड़कर दूर घूमने जाती अब प्यारी तितली
रुको रुको में टाटा कह दूं जाओ तब प्यारी तितली.

मास्क के रंग

रचनाकार- टी. एन. ताम्रकार

क्यों रे कलमुँहे! कहाँ जा रहा है?

आवाज सुनकर सोनू ने मुड़कर देखा, मुरली काका उसकी और इशारा करके हाथ हिला रहे थे. सोनू ने पूछा - आपने मुझसे कुछ कहा काका? हाँ सोनू तुम्हीं से कह रहा हूँ, कहाँ जा रहे हो कलमुँहे? दोबारा कलमुँहा सुनकर सोनू ने चिढ़ते हुए मुरली काका से कहा- आपने मुझे कलमुँहा क्यों कहा?

मुरली काका ने सोनू से कहा - तुमने काला मास्क लगाया है तो कलमुँहा नहीं तो और क्या कहूँ?

सोनू ने सोचा, और लोग भी मुझे कलमुँहा कहकर चिढ़ाएँगे. ऐसा सोचकर वह वापस घर लौट गया.

कुछ देर बाद दूसरा मास्क पहनकर सोनू फिर बाहर निकला और अभी चार कदम ही गया था कि फिर पीछे से आवाज आई अरे ललमुँहे ! अब कहाँ जा रहे हो?

सोनू समझ गया कि ये मुरली काका ही हैं और मुझे चिढ़ा रहे हैं. क्योकि, सोनू के मास्क का रंग लाल था.

सोनू चुपचाप फिर वापस लौट गया.

कुछ देर बाद सोनू हरा मास्क लगाकर निकला और मुरली काका से बचने की कोशिश करते हुए जाने लगा. पर मुरली काका तो अपने घर, खिड़की के पास, पुस्तक पढ़ते हुए बैठे थे.

इस बार काका ने जोर से कहा, अरे सोनू ! बेशरम पत्ता मुँह में लपेटकर कहाँ जा रहे हो?

अब सोनू से सहन नहीं हुआ. सोनू मुरली काका के पास गया और चिढ़ते हुए कहा- काका आप मुझे बार-बार क्यों चिढ़ा रहे हो ?

मुरली काका बोले- बेटा, मैं तो यह पूछ रहा हूँ कि लॉक डाउन में कहाँ जा रहे हो ?

सोनू बोला, मै क्रिकेट खेलने जा रहा हूँ.

परन्तु सोनू लॉक डाउन... ? मुरली काका का वाक्य पूरा होने से पहले ही सोनू बोल पड़ा, मैंने मास्क तो लगाया है ना?

काका सोनू को समझाते हुए बोले - देखो सोनू, मैं तुम्हे इसीलिए चिढ़ा रहा हूँ कि तुम घर से मत निकलो. तुम्हें कोई आवश्यक कार्य है तो तुम मास्क लगाकर जरुर जा सकते हो.

मास्क इस संकट काल में स्वास्थ्य कार्यकर्ता, सुरक्षा कर्मियों, और आवश्यक सेवा कार्य कर रहे लोगो के लिए है. तुम्हें आवश्यक कार्य तो है नहीं. मास्क हमारी सुरक्षा करता है, लेकिन यदि हम घर में ही रहें तो मास्क लगाने की आवश्यकता नहीं है.

सोनू बोला - परन्तु काका ये लॉक डाउन में घर में घुसे-घुसे मैं बहुत बोर हो गया हूँ, इसलिए क्रिकेट खेलने जा रहा हूँ.

काका - देखो सोनू, अभी तुम्हारे सभी दोस्त अपने-अपने घर पर ही हैं इसलिए तुम भी घर पर ही रहो. कुछ दिनों में सब ठीक हो जायेगा तब स्कूल जाना, खेलने जाना पहले की तरह. 'जान है तो जहान है.'

सोनू को काका की बात समझ में आ गई, और वह हाँ में सर हिलाते हुए घर लौट गया.

वन है तो जल है, जल है तो जीवन

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

आओ बच्चो सीखे हम, चिड़ियों से कुछ ज्ञान.
ज्ञान और मेहनत से ही, जग में बनते सभी महान..

रात को कभी न घूमे चिड़िया और न ही कुछ खाते हैं.
अपने बच्चों को सही समय में सही ज्ञान सिखलाते है..

कभी नहीं खाते ज्यादा न कुछ साथ ले जाते हैं.
रोज सवेरे सबसे पहले, जग में ये जाग जाते हैं..

भोजन अपनी कभी न बदले, जीवन भर दिनचर्या में.
कठिन परिश्रम कर के खाते, जीवन भर दिनचर्या में..

प्रकृति से उतना ही लेते, जितना उन्हें जरूरत है.
हमे सिखाते ये परिंदे, कुदरत की क्या कीमत है..

अपना घर पर्यावरण को सदा अनुकूल बनाते हैं.
अपनी भाषा छोड़ कर न कोई भाषा अपनाते हैं.

यही ज्ञान इन पंछियों से, सदा सर्वदा हम भी सीखें.
प्रकृति से कर के प्यार, पेड़-पौधों को सदा हम सींचे..

वन है तो जल है, जल है तो जीवन है ये हमेशा तुम जानो.
मूल मंत्र है जीवन का तुम जल, वन संरक्षण को पहचानो..

ज्ञान की पाती- विश्व इमोजी दिवस

रचनाकार- चानी ऐरी

आज हम और आप अपने-अपने स्मार्टफोन में हर दिन सैकड़ों बार मैसेज में अलग अलग भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजी का इस्तेमाल करते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि 17 जुलाई का दिन विश्व ईमोजी डे के तौर पर मनाया जाता है?

आइए आज हम जानते हैं इमोजी के बारे में. क्या आप जानते हैं, यूनिकोड स्टैंडर्ड लिस्ट के मुताबिक अब तक 2666 इमोजियाँ बनाई जा चुकी हैं? यूनिकोड कंसोर्टियम इमोजी के लिए रूपरेखा तैयार करता है और तय करता है कि क्या इमोजी बननी चाहिए? वर्ल्ड इमोजी डे की शुरुआत करने वाले जेरेमी बर्ग, यूनिकोड कमेटी के सदस्य हैं. उनके मुताबिक हर साल सैकड़ों की तादाद में नई इमोजी के लिए आवेदन पत्र मिलते हैं.

कब हुई इमोजी की शुरुआत?

1990 के आखिरी दौर में इमोजी का इस्तेमाल शुरू हुआ. सबसे पहले एप्पल ने आईफोन के की-बोर्ड में इसको शामिल किया. पहली बार इमोजी डे 2014 में मनाया गया.

17 जुलाई का दिन इमोजी डे के लिए चुना गया. जेरेमी बर्ग इमोजी पर आधारित सर्च इंजन इमोजिपीडिया चलाते हैं.

वक्त के साथ-साथ कंपनियाँ उपभोक्ताओं को लुभाने के लिए नई इमोजी पर काम करती हैं, यही कारण है कि हाल ही में इमोजी में अलग-अलग कलर टोन को जोड़ा गया है. नेताओं, भगवान, फिल्मस्टार्स अलग अवग भाषाओ में ईमोजीस आ रही हैं. आज शालाओं में बच्चों के कामो को भी इमोजीस से जोड कर बेसिक और माध्यमिक शिक्षा में भी इसे जोडा जा रहा है. बच्चो की ग्रेडिंग व स्तर हेतु इमोजी का प्रचलन जोरों पर है.

एकता का बल

रचनाकार- युगांतर यादव, कक्षा पांचवी, सरस्वती शिशु मंदिर सेतगंगा, मुंगेली

एक घने जंगल में एक भालू रहता था एक दिन भालू अपने दोस्तों हाथी, खरगोश और बंदर के साथ खेल रहा था. बहुत देर तक खेलते-खेलते सभी थक गए. बन्दर और खरगोश को बहुत प्यास लगने लगी थी. वे दोनों पानी पीने नदी किनारे गए. जब वे पानी पी रहे थे तभी पानी में एक मगरमच्छ निकल आया और उसने खरगोश को पकड़ने की कोशिश की पर खरगोश किसी तरह बच गया. अचानक आए मगरमच्छ को देखकर बन्दर और खरगोश डरकर चिल्लाने लगे. उन दोनों के चिल्लाने की आवाज सुनकर हाथी और भालू दौड़कर वहाँ पर आ गए. फिर सबने मिलकर मगरमछ से मुकाबला किया और नतीजा ये हुआ कि मगरमच्छ वहाँ से चला गया. भालू, हाथी, बन्दर और खरगोश बहुत खुश थे. इसलिए कहा जाता है कि एकता में बहुत शक्ति होती है. एक अकेला कुछ नहीं कर सकता चाहे वह कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो.

हरियागे धरती के अचरा

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

आगे सावन के पहली फुहार,
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा,

फुलगे कांसी मोगरा अउ कचनार,
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा,

राउत के बंसी बाजत हवय हरियर पियर खार म.
जथे बिहनिया नागर धर किसान खेती खार म..
बिहनिया सुरूज संग किसान होवत हे तइयार
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा,

भारत भुइयाँ म छतीसगढ़ ल कहाथे धान कटोरा.
धान पान सब होते संगी सावन पानी के निहोरा.
सुवा ददरिया कर्मा गाथे हमर गाँव के बनिहार
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा,

किसान के सब रोजी रोटी हवय धान के किसानी म.
ये किसानी होथे भैया बरखा के पानी म.
पानी ले जिन्दगानी हवै कहिथे सब सियान..
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा,
आगे सावन के पहली फुहार,
हरियागे धरती के अचरा,
हरियागे भुइयां के अचरा

<u>लालच के फल बुरा होथें</u>

रचनाकार- हिमाँशु, कक्षा ग्यारहवीं, शा.उ.मा.वि. पहंडोर, पाटन, दुर्ग

सुनारी गाँव के अजब कहानी हे, सुनारी गाँव म एक गप्पु नाव के आदमी राहत रहिस. जेहर अब्बड़ लालची रहिस.गाँव म जे घर म शादी-बिहाव होए तिन्हा ओहा अब्बड़ खाए.ओखर खवई ल देख के जम्मो गाँव वाले मन बक खा जाय. गप्पु के लालचीपन ल देख के गाँव वाले मन ओला कुछू तिहार म नेवता देवेच ल बंद कर दिस. गप्पु हर अब गाँव छोड़ के शहर चल दिस उहा ओखर कोनो जान पहचान के नई रहिस, अब गप्पु ह काम करे बर हलवाई दुकान म गिस. दुकान म गप्पु ल काम मिलगे. गप्पु ह काम कम अउ खाए जादा.ओखर ऐ हरकत ल देख के दुकानदार ह ओला काम ले निकाल दिस. अब ओला काखरो करा काम नई मिलत राहय.गप्पु ल अपन किये के पछतावा होइस, अउ ओहर वापस अपन गाँव जाके सब करा माफी माँग के अपन खुद दुकान खोल के काम सुरू करिस अउ सुग्घर जिनगी बिताइस.

बूँदें यहाँ- वहाँ थीं बिखरी, किया इकट्ठा ले उलटी छतरी

रचनाकार- रजनी शर्मा

पर्यावरण बचाने का संदेश देने हेतु मायाराम सुरजन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चौबे कॉलोनी की शिक्षिका श्रीमती रजनी शर्मा ने छात्राओं को एक सुझाव दिया कि क्यों ना हम पर्यावरण दिवस को हम अपना संदेश देने के लिए एक गुड़िया को माध्यम बनाएँ. और फिर यह नवीन प्रयोग किया गया गुड़िया की पोशाक भी पत्तों से बनाई गई. यह एक स्पष्ट संकेत है कि पर्यावरण से मिले संसाधन ही हमारा सर्वोत्तम पहनावा होना चाहिए. गुड़िया के एक हाथ में पृथ्वी का मॉडल है. जो उस संकल्प का प्रतीक है कि हमें पृथ्वी के पर्यावरण को बचाना है. प्रश्न उठता है कि कैसे? तो इसके प्रतीक रूप में छतरी का प्रयोग किया गया. वह भी उलटी की हुई छतरी. यह छतरी सभी घरों, भवनों की छत का प्रतीक है. जहां वर्षा का जल इकट्ठा होगा और पुनः पृथ्वी में संरक्षित किया जा सकता है. इस गुड़िया को ऐसे पेड़ पर रखा गया है जो सबसे ज्यादा ऑक्सीजन देता है.

ग्रीष्मकालीन अवकाश में छात्राओं की सकारात्मकता बनाए रखने के लिए यह नवीन प्रयोग किया गया जिसे कक्षा दसवीं की निशा बंजारे ने एक गुड़िया के मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया.

चश्मा

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

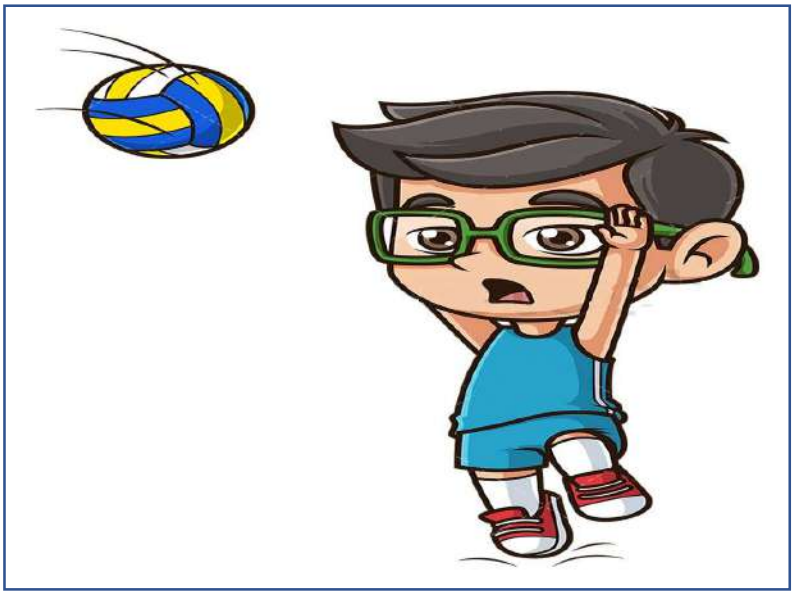

दीपक अपने दोस्तों के साथ मैदान में क्रिकेट खेल रहा था. तभी पास ही रहने वाला मास्टर जी का लड़का कुशांक भी अपने दोस्त मनोज के साथ मैदान में आ गया. मनोज की ऑखें कमजोर थीं उसे बिना चश्मे के दिखाई नही देता था..कुशांक भी दीपक के साथ क्रिकेट खेलने लगा. कुशांक का खेल दीपक को बहुत अच्छा लगा और कुशांक को अपनी टीम में शामिल कर लिया पर मनोज को चश्मा लगाने के कारण मना कर दिया. बाद में कुशांक ने, मनोज को भी टीम मे रखने के लिए दीपक को सहमत करा लिया. अब हर सुबह सभी साथ मे क्रिकेट खेलने लगे. दीपक और उसके अन्य साथी मनोज को चश्मे के कारण चिढ़ाने लगे और उन्हे कंडील कह कर बुलाने लगे थे. रोज-रोज यह ताना सुनकर मनोज को बुरा लगा और उसने उन लोगों के साथ क्रिकेट खेलना बंद कर दिया.

एक दिन क्रिकेट खेलते हुए तेज रफ्तार आती हुइ गेंद से दीपक की आँख में चोट लग गई. दीपक को धुंधला दिखाई देने लगा. डॉक्टर ने चश्मा लगाने की सलाह दी. अब दीपक भी बिना चश्मे के देख नही पाता था. अब दीपक को मनोज याद आने लगा था. मुझे मनोज को नही चिढाना चाहिए था. दीपक सोचने लगा कि अब मेरे दोस्त मुझे भी चिढ़ाएँगे, मुझे भी कंडील कहकर बुलायेंगे. दीपक को अपनी गलती का एहसास हो गया था.

नटखट नन्ही

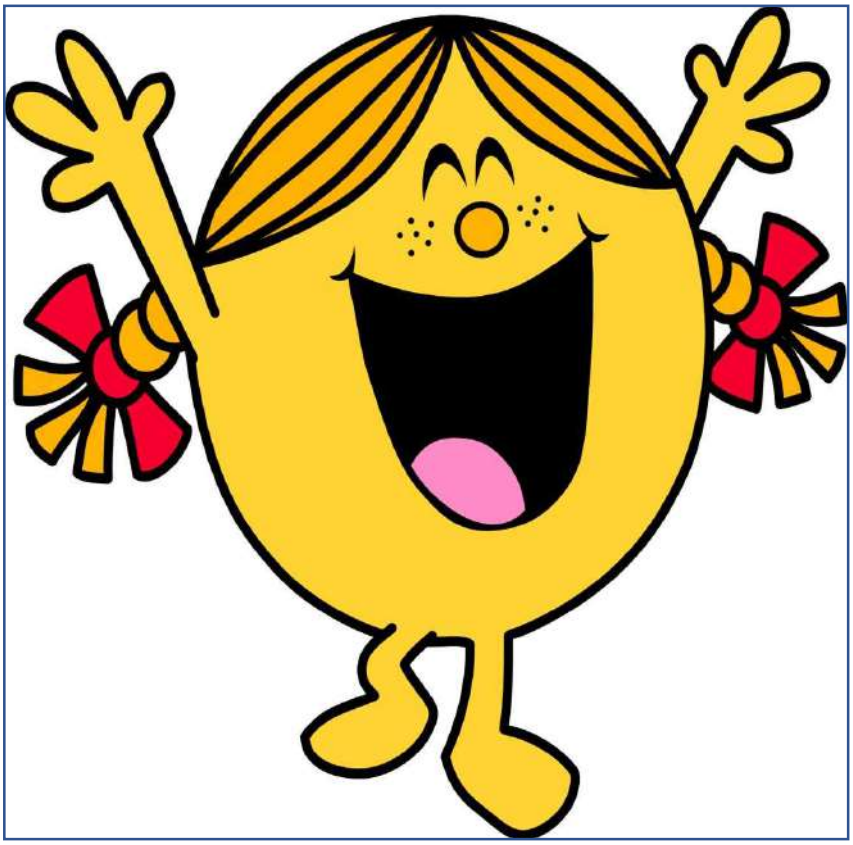

1. टीचर: नन्ही बताओ, अगर रात को मच्छर काटे तो क्या करना चाहिए?
   नन्ही: "चुपचाप खुजा कर सो जाना चाहिए.
   क्योंकि हम कोई सुपरमैन तो हैं नहीं, जो मच्छर से सॉरी बुलवा लें.

2. एक व्यक्ति ने नन्ही से पूछा: बेटा क्या यह गेंद तुम्हारी है?
   नन्ही: पहले आप बताइए कि क्या इस गेंद से कोई शीशा टूटा है?
   व्यक्ति: नहीं तो.
   नन्ही: तब तो यह गेंद मेरी ही है.

3. नन्ही: मम्मी आज टीचर ने मुझे पनिशमेंट दिया.
   मम्मी: जरूर तुमने कोई शरारत की होगी. बताओ क्या किया था तुमने?
   नन्ही: मैंने कुछ नहीं किया मम्मी; मैं तो कक्षा में चुपचाप सो रही थी.

4. नन्ही: पिताजी मुझे दस रुपये दे दीजिए.
   पिताजी: पर तुम रुपयों का क्या करोगी?
   नन्ही: बाहर एक आदमी धूप में खड़ा है, उसे दूँगी.
   पिताजी: पर वह कौन है और क्या कह रहा है?
   नन्ही: वह कह रहा है कि आइसक्रीम ले लो.

5. मम्मी: नन्ही मैंने तुम्हें फूल लाने को कहा था. तुम पूरी डाल क्यों तोड़ लाईं?
   नन्ही: माँ, वहाँ बोर्ड पर लिखा हुआ था कि फूल तोड़ना मना है; इसलिए.

मिटकू

रचनाकार- सुरेखा नवरत्न

दूर पहाड़ी के पास एक छोटे से गाँव में, मिटकू और उसकी माँ रहते थे. मिटकू के पिताजी बचपन में ही चल बसे थे. मेहनत मजदूरी करके माँ, मिटकू का लालन पालन करती थी. दोनों ही एक दूसरे के एकमात्र सहारा थे. माँ मिटकू को कोई काम नहीं करने देती थीं. बड़े लाड प्यार से उसकी देखभाल करती थीं.

हर चीज उसके कहने के पहले ही माँ उसे उपलब्ध करा देती थी. माँ काम करने जाती और मिटकू घर पर रहता था. इस छोटे से आदिवासियों के गाँव में स्कूल तो था ही नहीं. इसलिए मिटकू पढ़ नहीं पाया. माँ मजदूरी करने जाती और किसी दिन मजदूरी न मिलने पर लकड़ियाँ चुनने जंगल जाती थी. जंगल जाने से पहले माँ मिटकू के लिए खाना बनाकर रख देती थी. मिटकू उसे खा लिया करता था. एक दिन मिटकू ने माँ से कहा, माँ तुम दिन भर घर से बाहर रहती हो. मैं सुबह से शाम तक घर पर अकेला रहकर ऊब जाता हूँ. तुम मुझे साथ लेकर जाती नहीं हो. आज मैं भी आसपास के जंगल जाऊँगा.

माँ ने कहा -जंगल में बहुत खतरा होता है, कई प्रकार के जीव-जंतुओं और साँप-बिच्छुओं का डर रहता है तुम्हें जो चाहिए बता दो, मैं शाम को ले आऊँगी. मिटकू नहीं मान रहा था, बार-बार वह माँ से जिद करने लगा. मिटकू के जिद करने पर माँ ने कहा-ठीक है तुम इतनी जिद

कर रहे हो तो, मैं जिधर कहूँगी उधर ही जाना. माँ ने कहा- बेटा उत्तर, दक्षिण और पूर्व दिशा में से किसी भी दिशा में आसपास ही चले जाना. लेकिन पश्चिम दिशा में भूल कर भी मत जाना. कहीं भी जाओगे तो ज्यादा दूर मत जाना जल्दी घर लौट आना.

ऐसा कहकर माँ जंगल चली गई. माँ के जाते ही मिटकू सोचा, माँ ने कहा है पश्चिम दिशा में कभी मत जाना ऐसा क्या है पश्चिम दिशा में, चलकर तो देखूँ. क्या खतरा है पश्चिम में? उसे माँ ने जाने के लिए मना किया था वह उसी दिशा में चला गया.

रास्ते में उसे बहुत सारे केले के पेड़ मिले. मिटकू ने जी भरकर केले खाए, फिर वह और आगे जंगल में गया तो उसे आम का बगीचा मिला.

मिटकू ने सोचा कितने मीठे आम हैं, माँ खुद इधर आती होंगी और मुझे आने से मना किया है. वह एक आम के पेड़ पर चढ़ गया. उसनें कई आम तोड़ कर खाये. फिर नीचे आम की छाँव में आराम करने लगा. पेड़ की ठंडी छाँव में मिटकू सो गया.

कुछ देर बाद मिटकू को उसका शरीर बहुत भारी लगने लगा, जैसे कोई बड़ा सा पत्थर किसी ने उसके ऊपर रख दिया हो. मिटकू ने हड़बड़ाकर ऑंखें खोलीं. एक बड़ा सा अजगर उसके ऊपर कुंडली मार कर बैठा था. साक्षात् मौत को देखकर मिटकू को माँ की याद आने लगी, उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था. मारे डरके उसके हाथ पाँव फूलने लगे. कुछ देर वह चुपचाप लेटा रहा फिर, अजगर को कसकर पकड़ा और झटक कर फेंक दिया. जान बचा कर मिटकू घर की ओर भागा. घर में माँ आज जल्दी आ गई थी. वह दौड़ कर माँ से लिपट गया और उस दिन के बाद जहाँ उसे माँ जाने के लिए कहती है, मिटकू उधर ही जाता है.

मामा शहर घुमाएँगे

रचनाकार- राजेन्द्र श्रीवास्तव

जब गर्मी की छुट्टी आई
मम्मी ने योजना बनाई.
पिंकी से बोलीं- 'इस साल
सभी चलेंगे नैनीताल.'

मौसम वहाँ सुहाना है,
गर्मी से बच जाएँगे.
पास वहीं दादा-दादी
कुछ दिन वहाँ बिताएँगे.

पिंकी बिटिया से मिलकर
दादा खुश हो जाएँगे.
दादी गीत सुनाएगीं
चाचा शहर घुमाएँगे.

पिंकी बोली-'फिर हम सब
नाना के घर जाएँगे.
नानी के किस्से होंगे
मामा शहर घुमाएँगे.

प्रेमचंद की वापसी

रचनाकार- दलजीत कौर

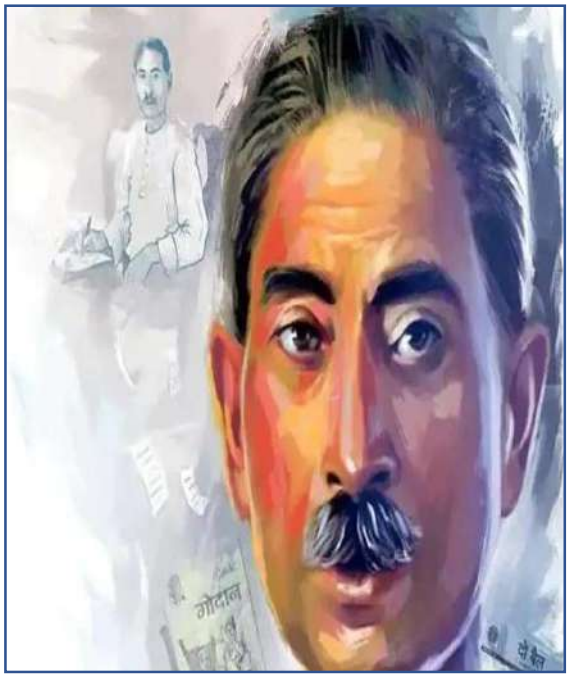

स्वर्ग में उथल-पुथल मची थी. पहली बार ऐसा हुआ था कि स्वर्ग में किसी ने धरना दिया हो, किसी ने अन्नजल त्याग दिया हो. यमदूत ने आकर यमराज को बताया -"एक व्यक्ति स्वर्ग छोड़ पृथ्वी पर जाना चाहता है.

यमराज ने हैरान हो कर पूछा -"स्वर्ग छोड़ कर कौन पृथ्वी पर जाना चाहता है ? नरक से जाना चाहे तो बात समझ में आती है."

यमदूत ने नाम बताया - "जी !महापुरुष प्रेमचंद."

यमराज अपने सिंहासन से उठ खड़े हुए -"क्या, मुंशी प्रेमचंद?

लेखक प्रेमचंद? वही प्रेमचंद जिनकी अभी-अभी जयंती मनाई गई पृथ्वी पर?"

"जी हुजूर." यमदूत ने हाँ में सिर हिलाया.

मगर यमराज को यक़ीन नहीं हो रहा था. उन्होंने फिर पूछा "- कफ़न, पूस की रात, गोदान, निर्मला के लेखक प्रेमचंद?

जी! जी. यमदूत ने फिर सिर हिलाया.

यमराज सोच में पड़ गए और बुदबुदाने लगे -"वह व्यक्ति जो मरने के इतने वर्ष बाद भी पृथ्वी पर लोगों के दिलों में ज़िंदा है. जिसका लिखा आज भी स्कूल-कालेज में पढ़ाया जाता हैं. वह स्वर्ग छोड़ कर क्यों जाना चाहता है?

यमराज ने कड़क आवाज़ में पूछा -"क्या स्वर्ग में उनका ध्यान अच्छे से नहीं रखा जा रहा?

यमदूत ने आदरपूर्वक उत्तर दिया "नहीं महाराज! उनका तो विशेष ध्यान रखा जाता है. सभी उनका सम्मान करते हैं."

यमदूत ने आगे क़िस्सा सुनाया -"वे कई दिन से जाने की बात कर रहे हैं. मगर लेखक विभाग के चेयरमैन उन्हें समझाते रहे. पर आज तो उन्होंने हद कर दी. उन्होंने अनशन शुरू कर दिया और धरने पर बैठ गए हैं."

"क्या ??" यमराज के पाँव तले से जैसे आसमान खिसक गया हो. उन्होंने आदेश दिया -"जल्दी मोसंबी का रस लेकर आओ." उन्होंने देख रखा था कि जब भी कोई नेता अनशन पर बैठता है तो मंत्री जी उसका अनशन मोसंबी के रस से ही तुड़वाते हैं. वे बेचारे समझ रहे थे कि यह कोई प्रथा है. कहीं दूध से अनशन तुड़वा कर कोई अपशगुन न हो जाए. वे तुरंत प्रेमचंद के पास पहुँचे. सभी सुविधाओं का निरीक्षण किया और बड़े प्यार से प्रेमचंद जी से पूछा -"क्या हुआ? आपको पृथ्वी की याद आ गई ? पृथ्वी पर तो आपका जीवन बड़े कष्ट में बीता था. यहाँ तो आपको सभी सुविधाएँ प्राप्त हैं. फिर आप पृथ्वी पर जाने की बात क्यों कर रहे हैं?"

प्रेमचंद ने यमराज को प्रणाम किया और कहा -"जी !इसीलिए तो जाना चाहता हूँ कि मेरा जीवन पृथ्वी पर कष्टमय व ग़रीबी में बीता. आज के लेखकों जैसा जीवन मैं भी जीना चाहता हूँ. मेरे मरने के बाद मुझे पहचान मिली. इतना सम्मान मिला.पर जीते जी क्या मिला? मुझे जीते जी सम्मान प्राप्त करना है. मुझे पृथ्वी पर वापस भेजिए."

यमराज ने प्यार से कहा -"आप यह जूस पीजिए. अनशन तोड़िए. हम यहीं आपका सम्मान करवा देते हैं."

प्रेमचंद आवेश में आ गए -"यहाँ सम्मान कौन देखेगा? मुझे तो पृथ्वी पर लेखकों के बीच सम्मान करवाना है. चमचमाते हुए सम्मान चिन्ह लेने हैं. कंधों पर शाल डलवाना है. फूल मालाएँ पहननी हैं. पुष्पगुच्छ से स्वागत करवाना है. मंच पर स्तुतिगान करवाना है. जब भी

आजकल के कवियों-लेखकों को देखता हूँ, यह सब करते, तो मुझे ईर्ष्या होती है. मुझे मानसिक कष्ट होता है. आप नहीं समझते."

यमराज कुछ कहते इससे पहले ही प्रेमचंद ने फिर कहा -"दस-पंद्रह अख़बारों में इनके सम्मान के चर्चे छपते हैं. बड़ी-बड़ी तस्वीरें छपती हैं.फिर ये लोग फ़ेसबुक पर, व्हाट्स ऐप पर ये सब तस्वीरें डालते हैं. जहाँ देखो वहीं ये छाए रहते हैं. मुझे कुछ नहीं सुनना. बस! मुझे पृथ्वी पर जाना है." प्रेमचंद ने अपनी बात दो टूक कह दी.

यमराज उन्हें अपने कक्ष में ले आए और उन्हें समझाने के लिए नारद मुनि को भी बुला लिया. नारद मुनि का रोज़ का आना-जाना है पृथ्वी पर.वे पृथ्वी के सारे भेद जानते हैं. उन्होंने प्रेमचंद को समझाने के लिए राज़ की बात बताई -"ये कवि-लेखक सम्मान, फूल मालाएँ,शाल पहनने के लिए जुगाड़ लगाते हैं, अन्यथा तुम्हारे बाद तुम्हारे जैसा लेखक कोई पृथ्वी पर पैदा नहीं हुआ." प्रेमचंद ने विस्म्यपूर्वक नारद मुनि की ओर देखा और पूछा -जुगाड़?

क्या जुगाड़ ??

अब स्वर्ग में तो जुगाड़ है नहीं.इसलिए यमराज ने नारद जी से कहा कि वे प्रेमचंद को अपने साथ पृथ्वी पर ले जाएँ और जुगाड़ का यथार्थ दिखाकर लाएँ. उन्हें यह डर भी था कि कहीं प्रेमचंद पृथ्वी पर ही न रह जाएँ. उन्होंने नारद जी को इस बारे में आगाह भी किया.

नारद जी, प्रेमचंद को लेकर पृथ्वी की ओर चल पड़े. वे सबसे पहले उस संस्थान में पहुँचे, जहाँ लेखकों की पुस्तकों को ईनाम दिए जाते हैं.प्रेमचंद ने अपनी लेटेस्ट किताब दिखाई जो उन्होंने स्वर्ग में छपवाई थी. प्रबन्धक ने उसे रिजेक्ट कर दिया, क्योंकि उस पर स्वर्ग का पता था और वे केवल अपने शहर के लेखकों को ही ईनाम देते हैं. किसी बड़े व्यक्ति की सिफ़ारिश भी नहीं थी. प्रेमचंद को पता चला, बड़े लोगों से साठ-गाँठ होना बहुत ज़रूरी है.प्रेमचंद जुगाड़ की प्रतीक्षा करने लगे.नारद जी ने जुगाड़ लगाना चाहा पर लगा नहीं. प्रेमचंद निराश हो गए.नारद जी ने उन्हें समझाया -"आप उदास न हों. पृथ्वी पर हज़ारों संस्थाएँ हैं. हर चौथा लेखक अपनी संस्था खोल कर बैठा है और अध्यक्ष बनकर वाहवाही लूट रहा है.°

वे एक अन्य संस्था की कार्यकारिणी कमेटी से मिलने पहुँचे. नारद जी ने बताया -"ये महान लेखक हैं. इन्हें सम्मानित करवाना है. पूरे शहर में इनका चर्चा होना चाहिए."

उन्होंने फूलमाला, पुष्पगुच्छ, शाल, स्मृति चिन्ह, चाय-बिस्किट और अपना किराया जोड़ कर सारा हिसाब उनके हाथ में पकड़ा दिया. पर पैसे न नारद जी के पास थे और न प्रेमचंद जी के पास.

बाहर निकलते ही प्रेमचंद ने प्रश्न किया -“हम क्या सम्मान ख़रीदेंगे?मुझे नहीं चाहिए ऐसा सम्मान.”

नारद जी एक और संस्था को जानते थे. वे प्रेमचंद को वहाँ ले गए. उनके पास दो-तीन उद्योगपति भी थे जो सारा प्रबन्ध कर देते थे. उन्होंने पूछा -“आप विदेश से आए हैं?”

“नहीं.” नारद जी ने सिर हिलाया. “क्या किसी उच्च पद पर हैं या रिटायर हुए हैं?”

“जी नहीं !” नारद जी ने फिर कहा.

किसी नेता, मंत्री,, अध्यक्ष के संबंधी हो?

उन्होंने बताया -“केवल लेखक होने से कुछ नहीं होगा. यदि हमें आपसे कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा तो हम आपको सम्मानित क्यों करेंगे?”

प्रेमचंद की समझ में बात आ गई कि लेखक की प्रतिभा को कोई सम्मानित नहीं करता. ये सब जुगाड़ हैं जिससे लेखक सम्मानित होते हैं.प्रेमचंद ने पूछा-“क्या आप क़लम को सम्मानित नहीं करते ?

उन्होंने ऐसे देखा, जैसे किसी अबोध बालक को देख रहे हों और कहा -“जी !जब कभी हमें दिखाना हो कि हम निष्पक्ष रहकर सम्मानित करते हैं.केवल तब !”

प्रेमचंद ने नारद जी से लौटने को कहा. वापस स्वर्ग पहुँच कर प्रेमचंद सीधे अपने कक्ष में चले गए. द्वारपाल ने आकर यमराज को बताया -“प्रेमचंद ने संन्यास ले लिया है और अपनी लेखनी को भी विराम दे दिया है.”

यमराज निश्चिन्त हो गए कि प्रेमचंद की वापसी हो गई.

मौसम कुछ उदास है

रचनाकार- सरिता लहरे 'माही'

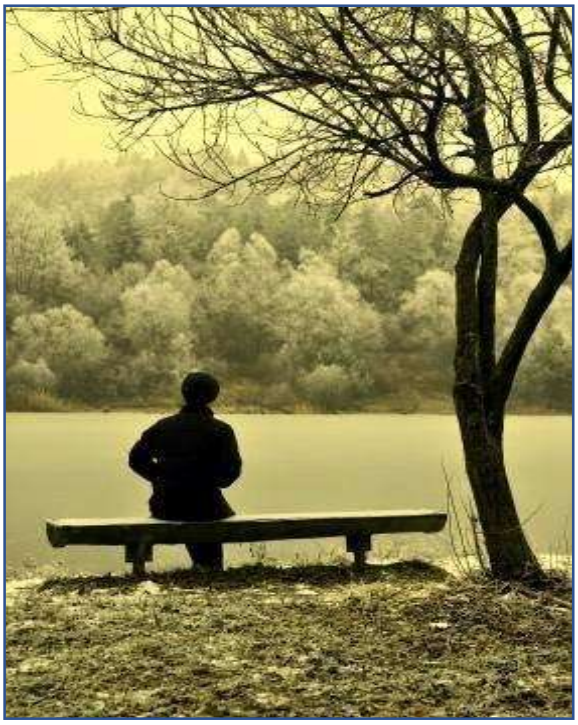

आज ये मौसम कुछ उदास है,
बादलों से भी बाते नहीं कर रही
न जाने क्यों...

पंछी ने भी पूछा पर,
कुछ बोले बिन ही रह गई.

हवाएँ भी रुख मोड़ गए,
पत्ते-से-पत्ते कुछ बोल गए.

फिर भी न मानी रूठी रही,
उदास मन से बैठी रही.

आज मौसम कुछ बेईमान
सा लगता है, न जाने क्यों

नदियाँ, झरने सब चुप लगते,
तितली, भौरें छुप के बैठे.

आज मौसम उदास सा लगता है,
कुछ कहकर भी कुछ ना कहता है.
न जाने क्यों..

काम बनाम आराम

रचनाकार- सीमा यादव

काम और आराम दोनों परस्पर विरोधी शब्द हैं. ये दोनों शब्द नदी के दो किनारों की तरह एक दूसरे के विपरीत हैं. पहला शब्द हमें हमेशा चलने की प्रेरणा देता है, सक्रियता की पहचान है तो दूसरा शब्द आराम स्थिरता देता है और हमें निष्क्रिय बनाता है. जिस प्रकार एक थका हुआ मन कभी कुछ नया सृजन नहीं कर सकता उसी प्रकार सदैव कार्य में व्यस्त रहने वाला व्यक्ति कभी उदास नहीं हो सकता. यूँ तो आराम हमें संतुलन प्रदान करता है और काम का बोझ हल्का करने की औषधि की भूमिका निभाता है; किन्तु आराम से मन में उदासीनता छा जाती है, मन में नयापन नहीं आ पाता जिससे सृजनकारी कार्य नहीं हो पाते. जीवन में इन दोनों का अपना-अपना महत्वपूर्ण स्थान है. इन दोनों में से किसी एक की उपेक्षा करना या फिर किसी एक को बहुत अधिक महत्व देना हमारी बहुत बड़ी भूल होगी. यदि इनका सदुपयोग न किया जाए,तो यह बात निश्चित ही प्रकृति प्रदत्त उपहारों का उपहास करने जैसा होगा. ये दोनों शब्द हमारे जीवन को नया आयाम देते हुए हमें सफलता की मंजिल तक पहुँचाने में सहायक होते हैं.

"अति सर्वत्र वर्जयेत" अर्थात अति की सभी जगह मनाही है. अति का अंत होना स्वाभाविक है. अत्यधिक काम के कारण हम बीमारियों से ग्रसित हो सकते हैं,वहीं सीमा से अधिक आराम हमें आलसी और प्रमादी बना देता है. अब प्रश्न उठता है कि हम ऐसा क्या करें, जिससे काम और आराम के मध्य संतुलन बना रहे? इस प्रश्न का सरल उत्तर होगा कि हम कार्यों में फेरबदल करें. "कार्यान्तर ही विश्राम है" ये योग गुरु स्वामी रामदेव की एक महत्वपूर्ण उक्ति है.

भगवान श्रीकृष्ण ने भी श्रीमदभगवद्गीता में यही संदेश दिया है कि निष्काम भाव से कर्म करते रहें अर्थात आसक्ति रहित होकर काम करते रहें.भगवान श्रीकृष्ण इसीलिए योगेश्वर कहलाते हैं. वे कर्म योग की प्रधानता को अच्छी तरह से परिभाषित करते हुए धनुर्धारी अर्जुन के माध्यम से जन-जन तक संदेश पहुँचाते हैं. ये श्लोक इस प्रकार हैं

"कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन.
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि."

अर्थात हम सिर्फ कर्म के अधिकारी हैं, फल के नहीं.

आइये हम भी अपने महान कर्तव्यों की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें.

बरसो रे बदरा

रचनाकार- श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

बदरा बरसो रे,
बरसो रे बदरा.

जलती तपती धरती प्यासी,
प्यासे प्यासे खेत.
नदी सूख कर हुई नदारद,
दिखती केवल रेत.

पंछी तड़प रहे हैं प्यासे,
बदरा बरसो रे!
बरसो रे बदरा.

सूख गईं हैं बेल लताएं,
सूख गये हैं फूल.
हरे भरे तरुवर भी सूखे,
लगते आज बबूल.

बेजुबान पशु प्यासे ब्याकुल,
अब तो हरसो रे!
बदरा बरसो रे!
बरसो रे बदरा.

उमस भरा मौसम दुखदायी,
जीना मुश्किल है.
गरमी धूप पसीना चिप-चिप,
बारिश ही हल है.

सांस रुकी दम घुटता जैसे,
बरसो गरजो रे!
बदरा बरसो रे!
बरसो रे बदरा.

मुट्ठी में जीवन

रचनाकार- डॉ. रंजना जायसवाल

एक छोटे से शहर में एक लड़का रहता था, मनु. मनु बहुत शरारती और उद्दण्ड स्वभाव का था. गली के कुत्तों को पत्थर मारना, गाय पर पानी फेंक देना उसका रोज का काम था. रोज ही कोई न कोई उसकी शिकायत लेकर घर आता रहता था. माँ ने कभी प्यार से तो कभी डाँटकर उसे समझाने की बहुत कोशिश की पर मनु...

"मनु!...किसी को इस तरह से तंग करना ठीक नहीं, भगवान सब देख रहे हैं."

"ऐसा कुछ नहीं है माँ!!..तुम भी न."

"मनु!.. सोचो उनको कितनी तकलीफ होती होगी, जानते हो भगवान से कुछ नहीं छिपता.वो आज नहीं तो कल दण्ड अवश्य जरूर देंगे."

पर मनु पर इन सब बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता. अब तो मोहल्ले के लोग भी अपने बच्चों को मनु के साथ खेलने नहीं देते थे कि मनु की संगति में उनके बच्चे भी बिगड़ न जायें.

अब मनु अकेला पड़ गया. मनु की माँ सब कुछ देख रही थी पर वो भी क्या करती. अखबारों और टी.वी. पर एक ही खबर चल रही थी. कोरोना वायरस के कारण सब लोग बहुत परेशान थे. कोई घर से बाहर नहीं निकलता था, मनु बार-बार घर के दरवाजे तक आता पर वहाँ कोई न होता.

मनु दिन भर टी.वी. देखकर बोर हो गया था. पढ़ाई करने के लिए भी कुछ न था.

"मनु, जरा चौके की अलमारी से पीला डिब्बा निकालकर लाओ."

" माँ! आप खुद ले लो न."

माँ ने मनु को घूरकर देखा,मनु समझ गया था कि अगर अब उसने टालमटोल की तो... वो मन मारकर उठा रसोईघर से पीला डिब्बा ले आया.

"जानते हो मनु इस डिब्बे में क्या है."

"क्या है माँ?" मनु ने उत्सुकता से पूछा...

"तुम खुद ही देख लो."

मनु ने अपना हाथ डिब्बे में डाला, धनिया के दाने देख मनु का चेहरा उतर गया.

"क्या माँ!..आप भी न, ये कैसा मजाक है."

माँ मनु को हाथ पकड़कर बगीचे में ले गईं.

"मनु!...चल तुझे एक जादू सिखाती हूँ."

"पर माँ ये तो धनिया है."

" मनु, तुम्हें ऐसा लगता है कि ये सिर्फ धनिया के दाने हैं पर तुम्हारे हाथों में तो किसी को जीवन देने का जादू है."

मनु आश्चर्य से माँ को देख रहा था.

"आओ तुम्हें जादू दिखाती हूँ."

माँ ने खुरपी उठाई और मिट्टी खोदना शुरू किया,मनु ध्यान से सब कुछ देख रहा था. थोड़ी देर में माँ ने बगीचे की मिट्टी खोद डाली.

" मनु!.. चल अब इन दानों को मिट्टी में बिखेर दे और इन्हें रोज पानी दिया करना."

"पर माँ तुम तो जादू दिखाने वाली थीं न."

माँ के चेहरे पर मुस्कान आ गई.उन्होंने प्यार से मनु के सर पर हाथ फेरा,

"बस थोड़े दिनों का इंतज़ार, फिर देखना जादू.. "

मनु को एक काम मिल गया, जादू देखने के उत्साह में सुबह उठते ही वह बगीचे की तरफ भागता. शायद आज कुछ जादू होगा. मनु, जो घर मे बैठे-बैठे बोर हो रहा था. अब उसका ज्यादातर समय बगीचे में बीतता.

एक दिन सुबह-सुबह जब वो बगीचे में पहुँचा तो धनिए के बीज से कोंपलें फूट गई थीं. मनु की खुशी का ठिकाना नहीं था, वो रसोईघर की तरफ भागा.

"माँ!...जल्दी बाहर चलो,तुमने सच कहा था, मेरे हाथों में जादू है. देखो मैंने सचमुच जादू कर दिया."

मनु खुशी से झूम रहा था. उसने जल्दी से फोन करके अपने चाचा,नाना-नानी को बताया.

अब मनु बगीचे में और ज्यादा समय बिताने लगा. उसने पूरे बगीचे की साफ-सफाई भी कर डाली.

मनु में आये इस परिवर्तन से माँ बहुत खुश थी. एक दिन सुबह-सुबह जब मनु बगीचे में पहुँचा तो देखा कि वहाँ कई गमले टूटे हुए थे और धनिया के छोटे-छोटे पौधे उजड़े हुए थे. माँ हाथ में झाड़ू लिए बगीचे को समेटने में लगी थीं. मनु रोने लगा.

" माँ देखो न, किसी ने मेरे सारे पौधे खराब कर दिए."

माँ ने प्यार से मनु को अपने पास बिठाया और उसके आँसू पोछते हुए कहा

" देख रही हूँ बेटा!!...कल रात भोजन की तलाश में बंदरों के झुंड ने अपना बगीचा उजाड़ दिया.

मनु तुम्हें आज बहुत दर्द हो रहा है न इन पौधों के नष्ट हो जाने से? ऐसा ही दर्द उन बेजुबान जानवरों को भी होता है जिन्हें तुम तंग करते हो. कभी पत्थर मारकर, कभी डंडे से तो कभी पानी फेंककर. सोचो उन्हें कितनी तकलीफ होती होगी.आखिर इन पौधों की तरह उनमें भी तो जीवन है. वो बेजुबान जानवर भी तो भगवान का जादू हैं."

मनु को माँ की बात समझ में आ रही थी.

"माँ!... मैं प्रॉमिस करता हूँ, अब मैं किसी जानवर को परेशान नहीं करूँगा. आप सही कहती थीं भगवान सब कुछ देखते हैं."

माँ बहुत खुश थीं, आखिर मनु को अपनी गलती का अहसास हो गया था.

दर्पण

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

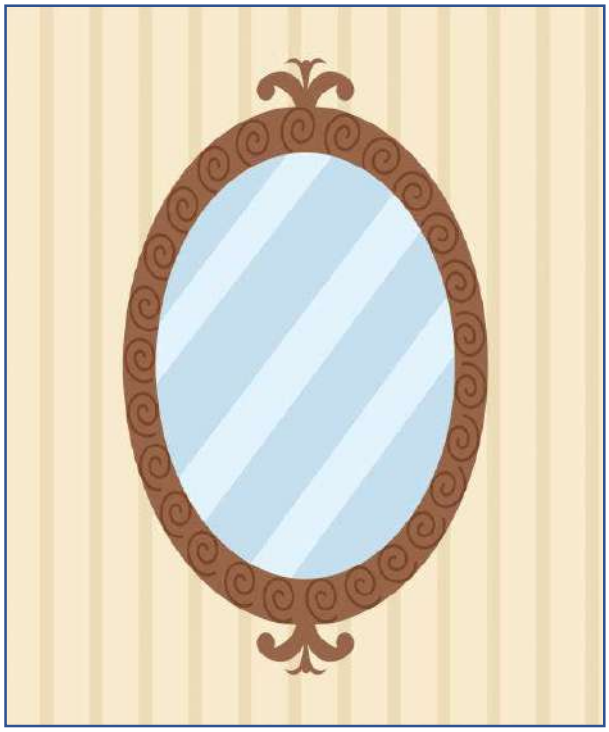

मन का दर्पण साफ रख, खड़ा हुआ है आज.
सच्चाई का सामना, पूरा करते काज..
नारी का श्रृंगार है, सजती है दिन रात.
बैठ पिया के सामने, करती मीठी बात..
मन के अंदर मैल है, मुखड़ा यूँ चमकाय.
मीठी-मीठी बात से, मन को बहुत लुभाय..
दर्पण से खेले नहीं,आती गहरी चोट.
रख सच्चाई सामने, मन मे जितना खोट..
मन के अंदर झाँक कर, खुद ही देखो आप.
कर्म करो अच्छे सभी, मिट जाएगा पाप..

गोबर की उपयोगिता

रचनाकार- सीमा यादव

गोबर शब्द सुनते ही हमारे मन मस्तिष्क में उसकी एक अजीब सी गंध प्रवेश कर जाती है. किन्तु जीवन में गोबर की जो उपयोगिता है, इससे उसके महत्व को आसानी से समझा जा सकता है. गोबर धार्मिक दृष्टि से तो उपयोगी है ही, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण साबित हो गया है. जो व्यक्ति गोशाला के निकट रहकर कार्य करते हैं, वे बहुत सी बीमारियों से बच जाते हैं. जो व्यक्ति गोशाला की सफाई करते हैं, वे उत्तम स्वास्थ्य वाले होते हैं. गोबर के उपले ईंधन का बहुत अच्छा साधन हैं. गोबर की खाद रासायनिक खाद की तुलना में स्वास्थ्यवर्धक होती है. इसीलिए आजकल इसकी माँग में बहुत वृद्धि हुई है.

गोबर आय का एक साधन तो है ही, कृषि कार्यों में भी इसकी भरपूर माँग होती है. हाल ही में हमारी छ. ग. सरकार ने गोबर की एक निश्चित क़ीमत निर्धारित करके उसे और कीमती बना दिया है.

गाय सिर्फ एक पशु नहीं हैं. वो तो हमारी माता है जिनमें 33 प्रकार के देवी-देवता वास करते हैं इसीलिए ज्ञानियो ने गाय के लिए सुन्दर पंक्तियाँ भी कही हैं..... "गौ माता की परम कृपा से, सुख समृद्धि का बसेरा! गौ धन से दुःख दरिद्र भागें, सब ग्रंथों का सार घनेरा !!"

संभल कर चलना

रचनाकार- महेंद्र देवांगन "माटी"

काँटो से भरी है राह राही,
संभल-संभलकर चलना.
पग-पग में है सतरँगी जाल,
बिछाये बैठी छलना..

अगर पाना है लक्ष्य तो,
आगे ही बढ़ते जाना.
राह कठिन जरूर है,
इससे ना घबराना..

चाल तेरी मंद ना हो,
काली रात से ना डरना.
प्रभात जरूर होगा राही,
अँधियारो से लड़ते रहना..

उदास होकर तू अपना,
गाण्डीव ना रख देना.
कौरव के छल में आकर,
समझौता ना कर लेना..

आलस अत्याचार अहं के,
जाल में ना फँस जाना.
कर्मठता उत्साह शांति से,
ज्ञान की ज्योति जलाना..

प्यास बुझा दो जन-जन की,
बनकर निर्झर झरना.
रहम करो सभी पर राही,
दुखियों का घाव भरना..

<u>जनसेवा को आतुर</u>

रचनाकार-अभिषेक शुक्ला 'सीतापुर'

आजकल समाचार पत्रों, सोशल मीडिया व विभिन्न संचार माध्यमों से हमें देश-प्रदेश की सरकारों व अन्य पल-पल की खबरें अद्यतन प्राप्त होती रहती है. इन दिनो नेताओं के दल-बदलने की खबरें बहुत प्राप्त हो रही हैं. भारत प्रजातांत्रिक देश है, जहाँ प्रत्येक पाँच साल में सांसद व विधायक के चुनाव होते रहते है. इन चुनावों में राजनैतिक दल जीत हासिल करने के लिये जनता से बहुत सारे वादे भी करते हैं. सभी अपनी पार्टी को जिताने के लिये लोकलुभावन वादों का सहारा लेते हैं. सभी यह वादा करते है कि वह जनता के लिये रोजगार, रोटी,कपड़ा और मकान के साथ-साथ बच्चों को अच्छी शिक्षा उपलब्ध करायेंगे. वह गरीबों की आवाज सदन तक ले जायेंगे और उनकी हर तकलीफ और दर्द को दूर करेंगे. आज तक मेरी समझ में यह नहीं आया कि ये नेता गरीबों की लड़ाई लड़ते-लड़ते खुद कैसे अमीर बन जाते हैं?

इनकी जनसेवा की आतुरता की तो बात ही न करिये! जब इन नेताओं को लगता है कि इनकी पार्टी इस बार चुनाव में जीत हासिल नहीं कर पायेगी तो ये दल-बदलकर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लग जाते हैं. यदि इनसे कोई प्रश्न कर ले तब जवाब में ये कहते हैं कि ऐसा मैंने अपने लोगों की सेवा करने के लिये किया. कुछ ढीठ कहते है कि राजनीति तो व्यक्तिगत होती है, मैं जिस पार्टी में चाहूँ जा सकता हूँ. कार्यकर्ताओं को ऐसे लोगों को स्वीकार ही नही करना चाहिये. जो नेता अपनी पार्टी और अपने कार्यकर्ताओं का न हुआ वह आपका सगा कैसे हो

सकता है? किसी भी पार्टी के कार्यकर्ता क्या इन पैराशूट टाइप नेताओं की चरण वन्दना हेतु ही हैं. ऐसे दल-बदलू नेताओं को चुनाव मे अवश्य ही उनकी वास्तविक स्थिति का सामना कराना चाहिये.

सत्ता का लालच और स्वार्थ सिद्धि ही ऐसे नेताओं का परम ध्येय होता है और जनता की सेवा का स्वाँग ही इनका अचूक अस्त्र होता है. देश और जनता की सेवा करने वाला ही सच्चा जनसेवक होता है. जनसेवा और समाजसेवा हेतु किसी भी पद की आवश्यकता नही होती. पोस्टर पर कर्मठ, ईमानदार और आपका अपना साथी छपवा देने भर से कोई सच्चा प्रतिनिधि नहीं बन जाता.

जनता को भी समझदारी दिखाने की जरुरत है. जनता को शत-प्रतिशत मतदान करना चाहिये क्योंकि ऐसा न करने से कभी -कभी अयोग्य व्यक्ति भी चुनाव मे जीत हासिल कर लेते हैं.

जनता मतदान करते समय पार्टी को प्रमुखता न दे अपितु अपने क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे उम्मीदवारों मे से शासन सत्ता उसके हाथों मे सौंपे,जो आपकी दृष्टि में और आपके पैमाने पर खरा उतरे. अच्छा प्रतिनिधि चुनने मे अपने विवेक का प्रयोग करें. जाति,बिरादरी,व्यक्ति विशेष के प्रभाव और दलगत राजनीति से ऊपर उठकर और निजी स्वार्थ का त्याग करते हुये योग्य व स्वच्छ छवि के उम्मीदवार के पक्ष मे मतदान करें. जब आप अच्छे प्रतिनिधि चुनेंगे तभी देश, प्रदेश और क्षेत्र का चहुमुँखी विकास सम्भव है.

मैं भी कर सकती हूँ

रचनाकार- मंजू साहू

मैंने देखा है फूलों को,
हुई है परेशान वो भी,
काँटों और तितलियों से
मेरी राहों में भी है काँटे
खिलना चाहती हूँ,
हर सुबह मैं भी आगे.

मैंने देखा है चींटियों को
चढ़ जाती हैं पहाड़ पर
खूब करती हैं वो भी मेहनत
मैनें देखा है, नदियों को

बहती रहती हैं वो हर
बाधा को पार कर.

"रोको न मुझे, टोको न मुझे,
करने दो अपनी मनमानी.
मैं किसी की कैद में नहीं,
चैन की सांस लेने दो मुझे.

मैं भी सब कुछ कर सकती हूँ,
मैं भी आगे पढ़ सकती हूँ,
हर मुश्किलों का सामना,
मैं भी कर सकती हूँ.

हमारे प्रेरणास्रोत- वीर अब्दुल हमीद

बच्चो!आज हम आपको 1965 का भारत पाकिस्तान युद्ध एक हीरो के बलिदान के बारे में बतायेंगे जिसने पाकिस्तानी फौज की एक बड़ी टुकड़ी को घुटनों पर बिठा दिया. हीरो, जिसने अपनी जान की परवाह किए बगैर केवल एक गन माउण्टेड जीप से पाकिस्तान के 7 टैंकों के परखच्चे उड़ा दिए थे. जी हाँ, सही पढ़ा आपने. एक नहीं सात टैंक. हीरो, जिसके शौर्य और साहस ने भारतीय सेना के मनोबल में जान फूँक दी थी. ये हीरो कोई और नहीं बल्कि, परमवीर चक्र विजेता वीर अब्दुल हमीद हैं.

अब्दुल हमीद का जन्म 1 जुलाई, 1933 को उत्तर प्रदेश के ग़ाज़ीपुर ज़िले में स्थित धरमपुर नाम के गाँव में एक गरीब परिवार में हुआ था. उनके पिता का नाम मोहम्मद उस्मान था. परिवार की आजीविका चलाने के लिए कपड़ों की सिलाई का काम होता था.

लेकिन अब्दुल हमीद का मन सिलाई के काम में नहीं लगता था, उनका मन तो कुश्ती दंगल और दाँव पेंचों में लगता था. पहलवानी उन्हें विरासत में मिली थी. उनके पिता और नाना दोनों ही पहलवान थे. बाल अवस्था से ही लाठी चलाना, कुश्ती करना, नदी को तैर कर पार करना, सोते समय फौज और जंग के सपने देखना तथा गुलेल से पक्का निशाना लगाना उनकी खूबियों में था. हमीद इन सभी चीजों में सबसे आगे रहते थे. दूसरों की मदद करना. जरूरतमंद लोगो की सहायता करना उनकी आदत में शामिल था.

एक बार उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा कर भीषण बाढ़ में डूबती दो युवतियों की जान बचाकर अपने साहस का परिचय दिया.

बचपन से ही अब्दुल हमीद की इच्छा फौज में सिपाही बनने की थी. वह अपनी दादी से कहा करते थे कि- "मैं फौज में भर्ती होऊँगा" दादी जब कहती-- "पिता की सिलाई की मशीन चलाओ" तब वह कहते थे-"हम जाएब फौज में ! तोहरे रोकले ना रुकब हम, समझलू"

दादी को उनकी जिद के आगे झुकना पड़ता और कहना पड़ता-- "अच्छा-अच्छा झाइयां फौज में". हमीद खुश हो जाते इसी तरह अपने पिता मोहम्मद उस्मान से भी फौज में भर्ती होने की जिद किया करते थे, और कपड़ा सीने के काम से इंकार कर देते.

20 वर्ष की अवस्था में उन्होंने एक सैनिक के रूप में 1954 में अपना कार्य प्रारम्भ किया. हमीद को 27 दिसंबर, 1954 को अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद ग्रेनेडियर्स इन्फैन्ट्री रेजिमेंट में शामिल किया गया.

जम्मू कश्मीर में तैनात अब्दुल हमीद पाकिस्तानी घुसपैठियों की खबर लेते हुए मजा चखाते रहते थे, ऐसे ही जब उन्होंने एक आतंकवादी इनायत अली को पकड़वाया तो प्रोत्साहन स्वरूप उनको पदोन्नति देकर सेना में लाँस नायक बना दिया गया. 1962 में भारत चीन युद्ध के समय अब्दुल हमीद नेफा में तैनात थे, इस युद्ध में उन्हें अपने शौर्य प्रदर्शन का विशेष अवसर नहीं मिला.

८- सितम्बर-१९६५ की रात, पाकिस्तान ने भारत पर हमला कर दिया. भारतीय सेना ने हमले का जवाब दिया. अब्दुल हमीद पंजाब के तरन तारन जिले के खेमकरण सेक्टर में सेना की अग्रिम पंक्ति में तैनात थे. पाकिस्तान ने उस समय अपराजेय माने जाने वाले "अमेरिकन पैटन टैंकों" के के साथ, "खेमकरण" सेक्टर के "असल उताड़" गाँव पर हमला कर दिया.

भारतीय सैनिकों के पास न तो टैंक थे और न बड़े हथियार लेकिन उनके पास था भारत माता की रक्षा के लिए लड़ने का हौसला. भारतीय सैनिक अपनी साधारण "थ्री नॉट थ्री रायफल" और एल.एम्.जी. के साथ पैटन टैंकों का सामना करने लगे. अब्दुल हमीद के पास "गन माउण्टेड जीप" थी जो पैटन टैंकों के सामने एक खिलौने के सामान थी.

अब्दुल हमीद की जीप 8 सितंबर 1965 को सुबह 9 बजे चीमा गांव के बाहरी इलाके में गन्ने के खेतों से गुजर रही थी. वह जीप में ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठे थे. उन्हें दूर से टैंकों की आवाजें सुनाई दीं. कुछ देर बाद उन्हें टैंक दिख भी गए. वह टैंकों के अपनी रिकॉयलेस गन

की रेंज में आने का इंतजार करने लगे और गन्नों की आड़ का फायदा उठाते हुए फायर कर दिया.

अपने सटीक निशाने से उन्होंने 4 टैंक उड़ा दिए थे. उनको ऐसा करते देख अन्य सैनिकों का भी हौसला बढ़ गया और देखते ही देखते पाकिस्तानी फ़ौज में भगदड़ मच गई. उनके द्वारा 4 टैंक उड़ाने की खबर 9 सितंबर को आर्मी हेडक्वार्टर्स में पहुँच गई. उनको परमवीर चक्र देने की सिफारिश भेज दी गई. इसके बाद अगले दिन उन्होंने 3 और टैंक नष्ट कर दिए थे.

अब्दुल हमीद को गन्ने के खेत में पोजिशन लेने का शुरुआती फायदा तो हुआ, लेकिन यह केवल कुछ समय तक के लिए ही था. इसके बाद पाकिस्तान की तरफ से अब्दुल हमीद की गाड़ी पर जबरदस्त हमला शुरू हुआ. इस हमले में उनकी जीप पर सवार ड्राइवर की शहादत हो गई. लेकिन हमीद ने हिम्मत नहीं हारी. वे लगातार पाकिस्तानी फौजियों से लड़ते रहे और अपनी पोजीशन बदलते रहे. हमले से घायल अब्दुल हमीद लगातार लड़ने के कारण थकने लगे थे. लेकिन उन्होंने लड़ाई जारी रखी. इस बीच पाकिस्तानी टैंकों ने उनकी तरफ निशाना साधा और एक हमले में वीर अब्दुल हमीद की जीप के भी परखच्चे उड़ गए.

वीर अब्दुल हमीद ने अपनी "गन माउण्टेड जीप" से सात पाकिस्तानी पैटन टैंकों को नष्ट किया था. भारत का "असल उताड़" गाँव "पाकिस्तानी पैटन टैंकों" की कब्रगाह बन गया.

अब्दुल हमीद के अदम्य साहस और वीरता के लिए उन्हें 16 सितम्बर 1965 को मरणोपरांत भारतीय सेना के सबसे बड़े सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया.

28 जनवरी 2000 को भारतीय डाक विभाग द्वारा परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के सम्मान में पाँच डाक टिकटों के सेट में 3 रुपये का एक सचित्र डाक टिकट जारी किया गया. इस डाक टिकट पर रिकाईललेस राइफल से गोली चलाते हुए जीप पर सवार वीर अब्दुल हमीद का रेखा चित्र बना हुआ है. चौथी ग्रेनेडियर्स ने अब्दुल हमीद की स्मृति में उनकी कब्र पर समाधि का निर्माण किया है.

सड़क

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

सीधे, लम्बे, टेढ़े, मेढ़े दिखती हूँ मैं !
गाँव,गली शहरों में रहती हूँ मैं !!

सब लोगों की भार को सहती हूँ मैं !
कहीं कच्चीकहीं पक्की रहती हूँ मैं !!

कैसे चलना है सड़कों पर बताती हूँ मैं !
संकेतों का पालन करना सिखाती हूँ मैं !!

सावधानी से चलने का गीत गाती हूँ मैं !
लोगों को मंजिल तक पहुँचाती हूँ मैं !!

लाल बत्ती रुकने को कहती हैं हमें !
संयम का पाठ पढ़ाती हैं हमें !!

हरा बत्ती जाने को कहती है हमें !
बायां तरफ चलना सिखाती है हमें !!

पीली बत्ती तैयार कराती हैं हमें !
सड़क दुर्घटना से बचाती हैं हमें !!

कोरोना

रचनाकार- सविता भूदीप,कक्षा आठवी, स्वामी विवेकानंद शासकीय उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम स्कूल जगदलपुर

योग रोज करो कोरोना से ना डरो
आओ सब मिल कर कोरोना को हरायें
देश को बचायें, देश को बचायें

योग रोज करो, टीकाकरण से न डरो
आओ सब मिल कर टिका हम लगाएँ
कोरोना से बच जाएँ, कोरोना से बच जाएँ
योग रोज करो योग रोज करो

हम सब न डरेंगे, महामारी से लड़ेंगे
हाथ हमेशा धोयेंगे, मास्क हम लगाएंगे
दो गज दूरी बनाएंगे, कोरोना को भगाएंगे
योग रोज करो, योग रोज करो

जकल

रचनाकार- वीरेन्द्र कुमार साहू

अभी नौकरी लगे कुछ ही दिन हुए थे. मैं कक्षा में बच्चों को पढ़ा रहा था कि मेरी नजर बाहर गई जहाँ एक लड़की दीवार की ओट से बार-बार झाँक रही थी. मैंने उसे अंदर आने का इशारा किया पर वह छुप जाती थी. मैंने बच्चों से कहा कि उस लड़की को अंदर बुला लाएँ. मुझे लगा कि शायद वह कई दिनों बाद स्कूल आई होगी और नया टीचर देखकर ऐसा कर रही हो. बच्चे गए और उसे बुला लाए पर वह क्लास रूम के बाहर ही रुक गई और दरवाजे के पास खड़े होकर मुस्कुराने लगी, उसकी उम्र लगभग 8-9 वर्ष रही होगी.

अंदर आ जाओ और यहाँ बैठो. मैंने खाली सीट की ओर इशारा किया तो वो अंदर आई पर मेरे सामने ही खड़ी हो गई. मैंने उसका नाम पूछा वह कुछ न बोलकर बस मुस्कुरा दी तुम्हारा बस्ता कहाँ है? इसका भी कोई जवाब उसके पास न था सिवाय मुस्कुराने के. दोबारा कहने पर वह जाकर बैठ गई.

बच्चों ने बताया कि इसका नाम जकल है और यह ऐसे ही घूमती रहती है, पढ़ती नहीं है. मध्याह्न भोजन के समय कभी कभार स्कूल आती है और खाना खा कर चली जाती है, आज भी उसने वैसा ही किया.

कुछ दिन के बाद वह फिर आई और आकर सीधे क्लास में बैठ गई मुझे उसके बारे में कुछ और बातें पता चल चुकी थीं. बिन माँ की बच्ची, पिता शराब का आदी, घर में तीन और भाई-बहन. जनजातीय समाज यहाँ आय के बहुत कम साधन होते हैं लोग निरक्षर ही रह जाते हैं.

आज खाना खाकर वह गई नहीं. ठंड के दिन थे. मैंने अपनी कुर्सी बाहर निकाल ली थी. वह वहीं आकर खड़ी हो गई, बच्चों ने बात ही बात में बताया कि वह गाना अच्छा गाती है. मैंने उसे गाने के लिए कहा तो उसने कहा 'पइसा देबे न', मैंने हाँ कर दिया उसने गाना शुरू किया चार चकिया 56 पैसा---

अपनी स्थानीय बोली में अच्छा गा रही थी. अब घंटी बज चुकी थी. मैं क्लास में जाने लगा तो उसने मुझसे कहा "मैं तो के का कहुँ"

मैंने मजाक में कह दिया भाटो कहबे.

वह चली गई अब वह मुझे जहाँ भी देखती भाटो भाटो चिल्लाने लगती. देखती तो दौड़कर पास आ जाती कभी स्कूल आती कभी हफ्तों तक गायब रहती. पता चला लोग उससे अपने घरों का काम कराते, कभी गोबर फिंकवाना, पानी भरवाना या घर का कोई अन्य काम. बदले में कभी खाना दे देते तो कभी कोई चावल दे देता, कभी कोई दो-चार रुपये ही दे देता. वह जब भी पैसे पाती स्कूल आ कर मुझे जरूर दिखाती कि आज मैं इतना पैसा पाई हूँ, मुझे गाना भी जरूर सुनाती. फटे पुराने कपड़ो में भी सदा निश्छलता से हँसती रहती एक बार मैं उसके लिए नई फ्राॅक ले गया, वह उसे पाकर बहुत खुश हुई पूरे गाँव में यह बताती फिरी कि मोर भाटो दिहिस हैं.

उस पर बहुत दया भी आती. उस नन्हीं सी जान को दौरे की बीमारी हो गई थी. कोई कहता मिर्गी है, कोई कुछ और. उसके पिता से पूछने पर वह कहता भूत-प्रेत का साया है मेरे कई प्रयास के बाद भी उसके इलाज का नतीजा शून्य रहा.

एक दिन स्कूल पहुँचा तो बच्चों ने बताया कि जकल कुएँ में गिर गई. मैंने पूछा कैसे? तो पता चला शाम के समय वह कुएँ के पास बैठी थी कुछ और बच्चे भी थे, अचानक दौरा पड़ा और वह कुएँ में गिर गई, जब तक उसे निकाला जाता तब तक उसकी साँसें थम चुकी थीं. मेरा दिल भर आया, मैं ने उस दिन स्कूल की छुट्टी कर दी.

जकल जिसका स्थानीय भाषा में अर्थ ही पगली है. पर क्या वह सचमुच पागल थी या परिस्थितियों ने उसे ऐसा बना दिया था? कई सवाल मन में दौड़ रहे थे और मैं वापस घर लौट रहा था.

साइकिल

रचनाकार- सीमांचल त्रिपाठी

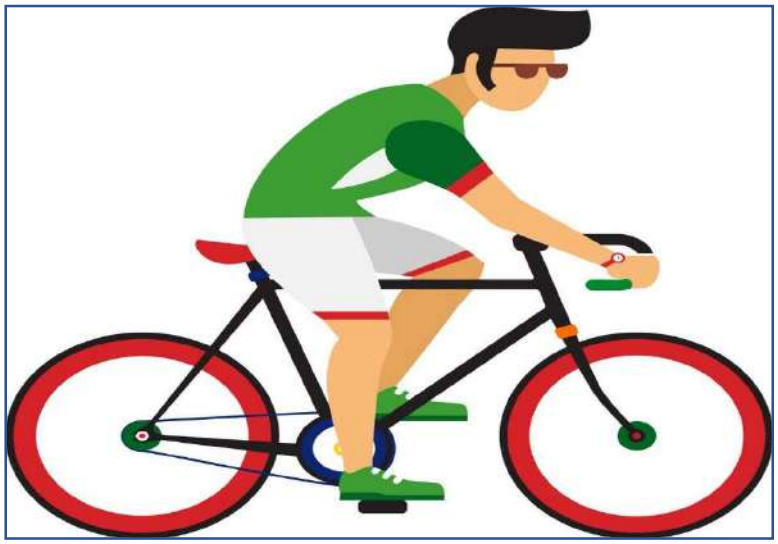

जी हाँ मैं साइकिल ही हूँ,
दो पहियों पर चलती हूँ.
छोटे-बडे सभी के स्वास्थ्य,
का मैं ख्याल रखती हूँ..

मेरे पैडल को मारकर तुम,
आगे बढाने मेहनत करोगे.
प्रतिदिन आधा घंटा भी,
जो तुम मुझे चलाओगे..

इस पर परिश्रम कर के,
तुम जो पसीना बहाओगे.
इससे तुम स्वयं को स्वस्थ,
सदा के लिए रख पाओगे..

रोज-रोज तू महंगा ईंधन,
भराने से भी बच जाओगे.

पेट्रोल डीजल को भराने,
लाईन से बच जाओगे..

मुझे चलाने से कभी भी,
झंझट कुछ ना रहता है.
करो जो मेरा उपयोग तो,
प्रदूषण भी नहीं होता है..

मेंटेनेंस भी तो कम होता,
खर्चा कम ही लगता है.
रजिस्ट्रेशन और बीमे के,
झंझट से भी बच जाते है..

मस्त होकर चलाओ मुझे,
लाइसेंस की ना जरूरत है.
चाहे जहां चला ले जाओ,
चालान का भी ना खतरा है..

सदा जेब का रखती ख्याल,
अमीर-गरीब सब की प्यारी हूँ.
मैं तो बच्चे-बुढे और जवान,
स्त्री-पुरुष सब की दुलारी हूँ..

सूरज भैया

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

बड़े सवेरे आते सूरज भैया
देते हमें नया संदेश सूरज भैया
बड़े सवेरे तोड़ अंधेरे
देते आंगन,खिड़की, छत पर लाली घोल
बड़े सवेरे आते सूरज भैया
सब को बोलते आलस छोड़ो
नींद उड़ाते सूरज भैया
सूरज भैया जैसे आते
सभी जीव-जंतु झाँकने लगते
कभी न थकता हमेशा चमकता
ऐसा पाठ हमें सिखाता
सूरज भैया
दया धर्म का पाठ नियम का
रोज पढ़ाते सूरज भैया
ना किसी को कम, ना किसी को ज्यादा

सबको बाँटते बराबर प्यार
सूरज भैया

जब मुस्काती संध्या आती
वापस जाते सूरज भैया
कल मिलूंगा नया सवेरे
ऐसा सीख हमें दे जाते
सूरज भैया

सपने अपने अपने

रचनाकार- लक्ष्मी तिवारी

पिता- बच्चो, क्या तुमने नाश्ताकर लिया?

बच्चे-जी पापा,हमने नाश्ता कर लिया.

पिता-बच्चो, सब इधर आकर बैठो.

कामिनी-क्यों पापा,क्या बात है?

पिता- बच्चो, आज छुट्टी का दिन है चलो कुछ बातें करते है.

पिता- कामिनी तुम बताओ बड़ी होकर क्या बनना चाहती हो?

कामिनी- पापा मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनना चाहती हूँ. डॉक्टर बन कर सभी का इलाज करूँगी.

पिता- शाबाश बेटी, बहुत अच्छा.

पिता- राजू तुम बड़े होकर क्या बनोगे?

राजू- पापा मैं पायलेट बनना चाहता हूँ.

पिता- राजू, अच्छा तो तुम आकाश में उडना चाहते हो.

राजू-जी पापा.

पिता- बहुत अच्छा, तुम जरूर पायलट बनोगे.

पिता- नितिन, अब तुम्हारी बारी है, बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?

नितिन- मैं शिक्षक बनना चाहता हूँ.

पिता- शिक्षक बनकर क्या करोगे?

नितिन- पापा मैं शिक्षक बनकर बच्चों को पढ़ाऊँगा.

पापा-वाह-वाह बहुत अच्छा नितिन बेटा.

पिता- कहते हैं कि मेहनत का फल मीठा होता है, तो बच्चो पूरा मन लगाकर पढ़ाई करना, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये खूब मेहनत करना, पढ़ाई के प्रति लगन और मेहनत से ही तुम अपने सपनों को पूरा कर पाओगे. और तुम जो भी बनना चाहते हो, वो जरूर बनकर दिखाओगे.

साइकिल

रचनाकार- शिवचरण चौहान

चली साइकिल टिन-टिन-टिन.
धूल, धुआं, प्रदूषण बिन..
चलती बिन डीजल पेट्रोल.
इसके पहिए गोल मटोल..
घोड़ा खाए घास चना
तब करता है हिन-हिन-हिन..
चली साइकिल टिन-टिन-टिन..
मोटर वायुयान सब फेल.
हार गई है इससे रेल..
ताक धिना-धिन-धिन-धिन.
चली साइकिल टिन-टिन- टिन..

पिल्ला पाला

रचनाकार- पुखराज सोलंकी

मैंने इक पिल्ला पाला
रंग है जिसका काला
दिखने में सबसे अलग
वो है सबसे आला

सुबह-सुबह मुझे जगाने
पूंछ हिलाता भागा आता
उछलकूद करते-करते
स्कूल बस तक पहुंचाता

रात भर चौकन्ना रहता
आहट हो तो भौं-भौं करता
जब तक स्कूल से न आऊँ
बेसब्री से राह है तकता

स्कूल से आ के घुमने जाता
पार्क में उसको टहलाता
मिलकर उधम मचाते हम
मस्ती करतें घर आते हम

वैसे कई हैं दोस्त मगर
वो है सबसे निराला
मैंने इक पिल्ला पाला
रंग है जिसका काला

समय बडा बलवान

रचनाकार- ममता वैरागी

आज से चार- पाँच वर्ष पूर्व तक नर्सिंग के काम को लोग नजर अंदाज करते थे.

आज नर्सें और डॉक्टर मिलकर कोरोना वायरस से हर वक्त जूझ रहे है. वक्त बदलता है.

सेवा करने वालो को मेवा जरूर मिलता है.

आज के समय जितने भी सेवाभावी है, वे पीडितो के आशीष पा रहे हैं.

रक्षक बने पुलिस और सेवा करते अस्पताल के अलावा भी बहुत से लोग ऐसे है, जो मानवता की सेवा करने निकल पड़े हैं.

कोई रक्त दान कर रहा है, कोई प्लाज्मा दे रहा है. कोई ऑक्सीजन की व्यवस्था में मदद कर रहा है, कोई रुपयों से मदद कर रहा है.

हर कोई किसी ना किसी रूप में एक मिसाल बन रहा है.

यह सब देखकर लगता है कि यदि यह मुश्किल वक्त न आया होता तो कई लोग समझ ही नहीं पाते कि इंसानियत क्या होती है?

माना पतझर में पत्ते बिखर कर टूट गये.

आँधियो के दौर मे अपने जन छूट गये.

पर फिर भी गर्व है, देख भारत का गौरव.

जहाँ अन्य देश भी मदद करने को तैयार हैं.

यह क्षण भी बीत ही जायेगा.

अब का हर लम्हा इतिहास बन जाएगा.

जिसमें बीमारी की विपदा आई भारी.

हिम्मत हौसलों से वह हारी.

जीवन की मुश्किल घड़ी में, थामे एक दूजे का हाथ.

चल पडे वे लोग सेवा में साथ.

सच बहुत बडी यह बात हमारी शान है.

शासन, प्रशासन तक सबको सलाम है.

आओ रखें हम थोडा और विश्वास

बीत जायेगा यह वक्त भी,

फिर नई उमंग लिए नई कोंपलें डालियों को फिर हरा कर देंगी.

और हर चमन मे बहारें फूलों को महकाएँगी.

वन में लॉकडाउन

रचनाकार- कल्याणमय आनंद

वन के राजा शेर को जब
हाथी ने यह बात बताई
कोरोना नामक बीमारी
शहर से वन में है आई

कैसे होगा इससे बचाव
शेर ने यह चिंता जताई
गहन वाद-विवाद के बाद
हिरन ने तरकीब सुझाई

वन को कर दें लॉकडाउन
यह युक्ति सबको खूब भाई
सभी आशियाने में ही रहें
शेर ने यह हिदायत सुनाई

बंदर मचा रहा है उत्पात
दूसरे दिन खबर ये आई
लोमड़ी ने बंदर की रपट
थाने में जाकर लिखवाई

थानेदार भालू ने उससे
सौ उठक-बैठक करवाई
बंदर की सही मायने में
तब अक्ल ठिकाने आई

पापा प्यारे

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित"

पापा मेरे भोले-भाले.
लेकिन भारी हिम्मत वाले..
नहीं किसी को कभी सताते.
उलझ पड़े तो चपत लगाते..

हम बच्चों के सबल सहारे.
लगते पापा प्यारे-प्यारे..
घर भर के वे हैं रखवाले.
जिम्मेदारी बड़ी सँभाले..

पापा गुस्से में जब आते.
मन ही मन देखा मुस्काते..
गलती हो तो डाँटा करते.
पर बच्चों पर सच में मरते..

नहीं पढ़ा तो गाल फुलाते.
घोड़ा बनकर पास बुलाते..
कहें खेल अच्छा है खेलो.
लेकिन साथ कष्ट भी झेलो..

काम रात-दिन करते पापा.
खुशियों से घर भरते पापा..
कभी हमारा साथ न छोड़े.
विपदाओं का वो मुख मोड़े..

पापा हैं तो ठाठ हमारी.
रहें सदा इनके आभारी..
पापा हैं बच्चों की दुनिया.
हँसते रहते मुन्ना-मुनिया..

पहेलियाँ

रचनाकार-डॉ.कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

1. चासनी में डूबा रहता
किये बगैर मैं हल्ला,
बंगाल की हूँ एक मिठाई,
कहते मुझको ----------

2. उदभव मेरा सब कोई ना जाने,
अंत ना मेरा देखा,
गणित की आकृति हूँ मैं बच्चों
कहते मुझको --------

3. जो गिनने के आती काम,
प्राकृत संख्या उसका नाम,
वैसे संख्या रही अनेक
पहली प्राकृत संख्या है -----

उत्तर:-1. रसगुल्ला 2. रेखा 3. एक

विजयी

रचनाकार- डॉ. दलजीत कौर

डरपोक कह कर माँ
मुझे बुलाते सारे बच्चे
इसीलिए नहीं लगते
मुझे प्यारे और अच्छे
झूले पर चढ़ कर माँ
मैं बहुत डर जाता हूँ
ऊँचाई से माँ जाने
मैं क्यों घबराता हूँ
डरने की नहीं बात
माँ ने उसे समझाया
सीखकर पहले से
नहीं यहाँ कोई आया
साहस से बढ़ो तुम
सफलता पा जाओगे
लड़कर कमज़ोरी से
विजयी कहलाओगे.

पार्क

रचनाकार- डॉ. दलजीत कौर

सुन्दर पार्क शहर में
सरकार ने बनाए
देखो!हम सब बच्चे
खेलने यहाँ आए
पेड़ -पौधे, फूल -घास
झूले भी लगाए
मिल कर खेलें सब
चोट न कहीं लग जाए
पौधों का रखें ध्यान
नुक़सान न पहुँचाएँ
चिड़िया,गिलहरी खेलें यहाँ
उनको न सताएँ
देश की सम्पत्ति यह
हम भी इन्हें अपनाएँ

फौजी

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

चन्दन अपने माँ-बाप का इकलौता पुत्र था. चन्दन के पिताजी शहर में शिक्षक थे, चन्दन भी शहर में रहता था पर चन्दन को शहर अच्छा नहीं लगता था. जब भी स्कूल से छुट्टी मिलती चन्दन अपने दादा-दादी के घर गाँव चला आता. चन्दन को गाँव से बहुत लगाव था. पिता जी का सपना था कि चन्दन मेरी तरह एक अच्छा शिक्षक बने, पर चन्दन का सपना था फौजी बनना. अपनी पढ़ाई के साथ-साथ चन्दन फौज में जाने की तैयारी भी करता. धीरे-धीरे चन्दन ने अपनी पढ़ाई पुरी कर ली. अब चन्दन दिन-रात एक कर फौजी बनने की तैयारी कर रहा था. एक दिन चन्दन अचानक गिर जाने के कारण चन्दन के एक पैर में गंभीर चोट लग गई. इस चोट के बाद चंदन का पैर पूरी तरह सामान्य नहीं हो पाया. इस तरह चन्दन का फौजी बनने का सपना टूट गया.

अब चन्दन अपने पिताजी के सपने को पूरा करने में लग गया. चन्दन अपनी योग्यता के आधार पर शिक्षक की नौकरी हासिल करने में सफल हो गया. अब चन्दन ने स्कूल में पढ़ाई

कराने के साथ-साथ गाँव के युवकों की एक समिति बनाई और उन्हें फौज में जाने के लिये तैयार करने लगा. कुछ ही सालों में आस-पास के गाँव के अनेक युवकों का चयन इंडियन आर्मी में होने लगा.

चन्दन का खुद फौजी बनने का सपना तो पूरा नहीं हो पाया किन्तु कई युवकों को फौजी बनाकर उसने अपना सपना जरूर पूरा किया.

लुका-छिपी

रचनाकार- कमल चंचल

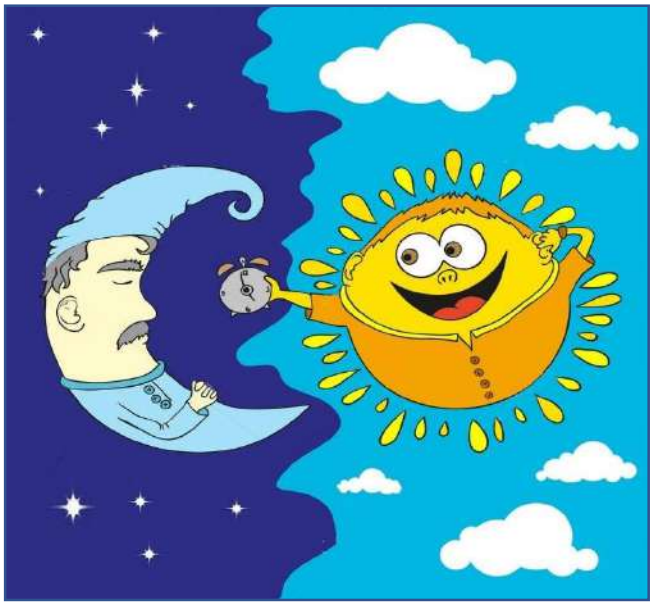

सूरज के आते नभ से
चंपत हो जाते तारे.
दस-बारह की बात नहीं
मिलकर सारे के सारे.

दूसरे गोलार्द्ध में जा
तारे झलक दिखाते हैं.
नन्हे-मुन्ने बच्चों को
टिमटिमाकर रिझाते हैं.

आ धमकता है आदित्य
देर सबेर यहाँ फिर जब.
सबके सब विवश अभागे
भाग खड़े होते हैं तब.

मिलकर दिनकर-तारे नित
लुका-छिपी खेला करते हैं.
लेकिन वे आसमान पर
कदापि न झमेला करते हैं.

मेल का खेल

रचनाकार- हर प्रसाद रोशन

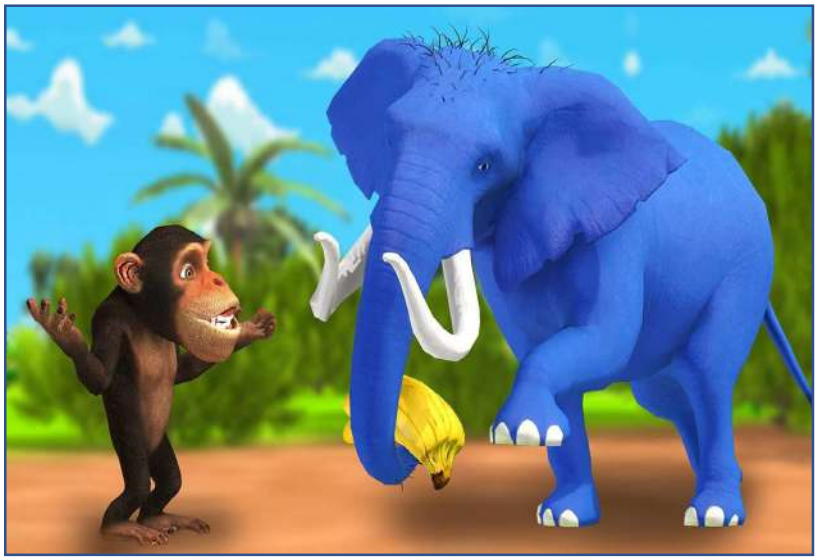

बाग घूम कर बंदर आया,
काले-काले जामुन लाया.
झूमता हुआ हाथी आया,
सेब, संतरे, केले लाया.
टप-टप करता घोड़ा आया,
मीठे रसीले आम लाया.
सबके बाद में हिरन आया,
तरबूज और अनार लाया.
सभी फलों का ढेर लगाया,
मिलजुल कर फिर सब ने खाया.
मम्मी ने यह गीत सुनाया,
मेल का खेल पसंद आया.

<u>सफलता की कहानी- प्रशिक्षक बनने की मेरी यात्रा</u>

शिक्षिका का नाम-श्रीमती सवप्निल तिवारी

विद्यालय का नाम -कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जरेली, तखतपुर, बिलासपुर

जीवन कौशल शिक्षा से आये सकारात्मक बदलावों के बारे में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जरेली की शिक्षिकाओं ने अपने अनुभव को साझा करते हुए कहा की जिस प्रकार कौशल के बिना जीवन अधुरा है, उसी प्रकार बातों के बिना और रिश्ते व जीवन अधुरा है. चाहे वो रिश्ता कोई भी हो जैसे (माता-पिता, भाई-बहन, शिक्षक या छात्रों के बिच) बातचीत के जरिये हम एक विश्वसनीय रिश्ता कायम करते हैं.

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जरेली की शिक्षिका श्रीमती सवप्निल तिवारी जी ने वर्तमान में जीवन कौशल की शिक्षा खुद में आये सकारात्मक बदलावों के बारे में बताया कि किस प्रकार जीवन कौशल का हर एक सत्र उनके व्यक्तित्व को निखारने में कारगर साबित हुआ.स्वप्निल जी कहते हैं उन्होंने बचपन से ही अपने जीवन में काफी उतार-चढ़ाव का सामना किया हैं वो चाहे पढ़ाई को लेकर हो या फिर जीवन में अहम् फैसले खुद पर विश्वास करके उन्होंने सारी बाधाओं से पार पाया हैं.मनोबल को काफी आघात पंहुचा पर ना कभी रुकें न कभी मनोबल को कम होने दिया.पर कहते हैं ना जीवन में एक ना एक पल ऐसा आता हैं जो समुद्र कि लहरों की तरह सब अपने साथ बहाकर ले जाता हैं उनके जीवन में भी कुछ ऐसा ही हुआ जिसने

स्वप्निल जी को पूरी तरह तोड़ दिया.वह सभी से दूर व कटी-कटी रहने लगी चुलबुल स्वप्निल अचानक से मौन हो गई.स्कूल में भी किसी से बात ना करना ना ही घर में, घरवाले उनके दुःख को समझते थे पर कुछ कर पाने में असमर्थ थे. कुछ समय बात स्कूल में "परियोजना विजयी" के प्रशिक्षण के बारे में अधीक्षिका को जानकारी मिली अधीक्षिका के अपने साथ प्रशिक्षण के लिए स्वप्निल जी का नाम दिया शुरुआत में स्वप्निल जी ने मन कर दिया फिर किन्ही कारणों की वजह से उन्होंने हाँ कह दी.

स्वप्निल जी कहते हैं जब मैं "परियोजना विजयी" के 4 दिवसीय प्रशिक्षण में शामिल हुई तो मैंने प्रशिक्षण के एक-एक बातों ने मुझे खुद से मिलवाने में अहम् भूमिका निभाई कई सारी महत्वपूर्ण बातों के बारे जाना व सीखा जैसा की मैं कौन हूँ? और मेरी पहचान, भावनाओं कि पहचान और स्वयं से प्यार (आत्मविश्वास) मानों जैसे कि कहीं खो गया था प्रशिक्षण के द्वारा ही मुझे मेरे समस्या का समाधान मिला जिस बारे में मैंने सोचना ही छोड़ दिया था आज में जीवन कौशल एक बहुत ही अच्छा जरिया हैं खुद को और खुद के कौशलों को समझने में मेरे लिए तो यह गेम चेंजर जैसा साबित हुआ और आज मेरा मेरे घरवालों व स्कूल कि बालिकाओं के साथ रिश्ता फिर से बेहरत हो गया हैं क्योंकि आपसी बातचीत ना हो पाने के कारण हमारा रिश्ता कभी शिक्षिका व छात्रा से ज्यादा बन ही नहीं पाया. परन्तु जैसे- जैसे मैं बालिकाओं के साथ जीवन कौशल सत्र लेना शुरू की तो धीरे-धीरे हमारे बीच बिना किसी संकोच के बात करने का अवसर मिलने लगा और मैं भी ये जान पाई की मुझे उन बालिकाओं से शिक्षिका व छात्रा के दायरे से निकल कर मैत्रीय व्यवहार भी बहुत आवश्यक है.

मदद

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

बनवारी लाल अनाज का बड़ा व्यापारी था. आस-पास के गॉवों के लोग उसके पास से ही अनाज ले जाते. पर बनवारी लाल लोगों से पैसा ज्यादा लेता और अनाज कम देता था, छल करने में वह माहिर था. लोग बनवारी लाल की इन हरकतों से वाकिफ तो थे पर वे कर भी क्या सकते थे. गाँव में अनाज का वह एक ही व्यापारी था. एक बार अकाल पड़ गया. लोग दाने-दाने के लिए तरसने लगे. गाँव वालों ने बनवारी लाल से मदद के लिए गुहार लगाई पर बनवारी लाल मदद के लिए सामने नही आया और किसी को भी अनाज नहीं दिया.

गाँव वालों को बहुत निराशा हुई. दीन-हीन और भूखमरी में जीवन यापन करने पर मजाबूर हो गए. धीरे-धीरे समय बीतता गया. गाँव वालों का जीवन फिर पहले की तरह सामान्य होने लगा.

बारिश का समय था. बनवारी लाल घर में सोया हुआ था. तभी तेज तूफान आ गया और बिजली कड़कने लगी. कुछ समय बाद आकाशीय बिजली उसकी दुकान में आ गिरी. देखते ही देखते दुकान में रखा अनाज जलने लगा. अब बनवारी लाल ने गॉव वालों से आग बुझाने में मदद करने की गुहार लगाने लगा. पर बनवारी लाल की हरकतों से वाकिफ गाँव वाले मदद के लिए नही आए.

दुकान का लगभग पूरा अनाज जलकर खाक हो गया. बनवारी लाल अपनी जली हुई दुकान के पास बैठकर रोने लगा. वह सोच रहा था कि यदि मैंने अकाल के समय गाँव के लोगों की मदद की होती तो शायद मेरी दुकान आज जलने से बच गई होती. अब बनवारी लाल को एहसास हो गया था कि मदद करने से ही मदद मिलती हैं.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

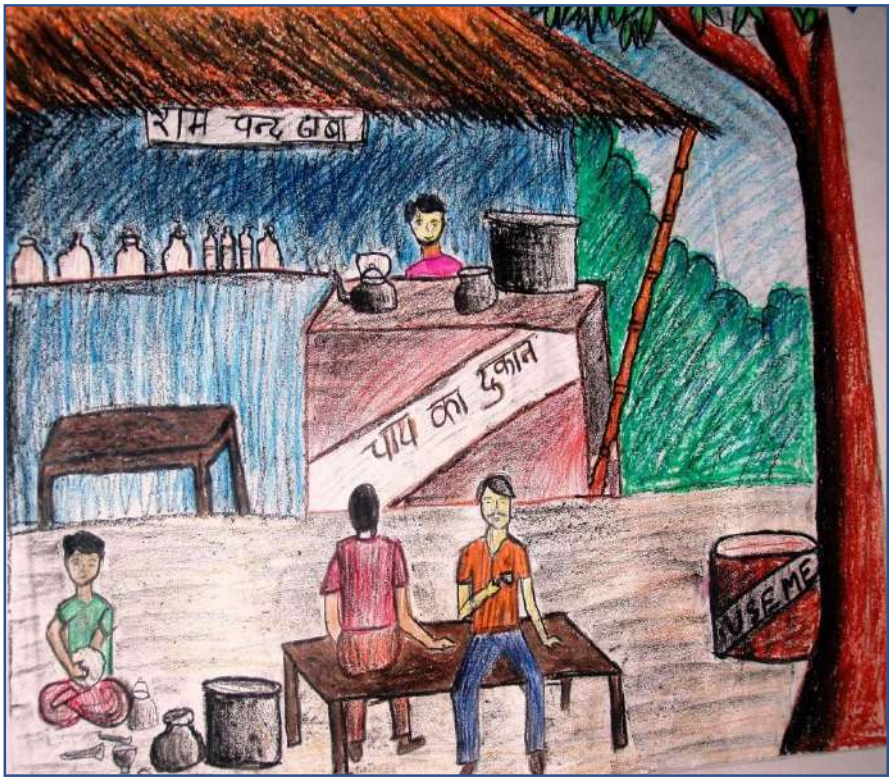

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

एक छोटी सी लड़की

एक बार श्याम नामक एक आदमी रामचंद्र ढाबे पर खाना खाने गया. वहाँ उसने देखा कि ढाबे पर एक छोटी सी लड़की काम कर रही है. श्याम ने उस लड़की को प्यार से बुलाया. लड़की डरी सहमी सी श्याम के पास आकर बोली हाँ साहब!बताइए,श्याम ने कहा-तुम्हें पहले कभी इस ढाबे पर नहीं देखा था. तुम कहाँ रहती हो,क्या नाम है? लड़की ने बताया -मेरा नाम गीता है.पास के गाँव में रहती हूँ. पिताजी बीमार हैं, वह काम नहीं कर सकते.हम लोग जीवन निर्वाह करने के लिए यहाँ काम करते हैं, माँ भी इसी ढाबे में बर्तन साफ करती हैं. हम दोनों को ढाबे में काम करना बिल्कुल पसंद नहीं. बच्ची की बात सुनकर श्याम सोचने लगा कि इस छोटी बच्ची में कितनी हिम्मत है. पढ़ने और खेलने कूदने की उम्र में यह अपनी माँ के साथ ढाबे पर काम कर रही है. श्याम ने खाना खाकर गीता को चुपचाप दो सौ रुपये दिए. लेकिन उसने श्याम से रुपये लेने से मना कर दिया और कहा कि साहब! मैं यह नहीं ले सकती. यदि आपको मेरी सहायता करनी ही है तो आप मेरी माँ को कहीं अच्छी जगह काम दिलवा दो क्योंकि मुझे अच्छा नहीं लगता कि मेरी माँ और मैं ढाबे पर बर्तन माँजते हैं. मजबूरी में ही काम कर रही हूँ. इस वजह से मेरा स्कूल भी छूट गया है. मुझे पढ़ाई करने का बहुत मन करता है मगर मैं अब कभी नहीं पढ़ पाऊँगी. यह कहकर वह लड़की अपने काम पर लग गई. उसकी मजबूरी सुनकर श्याम बेचैन हो गया और वहाँ से चला गया. रात को भी श्याम बार-बार उस छोटी लड़की के बारे में सोच रहा था. अगले दिन श्याम ने अपनी कंपनी में मालिक से बात करके उस छोटी लड़की गीता की माँ के लिए एक काम ढूँढ लिया और वह ढाबे पर पहुँच गया. श्याम ने देखा कि ढाबे वाला लड़की को किसी बात पर डाँट रहा था. श्याम ने वहाँ पहुँच कर ढाबे वाले को समझाइश दी कि गीता को न डाँटे और न ही उससे मजदूरी कराए नहीं तो छोटे बच्चे से काम करवाने के जुर्म में कानून का सहारा लेना पड़ेगा. ढाबेवाला श्याम की बात सुनकर डर गया. श्याम ने गीता के सिर पर हाथ रख कर कहा कि मैंने तुम्हारी माँ के लिए एक कंपनी में अच्छा काम ढूँढ लिया है. अब तुम्हें काम करने की जरूरत नहीं है. श्याम की यह बात सुनकर वह लड़की बहुत खुश गई. अपनी माँ को बुलाकर सारी बात बताई. उसकी माँ श्याम के पास आकर उनके आगे हाथ जोड़कर कहने लगी कि साहब!आपका यह एहसान हम कैसे चुकाएँगे? श्याम ने लड़की की माँ से कहा कि बहनजी आप मेरा एहसान अगर चुकाना चाहती है तो आप गीता को जरुर पढ़ाना और खूब आगे बढ़ाना. मेरी यही इच्छा है कि हर बच्चा पढ़े लिखे,आगे बढ़े और बचपन में किसी भी बच्चे को कभी काम न करना पड़े. माँ ने अपने गाँव के शिक्षक से मिलकर गीता को स्कूल में दर्ज कराया.अब गीता मन लगाकर स्कूल में पढ़ाई करने लगी.

प्रीतम कुमार साहू द्वारा भेजी गई कहानी

मास्टर जी शहर से गाँव आ रहे थे. उनकी नजर एक ढाबे पर पड़ी जहाँ कुछ लोग चाय पी रहे थे और एक छोटा बच्चा कप प्लेट साफ कर रहा था. मास्टर जी ने ढाबे के मालिक रामचन्द्र से बच्चे के बारे में जानना चाहा तो राम चन्द्र ने कहा, बच्चे का नाम अंकित हैं उम्र दस साल, इसके मम्मी-पापा नहीं हैं. अंकित यहीं रहकर काम करता है.

मास्टर जी रामचन्द्र को स्कूल में मिलने वाली सुविधाओं नि:शुल्क शिक्षा, निःशुल्क गणवेश, नि:शुल्क पुस्तकें और मध्याह्न भोजन के बारे में बता कर अंकित को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करते हैं. रामचन्द्र मास्टर जी के बातों से सहमत हो गया और अगले दिन से अंकित स्कूल जाने लगा.

अंकित पढ़ाई से दूर था उसेअक्षर ज्ञान तक नही था. पर अंकित पढ़ने लिखने का रोज अभ्यास करता और ढाबे में भी काम करता. अपने अभ्यास के बल पर अंकित लिखना पढ़ना सीख गया और धीरे-धीरे उच्च शिक्षा प्राप्त कर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने लगा.

एक दिन ऐसा भी समय आया कि अंकित ने जिस स्कूल में पढ़ाई की थी उसी स्कूल में शिक्षक बन कर आया. अंकित बच्चों को खूब पढाता और खूब स्नेह देता.

अंकित के शिक्षक बन जाने पर रामचन्द्र अब अंकित पर गर्व करने लगा. रामचन्द्र की आर्थिक स्थिति में भी सुधार होने लगा.

रामचन्द्र ने अपने ढाबे को बन्द कर नि:शुल्क व आवासीय शिक्षा के लिए विद्यालय बनाने की घोषणा की.

अंकित ने इस विद्यालय का नाम रामचन्द्र विद्यालय रखा. अंकित अब आस-पास के बेसहारा, अनाथ व गरीब बच्चों को नि:शुल्क व आवासीय शिक्षा देने की दिशा में काम करने लगा.

अंकित का यह सराहनीय प्रयास शिक्षा से वंचित हो रहे बेसहारा, अनाथ व गरीब बच्चों के लिए एक वरदान साबित हुआ.

वाणी मसीह द्वारा भेजी गई कहानी

मैं सुबह-सुबह अपने ऑफिस के लिए निकलता था, रास्ते में रामचंद्र ढाबा मिलता, जहाँ भोजन, चाय मिलती थी. आते जाते लोग वहाँ भोजन करते,चाय पीते थे. मैं जब भी वहाँ से गुजरता तो देखता कि एक छोटा बच्चा ढाबे में बर्तन धोता रहता था, कभी लोगों को खाना परोसता रहता, कभी झाड़ू लगाता या टेबल- कुर्सी को साफ करता रहता था. एक दिन मैं रामचंद्र ढाबा गया और चाय ऑर्डर किया. चाय लेकर वही छोटा बच्चा आया.

मैंने उसका नाम पूछा. उसने अपना नाम रामू बताया.

मैंने पूछा कहाँ रहते हो? उसने इशारे से बताया. मैं समझ गया था कि बच्चा हकलाकर बोलता था. और इसलिए लोगों से बात करने से शर्माता था.

मैंने पूछा कि तुम स्कूल क्यों नहीं जाते? यहाँ क्यों काम करते हो? बच्चे ने बताया कि उसके घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है जिसके कारण मुझे काम करना पड़ता है और मुझे लगता है कि मैं स्कूल जाऊँगा और अटक अटक कर बोलूँगा तो सब मेरी हँसी उड़ाएँगे.

मैंने बच्चे को समझाया कि दुनिया में ऐसे कई लोग हैं जो हकलाकर बोलते हैं, तुम तो बोल भी सकते हो, कुछ लोग तो जन्म से ही गूँगे होते हैं, कुछ भी नहीं बोल सकते हैं. कोई तुम पर नहीं हँसेगा,अपने आप पर विश्वास रखना चाहिए और स्वयं को इस लायक बनाना चाहिए कि लोग तुम्हारी बातें सुनने के लिए तुम्हारे पास आएँ. इसके लिए तुम्हें स्कूल जाना पड़ेगा, शिक्षा प्राप्त करनी होगी और अपना ज्ञान बढ़ाना होगा.

मैंने पूछा क्या तुम पढ़ना चाहते हो बच्चे ने मुस्कुराकर हाँ कहा. मैंने कहा कि पास ही मेरा घर है और तुम्हें मैं रोज शाम के समय पढ़ाया करूँगा, पुस्तकें और कॉपी पेंसिल मैं ले आऊँगा तुम सिर्फ पढ़ाई करने आना और तुम्हारा दाखिला मैं पास के ही स्कूल में करा दूँगा जहाँ तुम पढ़ाई करोगे. यह सब रामचंद्र ढाबे का मालिक सुन रहा था उसने भी मुझसे कहा कि बहुत अच्छा है सर आपने रामू के लिए बहुत अच्छा सोचा है. मैं भी आपके इस फैसले से खुश हूँ और रामू से कहा- रामू तुम रोज शाम को सर के पास पढ़ने जाना, तुम्हारा दाखिला स्कूल में हो जाएगा तो तुम रोज स्कूल जाना और अच्छे से पढ़ाई करना. स्कूल में कोई भी तुम्हें परेशान नहीं करेगा बल्कि अच्छे शिक्षक और दोस्त मिलेंगे, जो तुम्हारी पढ़ाई में सहायता करेंगे. तुम सुबह 2 घंटे ढाबे में आकर काम करना फिर स्कूल चले जाया करना क्योंकि तुम्हारा पढ़ाई करना बहुत आवश्यक है. आज के समय में शिक्षित व्यक्ति ही सभी कार्यों को सही ढँग से कर सकता है और अपना और दूसरों का जीवन सुंदर बना सकता है. रामू आज बहुत खुश था कि अब वह स्कूल जाएगा और पढ़ाई करेगा रामू के चेहरे से खुशी छलक रही थी.

यशवंत कुमार चौधरी द्वारा भेजी गई कहानी

हर रोज की तरह आज भी आर्यन और अयांश सुबह-सुबह टहलते हुए रामचंद्र के ढाबे पर पहुँचे. दोनों ने चाय का आर्डर दिया तभी उन्होंने देखा कि एक लगभग चौदह वर्ष का बच्चा कप-प्लेट धो रहा था. यह देख आर्यन ने चाय वाले से पूछा `भाई ये क्या हो रहा है ढाबे में? आप नियम-कानून को दरकिनार कर बाल मजदूरी करवाकर बच्चों का शोषण कर रहे हैं इस बच्चे की पढने -लिखने की उम्र में आप इससे मजदूरी करवा रहे हो. क्या यह सही है? आप पर कानूनी कार्यवाही होनी चाहिए. यह सुनकर ढाबेवाले ने अपनी गलती स्वीकार कर ली. और उस अनाथ पप्पू का एडमिशन पास के सरकारी बालक हॉस्टल में कराने का वादा किया. अगले दिन ही पप्पू का एडमिशन हो गया. आर्यन अयांश ने पप्पू के लिए कापी-किताब ड्रेस आदि की व्यवस्था करने मे मदद भी की. पप्पू मेहनत से अपनी पढाई -लिखाई करने लगा. उसकी लगन और आर्यन की मदद से पप्पू के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल गई.

.

…..

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई-मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

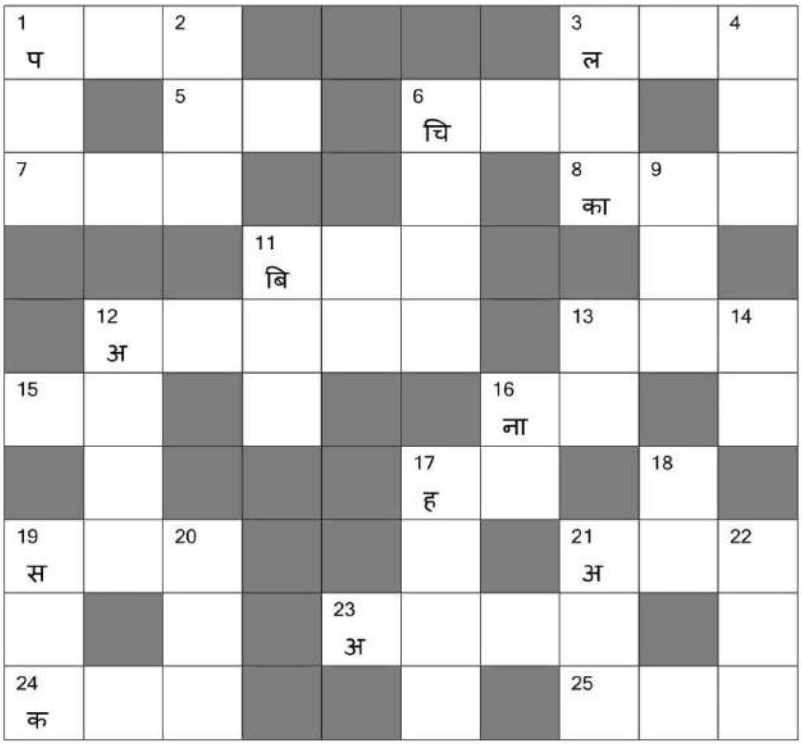

बाएँ से दाएँ

1. पहने/पहना 3. झूठा 5. नजदीक, करीब 6. चिड़िया 7. संगृहीत 8. क्यों, किसलिए 11. बिल्ली 12. अमराई 13. प्रणाम 15. कल 16. नाड़ा 17. हाँ 19. स्वर्ग 21. आलसी 23. छत का निचला किनारा भाग 24. मिठाई 25. एक भाजी जो औषधि का काम आता है

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

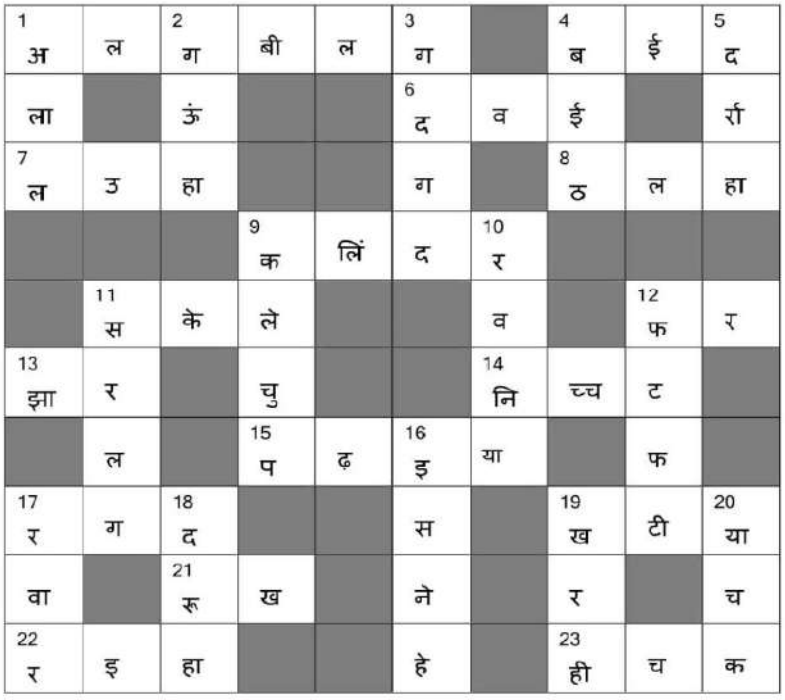

ऊपर से नीचे

1. गमछा 2. जिद्धी, हठी 3. बच्चा 6. एक पौधा (शाक) जिसको पहले मेहँदी के रूप मे उपयोग करते थे 9. काँख, किनारे 11. व्यर्थ 12. अजीब 13. मोहल्ला/ टोला 14. चाँवल का ज्यादा पका होना 16. नाम 17. अचानक, नीचे गिरना 18. किसको 19. अटक/ फंसना 20. गाय 21. अति, बहुत ज्यादा 22. वापस किया

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की सदस्यता जारी रखने हेतु सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।